तुलसी-कृत रामायण

अयोध्या-कांड



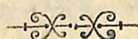
नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

गोस्वामी तुलसीदासजी-कृत

रामायण अयोध्या-कांड

जिसमें

पिता की आज्ञा से चौदह वर्ष के लिये श्रीरामचन्द्रजी का वन-गमन, चित्रकूट में निवास, राजा दशरथजी का प्राण-त्याग, भरतजी का चित्रकूट-गमन, राम-भरत-संवाद और राम-पादुका ले, भरतजी का नंदि-ग्राम में निवास वर्णित है



प्रकाशक—

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ

सातवीं बार

सन् १९२४ ई०

केसरीदास सेठ, सुपरिंटेंडेंट द्वारा
नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ में मुद्रित और प्रकाशित

श्रीगणेशायनमः

रामायण तुलसीकृत

अयोध्याकाण्ड ।

श्लोक ।

वामाङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम् ॥ १ ॥
प्रसन्नतां या न गताभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजश्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु सा मञ्जुलमङ्गलप्रदा ॥ २ ॥
नीलाम्बुजश्यामलकोमलाङ्गं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥
दो० श्रीगुरुचरण सरोजरज, निजमन मुकुर सुधारि ।
बरणौं रघुवर विमलयश, जो दायक फलचारि ॥
जबते राम ब्याहि घर आये * नित नवमङ्गल मोदबधाये
भुवन चारिदश भूधर भारी * सुकृत मेघ बरषहिं सुखवारी
ऋधिसिधि सम्पति नदी सुहाई * उमगि अवध अम्बुधिकहँ आई
मणिगण पुर नरनारि सुजाती * शुचि अमोल सुन्दर सबभांती

कहि न जाइ कछु नगरविभूती * जनु इतनी विरञ्चि करतूती
सबविधि सब पुरलोग सुखारी * रामचन्द्र मुखचन्द्र निहारी
मुदित मातु सब सखी सहेली * फलित बिलोकि मनोरथबेली
रामरूप गुण शील स्वभाऊ * प्रमुदित होहिं देखि मुनिराऊ
दो० सबके उर अभिलाष अस, कहहिं मनाइ महेश ।
आप अछत युवराजपद, रामहिं देहिं नरेश ॥
एकसमय सब सहित समाजा * राजसभा रघुराज विराजा
सकल सुकृत मूरति नरनाहू * रामसुयश सुनि अतिहि उछाहू
नृप सब रहहिं कृपा अभिलाखे * लोकप रहहिं प्रीति रुखराखे
त्रिभुवन तीनि काल जगमाहीं * भूरिभाग दशरथ सम नाहीं
मङ्गलमूल रामसुत जासू * जो कछु कहिय थोर सब तासू
राउ स्वभाव मुकुर कर लीन्हा * वदन विलोकि मुकुट सम कीन्हा
श्रवणसमीप भये सित केशा * मनहुँ चौथपन अस उपदेशा
नृप युवराज राम कहँ देहू * जीवनजन्म सुफल करिलेहू
दो० अस विचारि उर आनि नृप, सुदिन सुअवसर पाइ ।
तन पुलकित मन मुदितअति, गुरुहिं सुनायउ जाइ ॥
कह्यो भुआल सुनिय मुनिनायक * भये राम सबविधि सबलायक
सेवक सचिव सकल पुरवासी * जे हमार अरि मित्र उदासी
सबहिं रामप्रिय जेहि विधि मोहीं * प्रभु अशीश जनु तनुधरि सोहीं
विप्र सहित परिवार गुसाईं * करहिं छोह सब रौरेहि नाईं
जे गुरुचरण रेणु शिर धरहीं * ते जनु सकल विभव वशकरहीं
मोहिंसमान अरु भयउ न दूजे * सब पायउँ प्रभुपदरज पूजे
अब अभिलाष एक मन मोरे * पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरे
मुनि प्रसन्न लखि सहज सनेहू * कह्यो नरेश रजायसु देहू
दो० राउर राजन नामयश, सब अभिमत दातार ।
फल अनुगामी महिपमणि, मन अभिलाष तुम्हार ॥
सबविधि गुरु प्रसन्न जिय जानी * बोलेउ राउ बिहँसि मृदु वानी
नाथ राम करिये युवराजू * कहिय कृपाकरि करिय समाजू
मोहिं अछत अस होउ उछाहू * लहहिं लोग सब लोचनलाहू
प्रभुप्रसाद शिव सबै निबाहीं * इहै लालसा इक मनमाहीं
पुनि न शोच तनु रहै कि जाऊ * जेहि न होइ पाछे पछिताऊ
सुनि मुनि दशरथ वचन सुहाये * मङ्गल मूल मोद अति पाये

सुनु नृप जासु विमुख पछिताही * जासु भजन बिनु जरनि न जाही
भये तुम्हार तनय सो स्वामी * राम पुनीत प्रेम अनुगामी
दो० वेगि विलम्ब न करिय नृप, साजिय सबै समाज ।
सुदिन सुमङ्गल तबहिं जब, राम होहिं युवराज ॥
मुदित महीपति मन्दिर आये * सेवक सचिव सुमन्त बुलाये
कहि जयजीव शीश तिन नाये * भूप सुमङ्गल वचन सुनाये
प्रमुदित मोहिं कह्यो गुरु आजू * रामहिं राज देहु युवराजू
जो पांचहि मत लागै नीका * करहु हर्षि हिय रामहिं टीका
मन्त्री मुदित सुनत प्रियबानी * अभिमत बिरघ परेउ जनु पानी
विनती सचिव करहिं करजोरी * जियहु जगतपति बरष करोरी
जगमङ्गल भल काज बिचारा * वेगहिं नाथ न लाइय बारा
नृपहिं मोदसुनि सचिवसुभाखा * बढ़त विटप जनु लही सुशाखा
दो० कहेउ भूप मुनिराजकर, जो जो आयसु होइ ।
रामराज्य अभिषेक हित, वेगि करहु सोइ सोइ ॥
हरषि मुनीश कह्यो मृदुबानी * आनहु सकल सुतीरथ पानी
औषध मूल फूल फल नाना * कहे नाम गनि मङ्गल जाना
चामर चमर वसन बहुभांती * रोम पाट पट अगणित जाती
मणिगण मङ्गल वस्तु अनेका * जो जग योग भूप अभिषेका
वेदविहित कहि सकल विधाना * कह्यो रचहु पुर विविध विताना
पनस रसाल पुंगफल केरा * रोपहु वीथिन पुर चहुँ फेरा
रचहु मञ्जुमणि चौकें चारू * कहेउ बनावन वेगि बजारू
पूजहु गणपति गुरु कुल देवा * सबविधि करहु भूमिसुर सेवा
दो० ध्वजपताक तोरण कलश, सजहु तुरग रथ नाग ।
शिरधरि मुनिवर वचनसब, निजनिज काजहिंलाग ॥
जेहि मुनीश जो आयसु दीन्हा * सो जनु काज प्रथम तेइ कीन्हा
विप्र साधु सुर पूजत राजा * करत रामहित मङ्गल काजा
सुनत राम अभिषेक सुहावा * बाजु गहागह अवध बधावा
रामसीय तनु शकुन जनाये * फरकहिं मङ्गल अङ्ग सुहाये
पुलकि सप्रेम परस्पर कहहीं * भरत आगमन सूचक अहहीं
भये बहुत दिन अति अवसेरी * शकुन प्रतीति भेंट प्रिय केरी
भरतसरिस प्रिय को जगमाहीं * यहै शकुनफल दूसर नाहीं
रामहिं बन्धु शोच दिनराती * अण्डन कमठ हृदय जेहि भांती

दो० तेहि अवसर मङ्गलपरम, सुनि हरषेउ रनिवास ।
शोभित लखिविधुबढ़तजनु, वारिधि वीचि विलास ॥
प्रथम जाइ जिन वचन सुनावा ॐ भूषण वसन भूरि तिन पावा
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागीं ॐ मङ्गलसाज सजन सब लागीं
चौके चारु सुमित्रा पूरी ॐ मणिमय विविध भांतिअतिरूरी
आनँद मगन राम महतारी ॐ दिये दान बहु विप्र हँकारी
पूजेउ ग्रामदेव सुर नागा ॐ कहेउ बहोरि देन बलिभागा
जेहि विधि होइ राम कल्याना ॐ देहु दया करि सो वरदाना
गावहिं मङ्गल कोकिलबयनी ॐ विधुवदनी मृगशावकनयनी
दो० रामराज अभिषेक सुनि, हिय हरषीं वर नारि ।
लगीं सुमङ्गल सजनसब, विधि अनुकूल विचारि ॥
तब नरनाह वशिष्ठ बुलाये ॐ रामधाम सिख देन पठाये
गुरु आगमन सुनत रघुनाथा ॐ द्वार आय नायउ पदमाथा
सादर अर्घ्य देइ घर आने ॐ सोरह भांति पूजि सनमाने
गहे चरण सिय सहित बहोरी ॐ बोले राम कमलकर जोरी
सेवक सदन स्वामि आगमनू ॐ मङ्गल मूल अमङ्गल दमनू
यदपि उचित अस बोलि सप्रीती ॐ पठइय नाथ काज असनीती
प्रभुता तजि प्रभु कीन्ह सनेहू ॐ भयउ पुनीत आजु मम गेहू
आयसु होय सो करिय गुसांई ॐ सेवक लहै स्वामि सेवकाई
दो० सुनि सनेह साने वचन, मुनि रघुवरहि प्रशंस ।
राम कस न तुम कहहु अस, हंसवंस अवतंस ॥
वरणि राम गुण शील स्वभाऊ ॐ बोले प्रेम पुलकि मुनिराऊ
भूप सजेउ अभिषेक समाजू ॐ चाहत देन तुमहिं युवराजू
राम करहु सब संयम आजू ॐ जो विधि कुशल निबाहै काजू
गुरु सिख देइ राउपहँ गयऊ ॐ रामहृदय अस विस्मय भयऊ
जनमे एक सङ्ग सब भाई ॐ भोजन शयन केलि लरिकाई
कर्णवेध उपवीत विवाहा ॐ सङ्ग सङ्ग सब भयउ उछाहा
विमल वंश यह अनुचित एका ॐ अनुज विहाय बड़ेहि अभिषेका
प्रभु सप्रेम पछितानि सुहाई ॐ हरेउ भरत मनकी कुटिलाई
दो० तेहि अवसर आये लषण, मगन प्रेम आनन्द ।
सनमाने प्रिय वचन कहि, रविकुल कैरवचन्द ॥
बाजहिं बाजन विविध विधाना ॐ पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना

भरत आगमन सकल मनावहिं * आवहिं वेगि नयनफल पावहिं
हाट बाट घर गली अथाई * कहहिं परस्पर लोग लुगाई
कालिह लगन भल केतिकबारा * पूजिहि विधि अभिलाष हमारा
कनक सिंहासन सीय समेता * बैठहिं राम होइ चित चेता
सकल कहहिं कब होइहि काली * विघ्न मनावहिं देव कुचाली
तिनहिं सुहात न अवधबधावा * चोरहिं चांदनि राति न भावा
शारद बोलि विनय सुर करहीं * बारहिं बार पायँ लै परहीं

दो० विपति हमारि बिलोकिबड़ि, मातु करिय सोइकाज।
राम जाहिं वन राज तजि, होइ सकल सुरकाज॥

सुनि सुरविनय ठाढ़ि पछिताती * भइउँ सरोजविपिन हिमराती
देखि देव पुनि कहहिं बहोरी * मातु तोहिं नहिं थोरिउ खोरी
विस्मय हर्ष रहित रघुराऊ * तुम जानहु रघुवीर स्वभाऊ
जीव कर्म वश दुख सुख भागी * जाइय अवध देवहित लागी
बारबार गहि चरण सकोची * चली विचारि विबुध मतिपोची
ऊंच निवास नीच करतूती * देखि न सकहिं पराइ विभूती
आगिल काज विचारि बहोरी * करिहैं चाह कुशल कवि मोरी
हरषि हृदय दशरथपुर आई * जनु ग्रहदशा दुसह दुखदाई

दो० नाम मन्थरा मन्दमति, चेरि केकयी केरि।
अयशपिटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि॥

देखि मन्थरा नगर बनावा * मङ्गल मञ्जुल बाजु बधावा
पूछिसि लोगन्ह काह उछाहू * राम तिलक सुनि भा उरदाहू
करै विचार कुबुद्धि कुजाती * होइ अकाज कवन विधि राती
देखि लागु मधु कुटिल किराती * जिमि गवँ तकै लेउँ केहिभांती
भरतमातु पहँ गइ बिलखानी * काअनमनि हासि हँसि कहरानी
उतर न देइ सो लेइ उसांसू * नारिचरित करि ढारति आंसू
हँसि कह रानि गाल बड़ तोरे * दीन्ह लषण सिख अस मन मोरे
तबहुँ न बोलि चेरि बड़ि पापिनि * छांड़ै श्वास कारि जनु सांपिनि

दो० सभय रानि कह कहसि किन, कुशल राम महिपाल।
भरत लषण रिपुदमन सुनि, भा कुबरी उर शाल॥

कत सिख देहि हमहिं को माई * गाल करब केहिकर बल पाई
रामहिं छांड़ि कुशल केहि आजू * जाहि नरेश देत युवराजू
भा कौशल्यहि विधिअतिदाहिन * देखत गर्व रहत उर नाहिन

देखहु कस न जाइ सब शोभा * जो अवलोकि मोरमन क्षोभा
पूत विदेश न शोच तुम्हारे * जानतिहौ वश नाह हमारे
नींद बहुत प्रिय सेज तुराई * लखहु न भूप कपट चतुराई
सुनि प्रियवचन कुटिलमनजानी * झुकी रानि अरहू अरगानी
पुनिअस कबहुँ कहसि घरफोरी * तो धरि जीह कढ़ावों तोरी
दो० काने खोरे कूबरे, कुटिल कुचाली जानि ।
तियविशेष पुनि चेरि कहि, भरतमातु मुसकानि ॥
प्रियवादिनि सिख दीन्हेउँ तोहीं * सपनेहु तोपर कोप न मोहीं
सुदिन सुमङ्गलदायक सोई * तोर कहा फुर जादिन होई
जेठ स्वामि सेवक लघु भाई * यह दिनकर कुलरीति सदाई
राम तिलक जो सांचहु काली * मांगु देउँ मनभावत आली
कौशल्या सम सब महतारी * रामहिं सहज स्वभाव पियारी
मोपर करहिं सनेह विशेखी * मैं करि प्रीति परीक्षा देखी
जो विधि जन्म देइ करि छोहू * होहिं रामसिय पूत पतोहू
प्राण ते अधिक रामसिय मोरे * तिनके तिलक क्षोभ कस तोरे
दो० भरत शपथ तोहिं सत्य कहु, परिहरि कपट दुराव ।
हर्ष समय विस्मय करसि, कारण मोहिं सुनाव ॥
एकहिबार आश सब पूजी * अब कछु कहब जीह करि दूजी
फोरै योग कपार अभागा * भलो कहत दुख रौरेहु लागा
कहै झूंठ फुर बात बनाई * सो प्रिय तुमहिं करुइ मैं भाई
हमहु कहब अब ठकुरसुहाती * नाहिं तौ मौन रहब दिन राती
करि कुरूप विधि परवश कीन्हा * बवा सो लुनिय लहिय जो दीन्हा
कोउ नृप होउ हमैं का हानी * चेरि छाँड़ि अब होब न रानी
जारै योग स्वभाव हमारा * अनभल देखि न जाइ तुम्हारा
तातें कछुक बात अनुसारी * क्षमब देवि बड़ि चूक हमारी
दो० गूढ़कपट प्रियवचन सुनि, तीय अधर बुधि रानि ।
सुरमायावश वैरिणिहि, सुहृद जानि पतियानि ॥
सादर पुनि पुनि पूछति वोही * शबरीनाद मृगी जनु मोही
तस मति फिरी अहै जस भावी * रहसी चेरि घात भलि फावी
तुम पूछहु मैं कहत डराऊं * धरेहु मोर घरफोरी नाऊं
सजिप्रतीतिगाढ़ि बहुविधि छोली * अवध साढ़साती जनु बोली
प्रिय सियराम कहा तुम रानी * रामहिं तुमप्रिय सो फुरबानी

रहे प्रथम अब सो दिन बीते * समय पाइ रिपु होहिं पिरीते
भानु कमलकुल पोषनिहारा * बिनु जल जारिकरै सो छारा
जर तुम्हारि चह सवति उपारी * रूंधहु करि उपाय वर बारी
दो० तुमहिं न शोच सुहागबल, निजवश जानहु राव ।
मन मलीन मुँह मीठ नृप, राउर सरल स्वभाव ॥
चतुर गँभीर राम महतारी * बीच पाइ निजकाज सवांरी
पठये भरत भूप ननिऔरे * राम मातु मत जानब रौरे
सेवहिंसकल सवति मोहिं नीके * गर्वित भरतमातु बल पीके
शाल तुम्हार कौशलहि माई * चतुर कपट नहिं परत लखाई
राजहिं तुमपर प्रीति विशेखी * सवति स्वभाव सकै नहिं देखी
रचि प्रपञ्च भूपहि अपनाई * राम तिलकहित लगन धराई
इहिकुल उचित रामकहँ टीका * सबहि सुहाइ मोहिं सुठि नीका
आगिलि बात समुझि डर मोहीं * दैव देव फल सो फिर वोहीं
दो० रचि पचि कोटिक कुटिलपन, कीन्हेसि कपट प्रबोध ।
कहेसि कथा शत सवतिकर, जाते बढ़ै विरोध ॥
भावी वश प्रतीति उर आई * पूछि नारि निज शपथ दिवाई
का पूछहु तुम अजहुँ न जाना * हित अनहित निज पशु पहिंचाना
भये पाख दिन सजत समाजू * तुम सुधि पायहु मोसन आजू
खाइय पहिरिय राज तुम्हारे * सत्य कहे नहिं दोष हमारे
जो असत्य कछु कहब बनाई * तौ विधि देइहि मोहिं सजाई
रामहिं तिलक काल्हि जो भयऊ * तुम कहँ विपति बीज विधि बयऊ
रेखा खैंचि कहौं बल भाखी * भामिनि भइउ दूध की माखी
जो सुत सहित करहु सेवकाई * तौ घर रहहु न आन उपाई
दो० कद्रू विनतहि दीन दुख, तुमहिं कौशला देव ।
भरत बन्दिगृह सेइहैं, राम लषण कर नेव ॥
केकयसुता सुनत कटु बानी * कहि न सकै कछु सहमिसुखानी
तनु पसेव केदलि जनु कांपी * कुबरी दशन जीह तब चांपी
कहि कहि कोटिन कपट कहानी * धीरज धरहु प्रबोधिसि रानी
कीन्हेसि कठिन पढ़ाय कुपाठू * जिमि न नवै फिरि उकठ कुकाठू
फिरा कर्म प्रिय लागु कुचाली * बकिहि सराहत मनहुँ मराली
सुनु मन्थरा बात फुर तोरी * दहिन आंखि नित फरकत मोरी
दिन प्रति देखौं राति कुसपना * कहौं न तोहिं मोहवश अपना

काह कहौं सखि शुद्ध सुभाऊ * दहिन वाम नहिं जानौं काऊ
दो० अपने चलत न आजुलगि, अनभल काहुक कीन्ह ।
केहि अघ एकहिबार मोहिं, दैव दुसह दुख दीन्ह ॥
नैहर जन्म भरब बरु जाई * जियत न करब सवति सेवकाई
अरिवश दैव जियावै जाही * मरणनीक तेहि जियब न चाही
दीनवचन कह बहुविधि रानी * सुनि कुबरी तिय माया ठानी
अस कस कहहु मानि मनऊना * सुखसुहाग तुम कहँ दिन दूना
जो राउर अस अनभल ताका * सो पाइहि यह फल परिपाका
जबते कुमति सुना मैं स्वामिनि * भूख न वासर नींद न यामिनि
पूछा गुणिन रेख तिन खांची * भरत भुवाल होब यह सांची
भामिनि करहु तो कहौं उपाऊ * हैं तुम्हरे सेवा वश राऊ
दो० परौं कूप तव वचन लगि, सकौं पूत पति त्यागि ।
कहसि मोर दुख देखि बड़, कस न करब हितलागि ॥
कुबरी करी कुबलि कैकेयी * कपट छुरी उर पाहन टेयी
लखै न रानि निकट दुख कैसे * चरै हरित तृण बलिपशु जैसे
सुनत बात मृदु अन्त कठोरी * देति मनहुँ मधु माहुर घोरी
कहै चेरि सुधि अहै कि नाहीं * स्वामिनि कहेहु कथा मोहिंपाहीं
दुइ वरदान भूपसन थाती * मांगहु आज जुड़ावहु छाती
सुतहि राज रामहिं वनवासू * देहु लेहु सब सवति हुलासू
भूपति राम शपथ जब करई * तब मांगेहु जेहि वचन न टरई
होइ अकाज आजु निशि बीते * वचन मोर प्रिय मानहु जीते
दो० बड़ कुघातकरि पातकिनि, कहेसि कोपगृह जाहु ।
काज सँवारहु सजग सब, सहसा जनि पतियाहु ॥
कुबरिहि रानि प्राणसम जानी * बारबार बड़ि बुद्धि बखानी
तुहि सम हित न मोर संसारा * बहेजात कर भइसि अधारा
जो विधि पुरब मनोरथ काली * करौं तोहिं चषपूतरि आली
बहुविधि चेरिहि आदर देयी * कोपभवन गवनी कैकेयी
विपति बीज वर्षाऋतु चेरी * भुइँ भइ कुमति कैकयी केरी
पाइ कपट जल अंकुर जामा * वरदोउ दल फल दुख परिणामा
कोप समाज साज सजि सोई * राजकरत तेहि कुमति बिगोई
राउर नगर कुलाहल होई * यह कुचाल कछु जान न कोई
दो० प्रमुदित पुर नर नारि सब, साजि सुमङ्गलचार ।

इक प्रविशहिं इक निकसहीं, भीर भूप दरबार ॥
बाल सखा सुनि हिय हरषाहीं * मिलि दशपांच रामपहँ जाहीं
प्रभु आदरहिं प्रेम पहिंचानी * पूछहिं कुशल क्षेम मृदुबानी
फिरहिं भवन प्रभु आयसु पाई * करत परस्पर राम बड़ाई
को रघुवीर सरिस संसारा * शील सनेह निबाहनहारा
जेहि जेहि योनि कर्मवश भ्रमहीं * तहँ तहँ ईश देहिं यह हमहीं
सेवक हम स्वामी सियनाहू * होउ नाथ यह ओर निबाहू
अस अभिलाष नगर सब काहू * केकयसुता हृदय अतिदाहू
को न कुसंगति पाइ नशाई * रहै न नीच मते गरुआई
दो० सांझ समय सानन्द नृप, गये केकयी गेह ।
गवन निठुरता निपट किय, जनु धरि देह सनेह ॥
कोपभवन सुनि सकुचे राऊ * भयवश अगम परै नहिं पाऊ
सुरपति बसै बाहु बल जाके * नरपति रहहिं सकल रुख ताके
सो सुनि तियरिस गये सुखाई * देखहु काम प्रताप बड़ाई
शूलकुलिश असि अँगवनिहारे * ते रतिनाथ सुमन शर मारे
सभय नरेश प्रिया पहँ गयऊ * देखि दशा दुख दारुण भयऊ
भूमि शयन पट मोट पुराना * दिये डारि तनु भूषण नाना
कुमतिहि कस कुरूपता फावी * अनहित वात शोच जनु भावी
जाइ निकट नृप कह मृदुबानी * प्राणप्रिया केहि हेतु रिसानी
छं० केहि हेतु रानि रिसानि परसत पानि पतिहि निवारई ।
मानहुँ सरोष भुअङ्ग भामिनि विषम भांति निहारई ॥
दुइ वासना रसना दशन वर मर्म ठाहर देखई ।
तुलसी नृपति भवितव्यता वश काम कौतुक लेखई ॥
सो० बारबार कह राउ, सुमुखि सुलोचनि पिकवचनि ।
कारण मोहिं सुनाउ, गजगामिनि निज कोपकर ॥
अनहित तोर प्रिया केहि कीन्हा * केहि दुइ शिर केहि यम चह लीन्हा
कहु केहि रङ्कहिं करौं नरेशू * कहु केहि नृपहिं निकारौं देशू
सकौं तोर अरि अमरहु मारी * कहा कीट वपुरे नर नारी
जानसि मोर स्वभाव बरोरू * तव मुख ममदृग चन्द्रचकोरू
प्रिया प्राण सुत सर्वस मोरे * परिजन प्रजा सकल वश तोरे
जो कछु कहौं कपट करि तोहीं * भामिनि रामशपथ शत मोहीं
बिहँसि मांगु मनभावति बाता * भूषण साजु मनोहर गाता

घरी कुघरी समुझि जिय देखू * वेगि प्रिया परिहरहु कुवेखू
दो० यह सुनि मनगुनि शपथबड़ि, बिहँसि उठी मतिमन्द ।
भूषण सजति बिलोकि मृग, मनहुँ किरातिनि फन्द ॥
पुनि कह राउ सुहृद जिय जानी * प्रेम पुलकि मृदुमञ्जुल बानी
भामिनि भयउ तोर मनभावा * घर घर नगर अनन्द बधावा
रामहिं देउँ कालि युवराजू * सजहु सुलोचनि मङ्गलसाजू
दलकि उठी सुनि वचन कठोरा * जनु छुइ गयउ पाक बरतोरा
ऐसी पीर बिहँसि उर गोई * चोर नारि जिमि प्रकट न रोई
लखी न भूप कपट चतुराई * कोटि कुटिल गुण गुरू पढ़ाई
यद्यपि नीति निपुण नरनाहू * नारि चरित जलनिधि अवगाहू
कपट सनेह बढ़ाइ बहोरी * बोली बिहँसि नयन मुख मोरी
दो० मांगु मांगु पै कहहु पिय, कबहूं देहु न लेहु ।
देन कहेउ वरदान दुइ, तेउ पावत सन्देहु ॥
जानेउ मर्म राउ हँसि कहई * तुमहिं कोहाब परमप्रिय अहई
थाती राखि न मांगेउ काऊ * बिसरि गयो मम भोर सुभाऊ
झूठहु दोष हमहिं जनि देहू * दुइके चारि मांगि किन लेहू
रघुकुलरीति सदा चलि आई * प्राण जाइँ वरु वचन न जाई
नहिं असत्य सम पातकपुञ्जा * गिरिसम होहिं कि कोटिक गुञ्जा
सत्यमूल सब सुकृत सुहाई * वेद पुराण विदित मुनि गाई
तेहिपर राम शपथ करिआई * सुकृत सनेह अवधि रघुराई
बात दृढ़ाइ कुमति हँसि बोली * कुमति विहंग कुलह जनु खोली
दो० भूप मनोरथ सुभगवन, सुख सुविहंग समाज ।
भिल्लिनि जनु छांड़नचहत, वचन भयङ्कर बाज ॥
सुनहु प्राणपति भावत जीका * देहु एक वर भरतहिं टीका
दूसर वर मांगौं कर जोरी * नाथ मनोरथ पुरवहु मोरी
तापस वेष विशेष उदासी * चौदहवर्ष राम वनवासी
सुनि तिय वचन भूप उरशोकू * शशिकर छुवत विकलजिमिकोकू
गये सहमि कछु कहि नहिं आवा * जनु शचान वन झपटेउ लावा
विवरण भयउ निपट महिपालू * दामिनि हनेउ मनहुँ तरुतालू
माथे हाथ मूंदि दोउ लोचन * तनुधरि शोच लागु जनु शोचन
मोर मनोरथ सुरतरु फूला * फरत करिणि जनु हतेउ समूला
अवध उजारि कीन्ह कैकेयी * दीन्हेसि अचल विपति कै नेयी

दो० कवने अवसर का भयउ, गयउँ नारि विश्वास ।
योगसिद्धि फल समय जिमि, यतिहि अविद्या नास ॥
इहि विधि राव मनहिं मन दहई * देखि कुभांति कुमति अस कहई
भरत कि राउर पूत न होहीं * आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं
जो सुनि शरसम लाग तुम्हारे * काहे न बोलेहु वचन सँभारे
देहु उतर अस कहहु कि नाहीं * सत्यसिन्धु तुम रघुकुल माहीं
देन कहेउ वर अब जनि देहू * तजहु सत्य जग अपयश लेहू
सत्य सराहि कहेउ वर देना * जानेहु लेइहि मांगि चबेना
शिबि दधीचि बलि जो कछु भाखा * तन धन तजेउ वचन प्रण राखा
अति कटुवचन कहति कैकेयी * मानहुँ लोन जरे पर देयी
दो० धर्मधुरन्धर धीर धरि, नयन उघारे राउ ।
शिरधुनि लीन्ह उसास अति, मारेसि मोहिं कुठाउ ॥
आगे देखि बरति रिस भारी * मनहुँ रोष तरवारि उघारी
मूठ कुबुद्धि धार निठुराई * धरि कुबरी जनु सान बनाई
लखेउ महीप कराल कठोरा * सत्य कि जीवन लेइहि मोरा
बोले राउ कठिन करि छाती * बानी विनय न ताहि सोहाती
मोरे भरत राम दोउ आँखी * सत्य कहौं करि शंकर साखी
प्रिया वचन कस कहसि कुभाँती * रीति प्रतीति प्रीति करि घाती
अवशि दूत मैं पठउब प्राता * ऐहैं वेगि सुनत दोउ भ्राता
सुदिन साधि सब साज सजाई * देहौं भरतहिं राज बजाई
दो० लोभ न रामहिं राजकर, बहुत भरतपर प्रीति ।
मैं बड़ छोट विचारकरि, करत रहेउँ नृपनीति ॥
राम शपथ शत कहौं स्वभाऊ * राममातु मोहिं कहा न काऊ
मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूछे * ताते परेउ मनोरथ छूछे
रिसि परिहरि अब मङ्गलसाजू * कछु दिन गये भरत युवराजू
एकहि बात मोहिं दुख लागा * वर दूसर असमञ्जस माँगा
अजहूं हृदय दहत तेहि आंचा * रिसि परिहास कि सांचहु सांचा
कहु तजि रोष राम अपराधू * सब कोउ कहत राम सुठि साधू
तुहूं सराहसि करसि सनेहू * अब सुनि मोहिं परम सन्देहू
जासु स्वभाव अरिहु अनुकूला * सो किमि करहि मातु प्रतिकूला
दो० प्रिया हास्य रिसि परिहरहु, मांगु विचारि विवेक ।
जेहि देखौं अब नयनभरि, भरत राज अभिषेक ॥

जिये मीन बरु वारि विहीना * मणि बिनुफणिक जिये दुख दीना
कहौं स्वभाव न छल मनमाहीं * जीवन मोर राम बिनु नाहीं
समुझि देखु तैं प्रिया प्रवीना * जीवन दशरथ राम अधीना
सुनिमृदुवचनकुमति अतिजरई * मनहुँ अनल आहुति घृत परई
कहहु करहु किन कोटि उपाया * इहां न लागिहि राउर माया
देहु कि लेहु अयश करि नाहीं * मोहिं न बहु परपञ्च सोहाहीं
राम साधु तुम साधु सुजाना * राममातु तुम भलि पहिचाना
जस कौशला मोर भल ताका * तस फल देउँ उन्हैं करि शाका

दो० होत प्रात मुनिवेष धरि, जो न राम वन जाहिं ।
मोर मरण राउर अयश, नृप समुझहु मन माहिं ॥

असकहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी * मानहुँ रोष तरंगिनि बाढ़ी
पाप पहार प्रकट भइ सोई * भरी क्रोधजल जाइ न जोई
दोउ वर कूल कठिन हठ धारा * भँवर कूबरी वचन प्रचारा
ढाहति भूप रूप तरु मूला * चली विपति वारिधि अनुकूला
लखी नरेश बात सब सांची * तिय मिसु मीच शीश पर नाची
गहि पद विनय कीन्ह बैठारी * जनि दिनकरकुल होसि कुठारी
मांगु माथ अबहीं देउँ तोहीं * राम विरह जनि मारसि मोहीं
राखु रामकहँ जेहि तेहि भाँती * नाहित जरिहि जन्म भरि छाती

दो० देखी व्याधि असाध्य नृप, परेउ धरणि धुनि माथ ।
कहत परम आरत वचन, राम राम रघुनाथ ॥

व्याकुल राउ शिथिल सब गाता * करिणि कलपतरु मनहुँ निपाता
कण्ठ सूख मुख आव न वानी * जिमि पाठीन दीन विनु पानी
पुनि कह कटु कठोर कैकेयी * मर्म पाछि जनु माहुर देयी
जो अन्तहु अस करतब रहेऊ * मांगु मांगु केहिके बल कहेऊ
दुइ कि होइँ यक संग भुवालू * हँसब ठठाइ फुलाउब गालू
दानि कहाउब अरु कृपणाई * चाहिय क्षेम कुशल रौताई
छांड़हु वचन कि धीरज धरहू * जनि अबला इव करुणा करहू
तन तिय तनय धाम धन धरणी * सत्यसिन्धु कहँ तृणसम वरणी

दो० मर्म वचन सुनि राउ कह, कछुक दोष नहिं तोर ।
लागेउ मोह पिशाच जनु, काल कहावत मोर ॥

चहत न भरत भूपपद भोरे * विधिवश कुमति बसी उर तोरे
सो सब मोर पाप परिणामू * कछु न बसाइ भयो विधि वामू

सुबस बसिहि पुनि अवध सुहाई * सब गुण धाम राम प्रभुताई
करिहैं भाइ सकल सेवकाई * ह्वैहै तिहुँ पुर राम बड़ाई
तोर कलङ्क मोर पछिताऊ * मुयउ मेटि नहिं जाइहि काऊ
अब तोहिं नीक लागु करु सोई * लोचन ओट बैठु मुख गोई
जौलौं जियों कहौं कर जोरी * तौलौं जनि कछु कहसि बहोरी
फिरि पछितैहसि अन्त अभागी * मारसि गाय नाहरू लागी

दो० परेउ राउ कहि कोटि विधि, काहे करसि निदान ।
कपटचतुर नहिं कहति कछु, जागति मनहुँ मशान ॥

राम राम रटि विकल भुआलू * जनु बिनु पङ्ख विहङ्ग विहालू
हृदय मनाव भोर जनि होई * रामहिं जाइ कहै जनि कोई
उदय करहु जनि रविकुल पूरा * अवध विलोकि होइ उर शूरा
भूप प्रीति केकयि निठुराई * उभय अवधि विधि रची बनाई
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा * वीणा वेणु शंख धुनि द्वारा
पढ़हिं भाट गुण गावहिं गायक * सुनत नृपहिं लागत जनु शायक
मङ्गल सकल सुहाइ न कैसे * सहगामिनी विभूषण जैसे
तेहि निशि नींद परी नहिं काहू * राम दरश लालसा उछाहू

दो० द्वार भीर सेवक सचिव, कहहिं उदय रवि देखि ।
जागे अजहुँ न अवधपति, कारण कवन विशेखि ॥

पिछले पहर भूप नित जागा * आजु हमहिं बड़ अचरज लागा
जाहु सुमन्त जगावहु जाई * कीजिय काज रजायसु पाई
गे सुमन्त नृप मन्दिर पाहीं * देखि भयानक जात डराहीं
धाइ खाइ जनु जात न हेरा * मानहुँ विपति विषाद बसेरा
पूछत कोउ न उतर कछु देयी * गे जेहि भवन भूप कैकेयी
कहि जयजीव बैठि शिरनाई * देखि भूपगति गयउ सुखाई
शोक विकल विवरण महिपरेऊ * मानहुँ कमल मूल परिहरेऊ
सचिव सभीत सकहि नहिं पूछी * बोली अशुभ भरी शुभ छूछी

दो० परी न राजहिं नींद निशि, मर्म जानु जगदीश ।
राम राम रटि भोर किय, हेतु न कहेउ महीश ॥

आनहु रामहिं वेगि बुलाई * समाचार तब पूछहु आई
चलेउ सुमन्त राउ रुख जानी * लखी कुचाल कीन्ह कछु रानी
शोचविवश महि परै न पाऊ * रामहिं बोलि कहहिं का राऊ
उर धरि धीरज गयउ दुआरे * पूछहिं सकल देखि मनमारे

समाधान मन कर सबहीका * गये जहां दिनकर कुल टीका
राम सुमन्तहि आवत देखा * आदर कीन्ह पितासम लेखा
निरखि वदन कहि भूप रजाई * रघुकुलदीपहि चले लिवाई
रामकुभाँति सचिव सँग जाहीं * देखि लोग जहँ तहँ बिलखाहीं
दो० आइ दीख रघुवंश मणि, नरपति निपट कुसाज ।
सहमिपरेउ लखि सिंहनिहिं, मनहुँ वृद्ध गजराज ॥
सूखे अधर जरे सब अङ्गा * मनहुँ दीन मणिहीन भुजङ्गा
सरुष समीप देखि कैकेयी * मानहुँ मृत्यु घरी गनि लेयी
करुणामय रघुनाथ सुभाऊ * प्रथम दीख दुख सुना न काऊ
तदपि धीरधरि समय विचारी * पूछा मधुर वचन महतारी
मोहिं कहु मातु तात दुख कारण * करिय यत्न जेहि होइ निवारण
सुनहु राम सब कारण एहू * राजहि तुम पर बहुत सनेहू
देन कहेउ मोहिं दुइ वरदाना * मांगेउँ जो कछु मोहिं सुहाना
सो सुनि भयउ भूप उर शोचू * छांड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू
दो० सुत सनेह इत वचन उत, संकट परेउ नरेश ।
सकहु तो आयसु शीशधरि, मेटहु कठिन कलेश ॥
निधरक बैठि कहत कटुबानी * सुनत कठिनता अति अकुलानी
जीभ कमान वचन शर जाना * मनहुँ भूप मृदु लक्ष्य समाना
जनु कठोरपन धरे शरीरा * सीख धनुष विद्या वर वीरा
सब प्रसङ्ग रघुपतिहि सुनाई * बैठी जनु तनु धरि निठुराई
मन मुसुकाहिं भानुकुल भानू * राम सहज आनन्दनिधानू
बोले वचन विगत सब दूषण * मृदुमञ्जुल जनु वाग विभूषण
सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी * जो पितु मातु वचन अनुरागी
तनय मातु पितु पोषणहारा * दुर्लभ जननी यह संसारा
दो० मुनिगण मिलन विशेष वन, सबहिं भांति भल मोर ।
तेहि महँ पितु आयसु बहुरि, सम्मत जननी तोर ॥
भरत प्राणप्रिय पावहिं राजू * विधिसबविधि मोहिं सन्मुखआजू
जो न जाहुँ वन ऐसेहु काजा * प्रथम गनिय मोहिं मूढ़समाजा
सेवहिं अरण्ड कल्पतरु त्यागी * परिहरि अमिय लेहिं विष मांगी
तेउ न पाइ अस समय चुकाहीं * देखु विचारि मातु मनमाहीं
अम्ब एक दुख मोहिं विशेखी * निपट विकल नरनायक देखी
थोरिहि वात पितहिं दुखभारी * होत प्रतीति न मोहिं महतारी

राउ धीर गुण उदधि अगाधू * भा मोते कछु बहु अपराधू
ताते मोहिं न कहत कछु राऊ * मोर शपथ तोहिं कहु सतिभाऊ
दो० सहज सरल रघुवरवचन, कुमति कुटिलकरि जान ।
चलै जोंक जिमि वक्रगति, यद्यपि सलिल समान ॥
रहसी रानि राम रुख पाई * बोली कपट सनेह जनाई
शपथ तुम्हार भरत कै आना * हेतु न दूसर मैं कछु जाना
तुम अपराध योग नहिं ताता * जननी जनक बन्धु सुखदाता
राम सत्य तुम जो कछु कहहू * तुम पितु मातु वचनरत अहहू
पितहिं बुझाइ कहौ बलि सोई * चौथेपन अघ अयश न होई
तुमसम सुवन सुकृत जेहि दीन्हे * उचित न तासु निरादर कीन्हे
लागहिं कुमुखि वचन शुभ कैसे * मगह गयादिक तीरथ जैसे
रामहिं मातु वचन सब भाये * जिमिसुरसरिगत सलिल सुहाये
दो० गै मूर्च्छा रामहिं सुमिरि, नृप फिरि करवट लीन्ह ।
सचिव रामआगमन कहि, विनय समय सम कीन्ह ॥
जब नृप अकनि राम पगु धारे * धरि धीरज तब नयन उघारे
सचिव सँभारि राउ बैठारे * चरण परत नृप राम निहारे
लिये सनेह विकल उरलाई * गै मणिफणिक बहुरि जिमिपाई
रामहिं चितै रहे नरनाहू * चला विलोचन वारि प्रवाहू
शोक विकल कछु कहै न पारा * हृदय लगावत बारहिं बारा
विधिहि मनाव राउ मनमाहीं * जेहि रघुनाथ न कानन जाहीं
सुमिरि महेशहिं कहहिं निहोरी * बिनती सुनहु सदाशिव मोरी
आशुतोष तुम औढरदानी * आरति हरहु दीनजन जानी
दो० तुम प्रेरक सबके हृदय, सो मति रामहिं देहु ।
वचन मोर तजि रहहिं घर, परिहरि शील सनेहु ॥
अयश होहु वरु सुयश नशाऊं * नरक परौं वरु सुरपुर जाऊं
सब दुख दुसह सहावहु मोहीं * लोचन ओट राम जनि होहीं
अस मन गुनत राउ नहिं बोला * पीपरपात सरिस मन डोला
रघुपति पितहिं प्रेमवश जानी * पुनि कछु कहेउ मातु अनुमानी
देशकाल अवसर अनुसारी * बोले वचन विनीत विचारी
तात कहौं कछु करौं ढिठाई * अनुचित क्षमब जानि लरिकाई
अतिलघुबात लागि दुख पावा * काहु न मोहिं कहि प्रथम जनावा
देखि गुसाइँहिं पूछेउँ माता * सुनि प्रसंग भो शीतल गाता

दो० मङ्गल समय सनेह वश, शोच परिहरिय तात ।
आयसु देइय हरषि हिय, कहि पुलके प्रभु गात ॥
धन्य जन्म जगतीतल तासू * पितहिं प्रमोद चरित सुनि जासू
चारि पदारथ करतल ताके * प्रिय पितुमातु प्राणसम जाके
आयसु पालि जन्म फल पाई * ऐहौं वेगिहि देहु रजाई
विदा मातु सन आवों मांगी * चलिहौं बनहिं बहुरि पगलागी
असकहि राम गवन तब कीन्हा * भूप शोकवश उतर न दीन्हा
नगर व्यापि गइ बात सुतीछी * छुवतचढ़ी जनु सब तनु बीछी
सुनि भे विकल सकल नर नारी * बेलि विटप जनु लागु दवारी
जो जहँ सुनै धुनै शिर सोई * बड़ विषाद नहिं धीरज होई
दो० मुख सूखहिं लोचन स्रवहिं, शोक न हृदय समाय ।
मानहुँ करुणारस कटक, उतरा अवध बजाय ॥
भलि बनाइ विधि बात बिगारी * जहँ तहँ देहिं केकयिहि गारी
इहि पापिनिहिं बूझि का परेऊ * छाय भवनपर पावक धरेऊ
निजकर नयन काढ़ि चह दीखा * डारि सुधा विष चाहत चीखा
कुटिल कठोर कुबुद्धि अभागी * भइ रघुवंश वेणु वन आगी
पल्लव बैठि पेड़ इन काटा * सुखमहँ शोक ठाट इन ठाटा
सदा राम इहि प्राण समाना * कारण कवन कुटिलपन ठाना
सत्य कहहिं कवि नारि सुभाऊ * सबविधि अगम अगाध दुराऊ
निज प्रतिबिम्ब मुकुर गहिजाई * जानि न जाइ नारिगति भाई
दो० का नहिं पावक जरिसकै, का न समुद्र समाइ ।
का न करै अबला प्रबल, केहि जग काल न खाइ ॥
का सुनाइ विधि काह सुनावा * का दिखाइ चह काह दिखावा
एक कहैं भल भूप न कीन्हा * वरविचारि नहिं कुमतिहि दीन्हा
जो हठिभयउ सकल दुख भाजन * अबला विवश ज्ञान गुणगाजन
एक धर्म परमिति पहिंचाने * नृपहिं दोष नहिं देहिं सयाने
शिवि दधीचि हरिचन्द्र कहानी * एक एकसन कहहिं बखानी
एक भरत कर सम्मत कहहीं * एक उदास भाव सुनि रहहीं
कान मूंद कर रद गहि जीहा * एक कहहिं यह बात अलीहा
सुकृत जाइ अस कहत तुम्हारे * भरत राम कहँ प्राण पियारे
दो० चन्द्र स्रवै बरु अनल कण, सुधा होइ विष तूल ।
सपनेहु कबहुँ न करहिं कछु, भरत राम प्रतिकूल ॥

एक विधातहि दूषण देहीं * सुधा दिखाइ दीन्ह विष जेहीं
खरभरनगर शोच सबकाहू * दुसह दाह उर मिटा उछाहू
विप्र वधू कुल मान जिठेरी * जे प्रिय परम केकयी केरी
लगीं देन सिख शील सराही * वचन बाणसम लागहिं ताही
भरत न प्रिय मोहिं राम समाना * सदा कहहु यह सब जगजाना
करहु राम पर सहज सनेहू * केहि अपराध आजु वन देहू
कबहुँ न कीन्ह सवति अवरेशू * प्रीति प्रतीति जान सब देशू
कौशल्या अब कहा बिगारा * तुम जेहि लागि वज्रपुर पारा
दो० सीय कि पियसँग परिहरहि, लषण कि रहिहहिं धाम ।
भरत कि भूजब राजपुर, नृप कि जियहिं बिनुराम ॥
अस विचारि जिय छांड़हु कोहू * शोक कलङ्क कोठ जनि होहू
भरतहि अवशि देहु युवराजू * कानन कौन राम कर काजू
नाहिन राम राज कर भूखे * धर्मधुरीण विषय रस रूखे
गुरुगृह बसहिं राम तजि गेहू * नृपसन अस वर दूसर लेहू
राम सरिस सुत काननयोगू * कहा कहहिं सुनि तुमकहँ लोगू
जो न मानिहौ कहे हमारे * नहिंलागिहि कछु हाथ तुम्हारे
जो परिहास कीन कछु होई * तौ कहि प्रकट जनावहु सोई
उठहु वेगि सोइ करहु उपाई * जेहि विधि शोक कलङ्क नशाई
छं० जेहि भांति शोक कलङ्क जाइ उपाइकरि कुल पालहू ।
हठि फेरु रामहिं जात वन जनि वात दूसरि चालहू ॥
जिमि भानुबिनुदिन प्राणबिनु तनु चन्दबिनुजिमियामिनी ।
तिमि अवध तुलसीदास प्रभुबिनु समुझिधौं मन भामिनी ॥
सो० सखिन सिखावन दीन्ह, सुनत मधुर परिणामहित ।
तेइँ कछु कान न कीन्ह, कुटिल प्रबोधी कूबरी ॥
उतर न देइ दुसह रिस रूखी * मृगिहिचितव जनुबाघिनि भूखी
व्याधि असाधिजानितिनत्यागी * चलीं कहत मतिमन्द अभागी
राज करत इहि दैव बिगोई * कीन्हेसि अस जस करै न कोई
इहिविधि विलपहिं पुरनरनारी * देहिं कुचालिहि कोटिक गारी
जरहिं विषमज्वर लेहिं उसासा * कवन राम बिनु जीवन आसा
विकल वियोग प्रजा अकुलानी * जिमि जलचरगण सूखत पानी
अतिविषादवश लोग लुगाई * गये मातु पहँ राम गुसांई
मुख प्रसन्न चित चौगुण चाऊ * यहै शोच जनि राखहिं राऊ

दो० नय गयन्द रघुवंशमणि, राज अलान समान ।
छूटि जान वनगवन सुनि, उर आनँद अधिकान ॥
रघुकुलतिलक जोरि दोउ हाथा * मुदित मातुपद नायउ माथा
दीन्ह अशीश लाइ उर लीन्हें * भूषण वसन निछावरि कीन्हें
बार बार मुख चूंबति माता * नयन नेह जल पुलकित गाता
गोद राखि पुनि हृदय लगाये * स्रवत प्रेम रस पयद सुहाये
प्रेम प्रमोद न कछु कहि जाई * रङ्क धनद पदवी जनु पाई
सादर सुन्दर वदन निहारी * बोली मधुर वचन महतारी
कहहु तात जननी बलिहारी * कबहिं लगन मुदमङ्गलकारी
सुकृत शील सुख सींव सुहाई * जन्मलाभ लहि अवध अघाई
दो० जेहि चाहत नरनारि सब, अतिआरत इहिभांति ।
जिमि चातकि चातक तृषित, वृष्टि शरद ऋतु स्वाति ॥
तात जाउँ बलि वेगि अन्हाहू * जो मनभाव मधुर कछु खाहू
पितु सपीप तब जायहु भैया * प्रेमविवश सादर कहि मैया
मातुवचन सुनि अति अनुकूला * जनु सनेह सुरतरु के फूला
सुख मकरन्द भरे श्रीमूला * निरखि राम मन भँवर न भूला
धर्मधुरीण धर्म गति जानी * कहेउ मातुसन अति मृदुबानी
पिता दीन्ह मोहिं कानन राजू * जहँ सबभांति मोर बड़ काजू
आयसु देहु मुदित मन माता * जेहि मुद मङ्गल कानन जाता
जनि सनेहवश डरपसि भोरे * आनँद मातु अनुग्रह तेरे
दो० वर्षचारिदश विपिन बसि, करि पितु वचन प्रमान ।
आय पायँ पुनि देखिहौं, मन जनि करसि मलान ॥
वचन विनीत मधुर रघुवर के * शरसम लाग मातु उर करके
सहमि सूखि सुनि शीतल बानी * जिमि जवासपर पावस पानी
कहि न जाय कछु हृदय विषादू * जनु सहमे करि केहरिनादू
नयन सलिल तनु थरथर कांपी * मांजा मनहुँ मीन कहँ व्यापी
धरि धीरज सुत वदन निहारी * गद्गद वचन कहति महतारी
तात पितहि तुम प्राणपियारे * देखि मुदित नित चरित तुम्हारे
राज देन कहँ शुभ दिन साधा * कहेउ जान वन केहि अपराधा
तात सुनावहु मोहिं निदानू * को दिनकरकुल भयउ कृशानू
दो० निरखि रामरुख सचिवसुत, कारण कहेउ बुझाय ।
सुनि प्रसंग रहि मूकगति, दशा वरणि नहिं जाय ॥

राखि न सकहिं न कहिसक जाहू * दुहूं भांति उर दारुण दाहू
लिखत सुधाकर लिखिगा राहू * विधिगति वाम सदा सब काहू
धर्म सनेह उभय मति घेरी * भइ गति सांप छछूंदरि केरी
राखौं सुतहि होइ अनुरोधू * धर्म जाइ अरु बन्धु विरोधू
कहौं जान वन तौ बड़ि हानी * सङ्कट शोच विकलभइ रानी
बहुरि समुझि तियधर्म सयानी * राम भरत दोउ सुत सम आनी
सरल स्वभाव राम महतारी * बोली वचन धीर धरि भारी
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका * पितु आयसु सब धर्मक टीका
दो० राज देन कह दीन्ह वन, मोहिं न शोच लवलेश ।
तुम बिनु भरतहि भूपतिहि, प्रजहि प्रचण्ड कलेश ॥
जो केवल पितु आयसु ताता * तौ जनि जाहु जाइ बलि माता
जो पितु मातु कहेँ वन जाना * तौ कानन शत अवधसमाना
पितु वनदेव मातु वनदेवी * खग मृग चरण सरोरुह सेवी
अन्तहु उचित नृपहि वनवासू * वय विलोकि हिय होत हरासू
बड़ भागी वन अवध अभागी * जो रघुवंशतिलक तुम त्यागी
जो सुत कहौं संग मोहिं लेहू * तुम्हरे हृदय होहि सन्देहू
पुत्र परम प्रिय तुम सबहीके * प्राण प्राण के जीवन जीके
ते तुम कहहु मातु वन जाऊं * मैं सुनि वचन बैठि पछिताऊं
दो० यह विचारि नहिं करउँ हठ, झूठ सनेह बढ़ाइ ।
मानि मातुके नात बलि, सुरति बिसरि नहिं जाइ॥
देव पितर सब तुमहिं गुसाईं * राखहु पलक नयन की नाईं
अवधि अम्बु प्रियपरिजन मीना * तुम करुणाकर धर्मधुरीना
अस विचारि सोइ करहु उपाई * सबहि जियत जेहि भेंटहु आई
जाउ सुखेन वनहिं बलि जाऊं * करि अनाथ जन परिजन गाऊं
सबकर आजु सुकृत फल बीता * भये कराल काल विपरीता
बहुविधि विलपि चरणलपटानी * परम अभागिनि आपुहि जानी
दारुण दुसह दाह उर व्यापा * वरणि न जाइ विलापकलापा
राम उठाइ मातु उर लावा * कहि मृदुवचन वहुत समुझावा
दो० समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय ।
जाय सासुपग कमल युग, वन्दि बैठि शिरनाय ॥
दीन्ह अशीश सासु मृदुबानी * अति सुकुमारि देखि अकुलानी
बैठि नमितमुख शोचति सीता * रूपराशि पति प्रेम पुनीता

चलन चहत वन जीवननाथा * कवन सुकृत सन होइहि साथा
की तनु प्राण कि केवल प्राना * विधि करतब कछु जात न जाना
चारुचरण नख लेखति धरणी * नूपुरमुखर मधुर कवि बरणी
मनहुँ प्रेम वश विनती करहीं * हमहिं सीयपद जनि परिहरहीं
मञ्जु विलोचन मोचति वारी * बोली देखि राम महतारी
तात सुनहु सिय अति सुकुमारी * सासु ससुर परिजनहि पियारी

दो० पिता जनक भूपालमणि, ससुर भानुकुलभान ।
प्रति रविकुल कैरव विपिन, विधु गुणरूपनिधान ॥

मैं पुनि पुत्रवधू प्रिय पाई * रूपराशि गुण शील सुहाई
नयन पुतरि इव प्रीति बढ़ाई * राखहुँ प्राण जानकिहिं लाई
कल्प बेलि जिमि बहुविधि लाली * सींचि सनेह सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भये विधि वामा * जानि न जाइ काह परिणामा
पलँग पीठि तजि गोद हिंडोरा * सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा
जिवनिमूरि जिमि जुगवति रहेउं * दीपबाति नहिं टारन कहेउं
सो सिय चहति चलन वन साथा * आयसु कहा होइ रघुनाथा
चन्द्रकिरण रसरसिक चकोरी * रविरुख नयन सकै किमि जोरी

दो० करि केहरि निशिचर चरहिं, दुष्ट जन्तु वन भूरि ।
विषवाटिका कि सोह सुत, सुभग सजीवनमूरि ॥

वनहित कोल किरात किशोरी * रची विरंचि विषय रसभोरी
पाहनक्रिमिजिमि कठिन स्वभाऊ * तिनहिं कलेश न कानन काऊ
के तापस तिय कानन योगू * जिन तप हेतु तजा सब भोगू
सिय वनबसिहि तात केहि भांती * चित्रलिखित कपि देखि डेराती
सुरसरि सुभग वनज वनचारी * डावर योग कि हंसकुमारी
अस विचारि जस आयसु होई * मैं सिख देउँ जानकिहि सोई
जो सियभवन रहै कह अम्बा * मोकहँ होइ प्राण अवलम्बा
सुनि रघुवीर मातु प्रियबानी * शील सनेह सुधा जनु सानी

दो० कहि प्रियवचन विवेकमय, कीन्ह मातु परितोष ।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रकट विपिनगुण दोष ॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं * बोले समय समुझि मनमाहीं
राजकुमारि सिखावन सुनहू * आन भांति जिय जनि कछु गुनहू
आपन मोर नीक जो चहहू * वचन हमार मानि घर रहहू
आयसु मोर सासु सेवकाई * सबविधि भामिनि भवन भलाई

इहिते अधिक धर्म नहिं दूजा * सादर सासु ससुरपद पूजा
जब जब मातु करिहि सुधि मोरी * होइहि प्रेम विकल मति भोरी
तब तब तुम कहि कथा पुरानी * सुन्दरि समुझायहु मृदुबानी
कहौं स्वभाव शपथ शत मोहीं * सुमुखि मातुहित राखौं तोहीं
दो० गुरु श्रुति सम्मत धर्मफल, पाइय विनहिं कलेश ।
हठ वश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश ॥
मैं पुनि करि प्रमाण पितु बानी * वेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी
दिवस जात नहिं लागहि बारा * सुन्दरि सिखवन सुनहु हमारा
जो हठ करहु प्रेम वश वामा * तौ तुम दुख पाउब परिणामा
कानन कठिन भयङ्कर भारी * घोर घाम हिम वारि बयारी
कुश कण्टक मग कङ्कर नाना * चलब पयादे बिनु पदत्राना
चरणकमल मृदु मञ्जु तुम्हारे * मारग अगम भूमिधर भारे
कन्दर खोह नदी नद नारे * अगम अगाध न जाहिं निहारे
भालु बाघ वृक केहरि नागा * करहिं नाद सुनि धीरज भागा
दो० भूमि शयन वल्कलवसन, अशन कन्द फल मूल ।
ते कि सदा सबदिन मिलहिं, समय समय अनुकूल ॥
नर अहार रजनीचर करहीं * कपट वेष वन कोटिन फिरहीं
लागै अति पहार कर पानी * विपिनविपति नहिं जातबखानी
व्याल कराल विहग वनघोरा * निशिचरनिकर नारि नर चोरा
डरपहिं धीर गहन सुधि आये * मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये
हंसगमनि तुम नहिं वनयोगू * सुनि अपयशदेहहिं मोहिं लोगू
मानससलिल सुधा प्रतिपाली * जियइ कि लवणपयोधि मराली
नव रसाल वन विहरण शीला * सोह कि कोकिल विपिन करीला
रहहु भवन अस हृदय विचारी * चन्द्रवदनि दुख कानन भारी
दो० सहज सुहृद गुरु स्वामिसिख, जो न करै हितमानि ।
सो पछिताय अघाय उर, अवशि होइ हितहानि ॥
सुनि मृदुवचन मनोहर पियके * लोचननलिन भरे जल सियके
शीतल सिख दाहक भइ कैसे * चकइहि शरदचांदनी जैसे
उतर न आव विकल वैदेही * तजन चहत मोहिं परमसनेही
बरबस रोंकि विलोचन वारी * धरि धीरज उर अवनिकुमारी
लागि सासु पद कह कर जोरी * क्षमब मातु बड़ि अविनय मोरी
दीन प्राणपति मोहिं सिख सोई * जेहि विधि मोर परमहित होई

मैं पुनि समुझि दीख मनमाहीं * प्रियवियोग सम दुख जग नाहीं
यहि विधि सियसासुहि समुझाई * कहति पतिहि वर विनय सुनाई
दो० प्राणनाथ करुणायतन, सुन्दर सुखद सुजान ।
तुम बिनु रघुकुल कुमुदविधु, सुरपुर नरक समान ॥
मातु पिता भगिनी प्रिय भाई * प्रिय परिवार सुहृद समुदाई
सासु ससुर गुरु सुजन सहाई * सुठि सुन्दर सुशील सुखदाई
जहँलगि नाथ नेह अरु नाते * पिय बिनु तियहि तरणि ते ताते
तनु धन धाम धरणि पुरराजू * पतिविहीन सब शोकसमाजू
भोग रोग सम भूषण भारू * यमयातना सरिस संसारू
प्राणनाथ तुम बिनु जगमाहीं * मोकहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं
जिय बिनु देह नदी बिनु वारी * तैसहि नाथ पुरुष बिनु नारी
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे * शरद विमल विधुवदन निहारे
दो० खगमृग परिजन नगर वन, वल्कलवसन दुकूल ।
नाथ साथ सुरसदन सम, पर्णशाल सुखमूल ॥
वन देवी वन देव उदारा * करिहैं सासु ससुर सम सारा
कुश किसलय साथरी सुहाई * प्रभु सँग मञ्जु मनोज तुराई
कन्द मूल फल अमिय अहारू * अवध सहससुख सरिस पहारू
क्षण क्षण प्रभुपदकमल विलोकी * रहिहौं मुदित दिवस जिमिकोकी
वन दुख नाथ कहेउ बहुतेरे * भय विषाद परिताप घनेरे
प्रभु वियोग लवलेश समाना * सब मिलि होहिं न कृपानिधाना
अस जियजानि सुजान शिरोमनि * लेइय संग मोहिं छांड़िय जनि
विनती बहुत करौं का स्वामी * करुणामय उर अन्तरयामी
दो० राखिय अवध जो अवधिलगि, रहत जानिये प्रान ।
दीनबन्धु सुन्दर सुखद, शील सनेह निधान ॥
मोहिं मगचलत न होइहि हारी * क्षण क्षण चरणसरोज निहारी
सबहि भांति प्रिय सेवा करिहौं * मारगजनित सकल श्रम हरिहौं
पांव पखारि बैठि तरु छाहीं * करिहौं वायु मुदित मनमाहीं
श्रमकण सहित श्याम तनु देखे * का दुख समय प्राणपति देखे
सममहि तृण तरु पल्लव डासी * पांय पलोटिहि सब निशि दासी
बारबार मृदु मूरति जोही * लागिहि ताति बयारि न मोही
को प्रभुसँग मोहिं चितवनहारा * सिंहवधुहि जिमि शशकासियारा
मैं सुकुमारि नाथ वन योगू * तुमहिं उचित तप मोकहँ भोगू

दो० ऐसहु वचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान ।
तौ प्रभु विषम वियोग दुख, सहिहैं पामर प्रान ॥
अस कहि सीय विकल भइभारी * वचन वियोग न सकी सँभारी
देखि दशा रघुपति जिय जाना * हठि राखे राखिहि नहिं प्राना
कहाउ कृपालु भानुकुल नाथा * परिहरि शोच चलहु वनसाथा
नहिं विषाद कर अवसर आजू * वेगि करहु वन गमन समाजू
कहि प्रिय वचन प्रियहि समुझाई * लगे मातु पद आशिष पाई
वेगि प्रजा दुख मेटब आई * जननी निठुर बिसरि जनिजाई
फिरिहि दशा विधि बहुरि कि मोरी * देखिहौं नयन मनोहर जोरी
सुदिन सुघरी तात कब होई * जननी जियत वदनविधु जोई
दो० बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति रघुवर तात ।
कबहुँ बुलाइ लगाइउर, हरषि निरखिहौं गात ॥
लखि सनेह कातरि महतारी * वचन न आव विकल भइ भारी
राम प्रबोध कीन्ह विधि नाना * समय सनेह न जाइ बखाना
तब जानकी सासु पग लागी * सुनिय मातु मैं परम अभागी
सेवा समय दैव वन दीन्हा * मोर मनोरथ सफल न कीन्हा
तजब क्षोभ जनि छांड़ब छोहू * कर्म कठिन कछु दोष न मोहू
सुनि सियवचन सासु अकुलानी * दशा कवन विधि कहौं बखानी
बारहिंबार लाइ उर लीन्हीं * धरि धीरज सिख आशिष दीन्हीं
अचल होइ अहिवात तुम्हारा * जबलग गङ्ग यमुन जल धारा
दो० सीतहि सासु अशीश सिख, दीन्ह अनेक प्रकार ।
चली नाइ पदपद्म शिर, अति हित बारहिं बार ॥
समाचार जब लक्ष्मण पाये * व्याकुल बिलखि वदन उठिधाये
कम्पपुलक तनु नयन सनीरा * गहे चरण अति प्रेम अधीरा
कहि न सकतकछु चितवत ठाढ़े * मीन दीन जनु जलते काढ़े
शोच हृदय विधि का होनहारा * सब सुख सुकृत सिरान हमारा
मोकहँ कहा कहब रघुनाथा * रखिहैं भवन कि लेहैं साथा
राम बिलोकि बन्धु कर जोरे * देह गेह सबसन तृणतोरे
बोले वचन राम नयनागर * शील सनेह सरल सुखसागर
तात प्रेमवश जनि कदराहू * समुझि हृदय परिणाम उछाहू
दो० मातु पिता गुरु स्वामि सिख, शिरधरि करहि सुभाय ।
लहउ लाभ तिन जन्मके, नतरु जन्म जग जाय ॥

असजियजानि सुनहु सिखभाई * करौ मातु पितु पद सेवकाई
भवन भरत रिपुसूदन नाहीं * राउ वृद्ध मम दुख मनमाहीं
मैं वन जाउँ तुमहिं लै साथा * होइहि सबविधि अवध अनाथा
गुरु पितु मातु प्रजा परिवारा * सब कहँ परै दुसह दुखभारा
रहहु करहु सब कर परितोषू * नतरु तात होइहि बड़ दोषू
जासु राज्य प्रिय प्रजा दुखारी * सो नृप अवशि नरक अधिकारी
रहहु तात अस नीति विचारी * सुनत लषण भये व्याकुल भारी
सियरे वदन सूखि गये कैसे * परसत तुहिन तामरस जैसे

दो० उतर न आवत प्रेमवश, गहे चरण अकुलाइ ।
नाथ दास मैं स्वामि तुम, तजहु तो कहा बसाइ ॥

दीन्ह मोहिं सिख नीक गुसांई * लागत अगम अपनि कदराई
नर वर धीर धर्म धुरधारी * निगमनीति के ते अधिकारी
मैं शिशु प्रभु सनेह प्रतिपाला * मन्दर मेरु कि लेइ मराला
गुरु पितु मातु न जानौं काहू * कहौं स्वभाव नाथ पतियाहू
जहँलगि जगत सनेह सगाई * प्रीति प्रतीति निगम निज गाई
मोरे सबै एक तुम स्वामी * दीनबन्धु उर अन्तरयामी
धर्मनीति उपदेशिय ताही * कीरति भूति सुगतिप्रिय जाही
मन क्रम वचन चरणरत होई * कृपासिन्धु परिहरिय कि सोई

दो० करुणासिन्धु सुबन्धु के, सुनि मृदुवचन विनीत ।
समुझाये उरलाय प्रभु, जानि सनेह सभीत ॥

मांगहु बिदा मातुसन जाई * आवहु वेगि चलहु वन भाई
मुदित भये सुनि रघुवर वानी * भयउ लाभ बड़ मिटी गलानी
हर्षित हृदय मातु पहँ आये * मनहुँ अन्ध फिरि लोचन पाये
जाइ जननि पद नायउ माथा * मन रघुनन्दन जानकि साथा
पूछेउ मातु मलिन मन देखी * लषण कहेउ सब कथा विशेखी
गई सहमि सुनि वचन कठोरा * मृगी देखि जनु दव चहुँओरा
लषण लखेउ भा अनरथ आजू * यह सनेहवश करब अकाजू
मांगत बिदा समय सकुचाहीं * जानसंग विधि कहहिं कि नाहीं

दो० समुझि सुमित्रा राम सिय, रूप सुशील स्वभाव ।
नृपसनेह लखि धुनेउ शिर, पापिनि कीन्ह कुदाव ॥

धीरज धरेउ कुअवसर जानी * सहज सुहृद बोली मृदुबानी
तात तुम्हार मातु वैदेही * पिता राम सबभांति सनेही

अवध तहां जहँ राम निवासू * तहां दिवस जहँ भानु प्रकासू
जोपै राम सीय वन जाहीं * अवध तुम्हार काज कछु नाहीं
गुरु पितु मातु बन्धु सुरसाईं * सेइय सकल प्राण की नाईं
राम प्राणप्रिय जीवन जीके * स्वारथ रहित सखा सबहीके
पूजनीय प्रिय परम जहांते * मानहिं सकल राम के नाते
अस जिय जानि सङ्ग वन जाहू * लेहु तात जगजीवन लाहू

दो० भूरिभाग भाजन भयउ, मोहिं समेत बलि जाउँ ।
जो तुम्हरे मन छांड़ि छल, कीन्ह रामपद ठाउँ ॥

पुत्रवती युवती जग सोई * रघुवरभक्त जासु सुत होई
नतरु बांझ भलि बादि बियानी * रामविमुख सुतते हितहानी
तुम्हरेहि भाग राम वन जाहीं * दूसर हेतु तात कछु नाहीं
सकल सुकृत कर फल सुत येहू * राम सीय पद सहज सनेहू
राग रोष ईर्षा मद मोहू * जनि सपनेहु इनके वश होहू
सकल प्रकार विकार विहाई * मन क्रम वचन करेहु सेवकाई
तुम कहँ वन सब भांति सुपासू * सँग पितु मातु राम सिय जासू
जेहि न राम वन लहहिं कलेशू * सुत सोइ करेहु मोर उपदेशू

छं० उपदेश यह जेहि तात तुमते राम सिय सुख पावहीं ।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति वन बिसरावहीं ॥
तुलसी सुतहि सिख देइ आयसु देइ पुनि आशिष दई ।
रतिहोउअविरल अमल सिय रघुवीर पद नित नित नई ॥

सो० मातु चरण शिर नाइ, चले तुरत शङ्कित हिये ।
वागुरु विषम तुराइ, मनहुँ भाग मृग भाग वश ॥

गये लषण जहँ जानिक नाथा * भे मन मुदित पाइ प्रिय साथा
वन्दि राम सिय चरण सुहाये * चले संग नृप मन्दिर आये
कहहिं परस्पर पुर नर नारी * भलि बनाइ विधि बात बिगारी
तनु कृश मन दुख वदन मलीना * विकल मनहुँ माखी मधु छीना
कर मींजहिं शिर धुनि पछिताहीं * जनु विनु पंख बिहँग अकुलाहीं
भइ बड़ि भीर भूप दरबारा * वरणि न जाइ विषाद अपारा
सचिव उठाइ राउ बैठारे * कहि प्रिय वचन राम पग धारे
सिय समेत दोउ तनय निहारी * व्याकुल भये भूमि पति भारी

दो० सीय सहित सुत सुभग दोउ, देखि देखि अकुलाइ ।
बारहिं बार सनेह वश, राउ लिये उर लाइ ॥

सके न बोलि विकल नरनाहू * शोक विकल उर दारुण दाहू
नाइ शीश पद अति अनुरागा * उठि रघुनाथ बिदा तब मांगा
पितु अशीश आयसु मोहिं दीजै * हर्ष समय विस्मय कत कीजै
तात किये प्रिय प्रेम प्रमादू * यश जग जाइ होइ अपवादू
सुनि सनेहवश उठि नर नाहू * बैठारे रघुपति गहि बाहू
सुनहु तात तुमकहँ मुनि कहहीं * राम चराचर नायक अहहीं
शुभ अरु अशुभ कर्म अनुहारी * ईश देइ फल हृदय विचारी
करै जो कर्म पाव फल सोई * निगमनीति अस कह सब कोई
दो० और करै अपराध कोइ, और पाव फल भोग ।
अति विचित्र भगवन्त गति, को जग जानै योग ॥
राउर राम लषण हित लागी * बहुत उपाय कीन्ह छल त्यागी
लखे राम रुख रहत न जाने * धर्म धुरंधर धीर सयाने
तब नृप सीय लाइ उर लीनी * अतिहित बहुत भांति सिखदीनी
कहि वनके दुख दुसह सुनाये * सासु ससुर पितु सुख समुझाये
सिय मन रामचरण अनुरागा * घर न सुगम वन अगम न लागा
औरो सबहि सीय समुझाई * कहिकहि विपिनविपति अधिकाई
सचिव नारि गुरु नारि सयानी * सहित सनेह कहहिं मृदु बानी
तुम कहँ तौ न दीन्ह वन बासू * करहु जो कहहिं ससुर गुरु सासू
दो० सिख शीतल हित मधुर मृदु, सुनि सीतहि न सुहानि ।
शरदचन्द्र चांदनि लगत, जनु चकई अकुलानि ॥
सीय सकुच वस उतर न देई * सो सुनि तमकि उठी कैकेई
मुनि पट भूषण भाजन आनी * आगे धरि बोली मृदु बानी
नृपहि प्राण प्रिय तुम रघुवीरा * शील सनेह न छांड़हिं भीरा
सुकृत सुयश परलोक नशाऊ * तुमहिं जान वन कहहिं न राऊ
अस विचारि सोइ करौ जो भावा * राम जननि सिख सुनि सुख पावा
भूपहि वचन बाण सम लागे * करहिं न प्राण पयान अभागे
शोक विकल मूर्च्छित नरनाहू * कहा करिय कछु सूझ न काहू
राम तुरत मुनि वेष बनाई * चले जनक जननी शिर नाई
दो० सजि वनसाज समाज प्रभु, वनिता बन्धु समेत ।
बन्दि विप्र गुरुचरण प्रभु, चले करि सबहिं अचेत ॥
निकसि वशिष्ठ द्वार भे ठाढ़े * देखे लोग विरह दव डाढ़े
कहि प्रियबचन सबहिं समुझाये * विप्र वृन्द रघुवीर बुलाये

गुरु सन कहि वर्षाशन दीन्हे * आदर दान विनय बहु कीन्हे
याचक दान मान सन्तोषे * नीत पुनीत प्रेम परितोषे
दासी दास बुलाइ बहोरी * गुरुहिं सौंपि बोले कर जोरी
सबकर सार सँभाल गुसांई * करब जनक जननी की नाई
बारहिंबार जोरि युग पानी * कहत राम सबसन मृदुबानी
सोइ सब भांति मोर हितकारी * जेहिते रहैं भुआल सुखारी
दो० मातु सकल मोरे विरह, जेहि न होहिं दुखदीन ।
सो उपाय तुम करब सब, पुरजन परम प्रवीन ॥
इहिविधि राम सबहिं समुझावा * गुरुपदपद्म हरषि शिर नावा
गणपति गौरि गिरीश मनाई * चले अशीश पाइ रघुराई
राम चलत अतिभयो विषादू * सुनि न जाइ पुर आरतनादू
कुशकुन लङ्क अवध अतिशोकू * हर्ष विषाद विवश सुरलोकू
गै मूर्च्छा तब भूपति जागे * बोलि सुमन्त्र कहन असलागे
राम चले वन प्राण न जाहीं * केहि सुख लागि रहे तनुमाहीं
इहि ते कवन व्यथा बलवाना * जो दुख पाइ तजहिं तनु प्राना
पुनि धरि धीर कहहिं नरनाहू * लै रथ संग सखा तुम जाहू
दो० सुठि सुकुमार कुमार दोउ, जनकसुता सुकुमारि ।
रथ चढ़ाइ दिखराइ वन, फिरहु गये दिनचारि ॥
जो नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई * सत्य सिन्धु दृढ़व्रत रघुराई
तौ तुम विनय करेहु कर जोरी * फेरिय प्रभु मिथिलेशकिशोरी
जब सिय कानन देखि डराई * कहेउ मोर सिख अवसर पाई
सासु ससुर अस कहेउ सँदेशू * पुत्रि फिरिय वन बहुत कलेशू
पितुगृह कबहुँ कबहुँ ससुरारी * रहेउ जहां रुचि होइ तुम्हारी
इहि विधि कहाउ उपाय कदम्बा * फिरइ तो होइ प्राण अवलम्बा
नाहित मोर मरण परिणामा * कछु न बसाइ भयो विधि वामा
अस कहि मूर्च्छि परेउ महिराऊ * राम लषण सिय आनि दिखाऊ
दो० पाय रजायसु नाय शिर, रथ अतिवेगि बनाइ ।
गये जहां बाहर नगर, सीय सहित दोउ भाइ ॥
तब सुमन्त्र नृप वचन सुनाये * करि विनती रथ राम चढ़ाये
चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई * चले हर्षि अवधहिं शिर नाई
चलत राम लखि अवध अनाथा * विकल लोग लागे सब साथा
कृपासिन्धु बहु विधि समुझावहिं * फिरहिं प्रेमवशपुनिफिरि आवहिं

लागत अवध भयानक भारी * मानहुँ कालराति अँधियारी
घोर जन्तु सब पुर नर नारी * डरपहिं एकहि एक निहारी
घर मशान परिजन जनु भूता * सुत हित मीत मनहुँ यमदूता
बागन विटप बेलि कुम्हिलाहीं * सरित सरोवर देखि न जाहीं

दो० हय गय कोटिक केलि मृग, पुर पशु चातक मोर ।
पिक रथांग शुक सारिका, सारस हंस चकोर ॥

राम वियोग विकल सब ठाढ़े * जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े
नगर सकल वन गहवर भारी * खगमृग विकल सकल नरनारी
विधि कैकयि किरातिनी कीनी * जेहिंदवदुसहदशहु दिशि दीनी
सहि न सके रघुवर विरहागी * चले लोग सब व्याकुल भागी
सबहिं विचार कीन्ह मनमाहीं * रामलषण सिय बिनु सुख नाहीं
जहां राम तहँ सकल समाजू * बिनु रघुवीर अवध केहिकाजू
चले साथ अस मन्त्र दृढ़ाई * सुरदुर्लभ सुखसदन विहाई
रामचरण पङ्कज प्रिय जिनहीं * विषय भोग वश करै कि तिनहीं

दो० बालक वृद्ध विहाइ गृह, लगे लोग सब साथ ।
तमसातीर निवास किय, प्रथम दिवस रघुनाथ ॥

रघुपति प्रजा प्रेमवश देखी * सदय हृदय दुख भयउ विशेखी
करुणामय रघुनाथ गुसाईं * वेगि पाइ यह पीर पराई
कहि सप्रेम मृदुवचन सुहाये * बहुविधि राम लोग समुझाये
किये धर्म उपदेश घनेरे * लोग प्रेमवश फिरहिं न फेरे
शील सनेह छांड़ि नहिं जाई * असमञ्जस वश भे रघुराई
लोक शोक श्रमवश गे सोई * कछुक देव माया मति मोई
जबहिं याम युग यामिनि बीती * राम सचिवसन कहेउ सप्रीती
खोज मारि रथ हांकहु ताता * आन उपाय बनिहिं नहिं बाता

दो० राम लषण सिय यान चढ़ि, शम्भु चरण शिरनाइ ।
सचिव चलायउ तुरत रथ, इत उत खोज दुराइ ॥

जागे सकल लोग भये भोरू * गे रघुवीर भयो अतिशोरू
रथकर खोज कतहुँ नहिं पावहिं * रामरामकहि चहुँदिशि धावहिं
मनहुँ वारिनिधि बूड़ जहाजू * भयउ विकलजनु वणिकसमाजू
एकहि एक देहिं उपदेशू * तजेउ राम हम जानि कलेशू
निन्दहिं आपु सराहहिं मीना * धिक जीवन रघुवीर विहीना
जो पै प्रिय वियोग विधि कीन्हा * तौ कस मरण न मांगे दीन्हा

इहि विधि करत प्रलाप कलापा * आये अवध भरे परितापा
विषम वियोग न जाइ बखाना * अवधि आश राखहिं सब प्राना
दो० राम दरश हित नेम व्रत, लगे करन नर नारि ।
मनहुँ कोक कोकी कमल, दीन विहीन तमारि ॥
सीता सचिव सहित दोउ भाई * शृङ्गबेर पुर पहुँचे जाई
उतरे राम देवसरि देखी * कीन्ह दण्डवत हर्ष विशेखी
लषण सचिवसिय कीन्ह प्रणामा * सबहि सहित सुख पायउ रामा
गङ्ग सकल मुद मङ्गल मूला * सबसुखकरनि हरनि सब शूला
कहि कहि कोटिक कथा प्रसङ्गा * राम विलोकत गङ्ग तरङ्गा
सचिवहि अनुजहि प्रियहिसुनाई * विबुधनदी महिमा अधिकाई
मज्जन कीन्ह पन्थश्रम गयऊ * शुचिजल पियतमुदित मन भयऊ
सुमिरत जाहि मिटहिं भव भारू * तेहि श्रम यह लौकिक व्यवहारू
दो० शुद्ध सच्चिदानन्दमय, राम भानुकुल केतु ।
चरित करत नर अनुहरत, संसृति सागर सेतु ॥
यह सुधि गुह निषाद जब पाई * मुदित लिये प्रियबन्धु बुलाई
लै फल मूल भेंट भरि भारा * मिलन चल्यो हिय हर्ष अपारा
करि दण्डवत भेंट धरि आगे * प्रभुहिं विलोकत अति अनुरागे
सहज सनेह विवश रघुराई * पूछेउ कुशल निकट बैठाई
नाथ कुशल पद पङ्कज देखे * भयउ भाग्य भाजन जन लेखे
देव धरणि धन धाम तुम्हारा * मैं जन नीच सहित परिवारा
कृपा करिय पुर धारिय पाऊ * थापिय जन सब लोग सिहाऊ
कहेउ सत्य सब सखा सुजाना * मोहिं दीन्ह पितु आयसु आना
दो० वर्ष चारि दश वास वन, मुनि व्रत वेष अहार ।
ग्रामवास नहिंउचित सुनि, गुहहि भयो दुखभार ॥
राम लषण सियरूप निहारी * कहहिं सप्रेम नगर नर नारी
ते पितु मातु कहहु सखि कैसे * जिन पठये वन बालक ऐसे
एक कहहिं भूपति भल कीन्हा * लोचन लाहु हमहिं जिन दीन्हा
तब निषादपति उर अनुमाना * तरु शिंशपा मनोहर जाना
लै रघुनाथहिं ठौर बतावा * कहेउ राम सब भांति सुहावा
पुरजन करि जुहार गृह आये * रघुवर सन्ध्याकरन सिधाये
गुह सँवारि साथरी बनाई * कुश किसलय मृदु परमसुहाई
शुचि फल मूल मृदुल मधुजानी * दोना भरि भरि राखेसि आनी

दो० सिय सुमन्त्र भ्रातासहित, कन्द मूल फल खाइ ।
शयन कीन्ह रघुवंशमणि, पायँ पलोटत भाइ ॥
उठे लषण प्रभु सोवत जानी * कहि सचिवहिं सोवन मृदुबानी
कछुक दूरि सजि बाण शरासन * जागन लगे बैठि वीरासन
गुह बुलाइ पाहरू प्रतीती * ठांव ठांव राखे अति प्रीती
आप लषण पहँ बैठेउ जाई * कटि भाथा शर चाप चढ़ाई
सोवत प्रभुहि निहारि निषादा * भयउ प्रेमवश हृदय विषादा
तनु पुलकित लोचन जल बहई * वचन सप्रेम लषणसन कहई
भूपति भवन सुसहज सुहावा * सुरपति सदन न पटतर आवा
मणिमय रचित चारु चौबारे * जनु रतिपति निजहाथ सँवारे
दो० शुचि सुविचित्र सुभोगमय, सुमनसुगन्ध सुवास ।
पलँग मञ्जु मणिदीप जहँ, सबविधिसकलसुपास ॥
विविध वसन उपधान तुराई * क्षीरफेन मृदु विशद सुहाई
तहँ सियरामशयन निशि करहीं * निजछवि रति मनोजमदहरहीं
ते सियराम साथरी सोये * श्रमितवसन बिन जाहिं न जोये
मातु पिता परिजन पुरवासी * सखा सुशील दास अरु दासी
जुगवहिं जिनहिं प्राणकी नाईं * महि सोवत सो राम गुसाईं
पिता जनक जगविदित प्रभाऊ * ससुर सुरेश सखा रघुराऊ
रामचन्द्र पति सो वैदेही * महि सोवत विधि वाम न केही
सिय रघुवीर कि कानन योगू * कर्म प्रधान सत्य कह लोगू
दो० केकयनन्दिनि मन्दमति, कठिन कुटिल पण कीन्ह ।
जै रघुनन्दन जानकिहि, सुख अवसर दुख दीन्ह ॥
भइ दिनकर कुल विटप कुठारी * कुमति कीन्ह अब विश्वदुखारी
राम सीय महि शयन निहारी * भयउ विषाद निषादहि भारी
बोले लषण मधुर मृदुबानी * ज्ञान विराग भक्ति रससानी
कोउ न काहु दुखसुखकर दाता * निजकृत कर्म भोग सब भ्राता
योग वियोग भोग भल मन्दा * हितअनहित मध्यम भ्रमफन्दा
जन्म मरण जहँलगि जगजालू * सम्पति विपति कर्म अरु कालू
धरणि धाम धन पुर परिवारू * स्वर्ग नरक जहँ लगि व्यवहारू
देखिय सुनिय गुनिय मनमाहीं * मोह मूल परमारथ नाहीं
दो० सपने होहि भिखारि नृप, रङ्क नाकपति होइ ।
जाके लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपञ्च जिय जोइ ॥

अस विचारि नहिं कीजिय रोषू * बादि काहु नहिं दीजिय दोषू
मोह निशा सब सोवनहारा * देखहिं स्वप्न अनेक प्रकारा
इहि जग यामिनि जागहिं योगी * परमारथ परपञ्च वियोगी
जानिय तबहिं जीव जग जागा * जब सब विषयविलास विरागा
होइ विवेक मोह भ्रम भागा * तब रघुवीर चरण अनुरागा
सखा परम परमारथ एहू * मन क्रम वचन रामपद नेहू
राम ब्रह्म परमारथ रूपा * अविगत अलख अनादि अनूपा

दो० भक्त भूमि भूसुर सुरभि, सुरहित लागि कृपाल ।
करतचरित धरि मनुजतनु, सुनत मिटै जगजाल ॥

सखा समुझि अस परिहरि मोहू * सिय रघुवीर चरण रत होहू
कहत रामगुण भा भिनुसारा * जागे जग मङ्गल दातारा
सकल शौच करि राम अन्हाये * शुचि सुजान वटक्षीर मँगाये
अनुज सहित शिरजटा बनाये * देखि सुमन्त्र नयन जल छाये
हृदय दाह अति वदन मलीना * कह कर जोरि वचन अतिदीना
नाथ कहेउ अस कोशलनाथा * लै रथ जाहु रामके साथा
वन दिखाइ सुरसरि अन्हवाई * आनेहु वेगि फेरि दोउ भाई
लषण राम सिय आनेहु फेरी * संशय सकल सकोच निवेरी

दो० नृप अस कहेउ गुसाइँ जस, कहिय करौं बलि सोइ ।
करि बिनती पायँन परेउ, दीन बाल जिमि रोइ ॥

तात कृपा करि कीजिय सोई * जाते अवध अनाथ न होई
मन्त्रिहि राम उठाय प्रबोधा * तात धर्ममगु तुम सब शोधा
शिबि दधीचि हरिचन्द्र नरेशा * सहे धर्महित कोटि कलेशा
रन्तिदेव बलि भूप सुजाना * धर्म धरेउ सहि संकट नाना
धर्म न दूसर सत्य समाना * आगम निगम पुराण बखाना
मैं सोइ धर्म सुलभ करि पावा * तजे सो तिहुँपुर अपयश छावा
सम्भावित कहँ अपयश लाहू * मरण कोटि सम दारुण दाहू
तुमसन तात बहुत का कहऊँ * दिये उतर फिरि पातक लहऊँ

दो० पितुपद गहि कहि कोटि विधि, विनय करब कर जोरि ।
चिन्ता कवनिहुँ बातकी, तात करिय जनि मोरि ॥

तुम पुनि पितु समान हित मोरे * विनती करौं तात कर जोरे
सबविधि सोइ करतव्य तुम्हारे * दुख न पाव नृप शोच हमारे
सुनि रघुनाथ सचिव संवादू * भयउ सपरिजन बिकल निषादू

पुनि कछु लषण कहेउ कटु बानी * प्रभु बरजेउ बड़ अनुचितजानी
सकुचि राम निज शपथ दिवाई * लषण सँदेश कहब जनि जाई
कह सुमन्त्र पुनि भूप सँदेशू * सहि न सकहिं सिय विपिनकलेशू
जेहिविधि अवधआव फिरिसीया * सोइ रघुनाथ तुमहिं करणीया
नतरु निपट अवलम्ब विहीना * मैं न जियब जिमि जलबिनु मीना

दो० मैके ससुरे सकल सुख, जबहिं जहां मनमान ।
तब तहँ रहब सुखेन सिय, जबलगि विपतिविहान ॥

विनती कीन्ह भूप जेहिभांती * आरति प्रीति न सो कहिजाती
पितु सँदेश सुनि कृपानिधाना * सियहिंदीन्हशिष कोटि विधाना
सासु श्वशुर गुरु प्रिय परिवारू * फिरहु तो सबकर मिटै खभारू
सुनि पतिवचन कहति वैदेही * सुनहु प्राणपति परम सनेही
प्रभु करुणामय परम विवेकी * तनुतजिछाहँ रहत किमि छेकी
प्रभा जाइ कहँ भानु विहाई * कहँ चन्द्रिका चन्द्र तजि जाई
पतिहि प्रेममय विनय सुनाई * कहत सचिवसन गिरा सुहाई
तुम पितु श्वशुरसरिस हितकारी * उतरु देउँ फिरि अनुचित भारी

दो० आरतवश सम्मुख भइउँ, बिलग न मानब तात ।
आरयसुत पदकमल बिनु, बादि जहां लगि नात ॥

पितुहि विभव विलास मैं दीठा * नृपमणिमुकुट मिलत पदपीठा
सुखनिधान अस पितुगृह मोरे * पतिविहीन मन भाव न भोरे
श्वशुर चक्रवै कोशल राऊ * भुवन चारिदश प्रकट प्रभाऊ
आगे है जेहि सुरपति लेई * अर्ध सिंहासन आसन देई
श्वशुर एतादृश अवध निवासू * प्रिय परिवार मातु सम सासू
बिनु रघुपति पद पद्म परागा * मोहिं कोउ सपनेहु सुखद न लागा
अगम पन्थ वन भूमि पहारा * करि केहरि सर सरित अपारा
कोल किरात कुरङ्ग विहङ्गा * मोहिं सब सुखद प्राणपतिसङ्गा

दो० सासु श्वशुर सन मोरिहुति, विनय करब परि पाय ।
मोर शोच जनि करिय कछु, मैं वन सुखी सुभाय ॥

प्राणनाथ प्रिय देवर साथा * वीर धुरीण धरे धनु भाथा
नहिं मगश्रम भ्रम दुख मन मोरे * मोहिं लगि शोच करिय जनि भोरे
सुनि सुमन्त्र सिय शीतलबानी * भये विकल जनु फणि मणिहानी
नयन न सूझ सुनै नहिं काना * कहि न सकै कछु अति अकुलाना
राम प्रबोध कीन्ह बहु भांती * तदपि होइ नहिं शीतल छाती

यतन अनेक साथ हित कीन्हा * उचित उतर रघुनन्दन दीन्हा
मेटि जाय नहिं राम रजाई * कठिन कर्मगति कछु न बसाई
राम लषण सिय पद शिर नाई * फिरेउ वणिक जिमि मूर गँवाई
दो० रथ हांके हय राम तन, हेरि हेरि हिहिनाहिं ।
देखि निषाद विषादवश, शिर धुनि धुनि पछिताहिं ॥
जासु वियोग विकल पशु ऐसे * प्रजा मातु पितु जीवहिं कैसे
बरबस राम सुमन्त्र पठाये * सुरसरि तीर आपु चलि आये
मांगी नाव न केवट आना * कहै तुम्हार मरम मैं जाना
चरणकमलरज कहँ सब कहई * मानुषकरणि मूरि कछु अहई
छुवत शिला भइ नारि सुहाई * पाहन ते न काठ कठिनाई
तरणिउँ मुनिघरणी होइजाई * बाट परे मोरि नाव उड़ाई
यह प्रतिपालै सब परिवारू * नहिं जानौं कछु और कबारू
जो प्रभु अवशि पार गा चहहू * तौ पदपद्म पखारन कहहू
छं० पदपद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं ।
मोहिं राम राउरि आनि दशरथ शपथ सब सांची कहौं ॥
बरु तीर मारहिं लषण पै जबलगि न पाँव पखारिहौं ।
तबलगि न तुलसीदास नाथ कृपालु पार उतारिहौं ॥
सो० सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे ।
बिहँसे करुणा ऐन, चितै जानकी लषणतन ॥
कृपासिन्धु बोले मुसुकाई * सोइ करहु जेहि नाव न जाई
वेगि आनि जल पांव पखारू * होत विलम्ब उतारहु पारू
जासु नाम सुमिरत यकबारा * उतरहिं नर भवसिन्धु अपारा
सो कृपालु केवटहि निहोरा * जे किय जग तिहुँपगते थोरा
पदनख निरखि देवसरि हरषी * सुनि प्रभुवचन मोहमतिकर्षी
केवट राम रजायसु पावा * पानि कठवता भरि लै आवा
अति आनन्द उमँगि अनुरागा * चरणसरोज पखारन लागा
वर्षि सुमन सुर सकल सिहाहीं * इहिसम पुण्यपुञ्ज कोउ नाहीं
दो० पदपखारि जलपान करि, आपु सहित परिवार ।
पितरपारकरि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लै पार ॥
उतरि ठाढ़भये सुरसरि रेता * सीय राम गुह लषण समेता
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा * प्रभुसकुचे कछु यहि नहिं दीन्हा
पियहियकी सिय जाननहारी * मणिमुँदरी मन मुदित उतारी

कहेउ कृपालु लेहु उतराई * केवट चरण गहेउ अकुलाई
नाथ आजु हम काह न पावा * मिटे दोष दुख दारिद दावा
अमितकाल मैं कीन्ह मँजूरी * आजु दीन्ह विधि सब भरिपूरी
अब कछु नाथ न चाहिय मोरे * दीन दयालु अनुग्रह तोरे
फिरति बार जो कछु मोहिं देबा * सो प्रसाद मैं शिर धरि लेबा
दो० बहुत कीन्ह हठ लषण प्रभु, नहिं कछु केवट लेइ ।
बिदा कीन्ह करुणायतन, भक्ति विमल वर देइ ॥
तब मज्जन करि रघुकुलनाथा * पूजि पारथी नायउ माथा
सिय सुरसरिहि कहा कर जोरी * मातु मनोरथ पुरवहु मोरी
पति देवर सँग कुशल बहोरी * आइ करौं जेहि पूजा तोरी
सुनि सिय विनय प्रेमरससानी * भइ तब विमल वारि वरबानी
सुनु रघुवीर प्रिया वैदेही * तव प्रभाव जगविदित न केही
लोकप होहिं विलोकत तोरे * तोहिं सेवहिं सब सिधि कर जोरे
तुम जो हमहिं बड़ि विनय सुनाई * कृपाकीन्ह मोहिं दीन्ह बड़ाई
तदपि देवि मैं देब अशीशा * सफल होनहित निजवागीशा
दो० प्राणनाथ देवर सहित, कुशल कोशला आय ।
पूरिहि सब मन कामना, सुयश रहिहि जग छाय ॥
गङ्ग बचन सुनि मङ्गल मूला * मुदित सीय सुरसरि अनुकूला
तब प्रभु गुहहिं कहा घर जाहू * सुनत सूख मुख भा उरदाहू
दीन वचन गुह कह कर जोरी * विनय सुनिय रघुकुलमणि मोरी
नाथ साथ रहि पन्थ दिखाई * करि दिनचारि चरण सेवकाई
जेहि वन जाइ रहब रघुराई * पर्णकुटी मैं करब सुहाई
तब मोकहँ जस देब रजाई * सो करिहौं रघुवीर दुहाई
सहज सनेह राम लखि तासू * संग लीन्ह गुह हृदय हुलासू
पुनि गुहज्ञाति बोलि सब लीन्हें * करि परितोष बिदा सब कीन्हें
दो० तब गणपति शिव सुमिरि प्रभु, नाइ सुरसरिहि माथ ।
सखा अनुज सियसहित वन, गमन कीन्ह रघुनाथ ॥
तेहि दिन भयउ विटपतर वासू * लषण सखा सब कीन्ह सुपासू
प्रात प्रातकृत करि रघुराई * तीरथराज दीख प्रभु जाई
सचिव सत्य श्रद्धा प्रिय नारी * माधव सरिस मीत हितकारी
चारि पदारथ भरा भँडारू * पुण्य प्रदेश देश अतिचारू
क्षेत्र अगम गढ़ गाढ़ सुहावा * सपनेहु जिन्ह प्रतिपक्ष न पावा

सेन सकल तीरथवर बीरा * कलुष अनीक दलन रणधीरा
संगम सिंहासन सुठि सोहा * छत्र अक्षयवट मुनिमन मोहा
चमर यमुनजल गङ्ग तरङ्गा * देखि होहिं दुख दारिद भङ्गा
दो० सेवहिं सुकृती साधु शुचि, पावहिं सब मनकाम ।
वन्दी वेद पुराणगण, कहहिं विमल गुणग्राम ॥
को कहिसकै प्रयाग प्रभाऊ * कलुष पुञ्ज कुञ्जर मृगराऊ
अस तीरथपति देखि सुहावा * सुखसागर रघुवर सुख पावा
कहि सियअनुजहिसखहि सुनाई * श्रीमुख तीरथराज बड़ाई
करि प्रणाम देखत घन बागा * कहत महातम अतिअनुरागा
इहिविधि आइ बिलोकेउ बेनी * सुमिरत सकल सुमङ्गल देनी
मुदित अन्हाइ कीन्ह शिवसेवा * पूजि यथाविधि तीरथदेवा
तब प्रभु भरद्वाज पहँ आये * करत दण्डवत मुनि उर लाये
मुनिमन मोद न कछु कहिजाई * ब्रह्मानन्द राशि जनु पाई
दो० दीन्ह अशीश मुनीश उर, अति आनँद अस जानि ।
लोचन गोचर सुकृतफल, मनहुँ किये विधि आनि ॥
कुशल प्रश्न करि आसन दीन्हा * पूजि प्रेम परिपूरण कीन्हा
कन्द मूल फल अंकुर नीके * दिये आनि मुनि मनहुँ अमीके
सीय लषण जनसहित सुहाये * अतिरुचि राम मूल फल खाये
भये विगत श्रम राम सुखारे * भरद्वाज मृदु वचन उचारे
आजु सुफल तप तीरथ यागू * आजु सुफल जप योग विरागू
सुफल सकल शुभसाधन साजू * राम तुमहिं अवलोकत आजू
लाभ अवधि सुखअवधि न दूजी * तुम्हरे दरश आश सब पूजी
अब करि कृपा देव वर देहू * निजपदसरासिज सहजसनेहू
दो० कर्म वचन मन छांड़ि छल, जबलगि जन न तुम्हार ।
तबलगि सुख सपनेहुँ नहीं, किये कोटि उपचार ॥
सुनि मुनिवचन राम सकुचाने * भाव भक्ति आनन्द अघाने
तब रघुवर मुनि सुयश सुहावा * कोटिभांति कहि सबहि सुनावा
सो बड़ सो सब गुणगण गेहू * जेहि मुनीश तुम आदर देहू
मुनि रघुबीर परस्पर नवहीं * वचन अगोचर सुख अनुभवहीं
यह सुधि पाइ प्रयाग निवासी * बटु तापस मुनि सिद्ध उदासी
भरद्वाज आश्रम सब आये * देखन दशरथ सुवन सुहाये
राम प्रणाम कीन्ह सबकाहू * मुदित भये लहि लोचनलाहू

देहिं अशीश परम सुख पाई * फिरे सराहत सुन्दरताई
दो० राम कीन्ह विश्राम निशि, प्रात प्रयाग अन्हाइ ।
चले सहित सिय लषणजन, मुदित मुनिहिं शिरनाइ॥
राम सप्रेम कह्यो मुनि पाहीं * नाथ कहहु हम किहिमगु जाहीं
सुनिमुनि बिहँसि रामसन कहहीं * सुगम सकल मगुतुमकहँअहहीं
साथलागि मुनि शिष्य बुलाये * सुनि मन मुदित पचासक आये
सबहि रामपद प्रेम अपारा * सबहि कहहिं मगु दीख हमारा
मुनि बटु चारि संग तब दीन्हे * जिनबहु जन्म सुकृत बड़कीन्हे
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई * प्रमुदित हृदय चले रघुराई
ग्राम निकट जब निसरहिं जाई * देखहिं दरश नारि नर धाई
होहिं सनाथ जन्म फल पाई * फिरहिं दुखित मन संग पठाई
दो० विदा कीन्ह बटु विनयकरि, फिरे पाइ मनकाम ।
उतरि नहाये यमुनजल, जो शरीर सम श्याम ॥
सुनत तीरवासी नर नारी * धाये निज निज काज बिसारी
लषण राम सिय सुन्दरताई * देखि करहिं निज भाग्य बड़ाई
अति लालसा सबहिं मनमाहीं * नाम ग्राम पूछत सकुचाहीं
जे तिनमहँ वय वृद्ध सयाने * तिन करि युक्ति राम पहिचाने
सकलकथा कहि तिनहिं सुनाई * वनहिं चले पितु आयसु पाई
सुनि सविषाद सकल पछिताहीं * रानी राय कीन्ह भल नाहीं
राम लषण सिय रूप निहारी * शोच सनेह विकल नर नारी
ते पितु मातु कहौ सखि कैसे * जिन पठये वन बालक ऐसे
दो० तब रघुवीर अनेकविधि, सबहि सिखावन दीन्ह ।
राम रजायसु शीशधरि, गवन भवन तिन कीन्ह ॥
पुनि सिय राम लषण कर जोरी * यमुनहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी
गवने सीय सहित दोउ भाई * रवितनया कर करत बड़ाई
पथिक अनेक मिलहिं मगुजाता * कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता
राज लक्षण सब अङ्ग तुम्हारे * देखि शोच हिय होत हमारे
मारग चलहु पयादेहि पाये * ज्योतिष झूठ हमारेहि भाये
अगम पन्थ गिरि कानन भारी * तेहिमहँ साथ नारि सुकुमारी
करि केहरि वन जाहिं न जोई * हम सँग चलहिं जो आयसु होई
जाव जहांलगि तहँ पहुँचाई * फिरब बहोरि तुमहिं शिरनाई
दो० इहि विधि बूझहिं प्रेमवश, पुलक गात जलनैन ।

कृपासिन्धु फेरहिं तिनहिं, करि विनती मृदु बैन ॥
जे पुर ग्राम बसहिं मगु माहीं * तिनहिं नागसुरनगर सिहाहीं
केहि सुकृती केहि घरी बसाये * धन्य पुण्यमय परम सुहाये
जहँ जहँ रामचरण चलिजाहीं * तेहिसमान अमरावति नाहीं
पुण्यपुञ्ज मगु निकट निवासी * तिनहिं सराहहिं सुरपुरवासी
जो भरि नयन विलोकहिं रामहिं * सीतालषण सहित घनश्यामहिं
जेहि सर सरित राम अवगाहहिं * तिनहिं देवसरसरित सराहहिं
जेहि तरुतर प्रभु बैठहिं जाई * करहिं कल्पतरु तासु बड़ाई
परसि राम पद पद्मपरागा * मानति भूरि भूमि निजभागा
दो० छांह करहिं वन विबुधगण, वरषहिं सुमन सिहाहिं।
देखत गिरि वन विहग मृग, राम चले मगुजाहिं ॥
सीता लषण सहित रघुराई * गांवनिकट जब निसरहिं जाई
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी * चलहिं तुरत गृहकाज विसारी
राम लषण सिय रूप निहारी * पाइ नयनफल होहिं सुखारी
सजल नयन अति पुलक शरीरा * सब भये मगन देखि दोउ वीरा
वरणि न जाइ दशा तिनकेरी * लही रङ्क जनु सुरमणिढेरी
एकहिं एक बोलि सिख देहीं * लोचनलाहु लेहु क्षण येहीं
रामहिं देखि एक अनुरागे * चितवत चले जात सँग लागे
एक नयन मगु छवि उर आनी * होहिं शिथिल तन मानसबानी
दो० एक देखि वटछांह भलि, डासि मृदुल तृणपात।
कहहिं गँवाइय क्षणक श्रम, गवनव अबहिं कि प्रात ॥
एक कलश भरि आनहिं पानी * अँचइय नाथ कहहिं मृदुबानी
सुनि प्रियवचन प्रीति अति देखी * रामकृपालु सुशील विशेखी
जानी सीय श्रमित मन माहीं * घरिक विलम्ब कीन्ह वटछाहीं
मुदित नारि नर देखहिं शोभा * रूप अनूप देखि मन लोभा
इकटक सब जोवहिं चहुँओरा * रामचन्द्र मुखचन्द्र चकोरा
तरुण तमाल वरण तन सोहा * देखत काम कोटि मन मोहा
दामिनि वरण लषण सुठि नीके * नखसिख सुभग भावते जीके
मुनिपट कठिन कसे तूणीरा * सोहत करकमलन धनु तीरा
दो० जटामुकुट शीशन सुभग, उर भुज नयन विशाल।
शरदपर्व विधुवदन वर, लसत स्वेदकण जाल ॥
वरणि न जाइ मनोहर जोरी * शोभा अमित मोरि मति थोरी

राम लषण सिय सुन्दरताई * सब चितवहिं मन बुधि चितलाई
थके नारि नर प्रेम पियासे * मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं * पूछत अतिसनेह सकुचाहीं
बार बार सब लागहिं पाये * कहहिं वचन मृदुसरल सुहाये
राजकुमारि विनय हम करहीं * तियसुभाव कछु पूछत डरहीं
स्वामिनि अविनय क्षमव हमारी * विलग न मानब जानि गँवारी
राजकुँवर दोउ सहज सलोने * इनते लहि द्युति मरकत सोने

दो० श्यामल गौर किशोर वर, सुन्दर सुषमा ऐन ।
शरद शर्वरी नाथ मुख, शरद सरोरुह नैन ॥

कोटि मनोज लजावनहारे * सुमुखि कहहु को अहहिं तुम्हारे
सुनि सनेहमय मञ्जुल वानी * सकुचि सीय मनमहँ मुसुकानी
तिनहिं विलोकिविलोकेउधरणी * दुहुँसकोच सकुचति वरवरणी
सकुचि सप्रेम बाल मृगनयनी * बोली मधुरवचन पिकबयनी
सहज सुभाव सुभग तन गोरे * नाम लषण लघु देवर मोरे
श्यामवरण विशाल भुज नयना * अतिसुन्दर बोलनि मृदुबयना
बहुरि वदन विधु अञ्चल ढांकी * पियतन चितै दृष्टि करि बांकी
खञ्जन मञ्जु तिरीक्षण नयनी * निजपति कह्यो तिनहिं पिय सयनी
भईं मुदित सब ग्रामवधूटी * रङ्कन रतन राशि जनु लूटी

दो० अतिसप्रेम सियपांय परि, बहुविधि देहिं अशीश ।
सदा सुहागिनि रहहु तुम, जबलागि महि अहिशीश ॥

पारवती सम पति प्रिय होहू * देवि न हमपर छांड़ब छोहू
पुनि पुनि विनय कराहिं कर जोरी * जो यहि मारग फिरिय बहोरी
दरशन देब जानि निज दासी * लखी सीय सब प्रेम पियासी
मधुरवचन कहि कहि परितोषी * जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी
तबहिं लषण रघुवर रुख जानी * पूछेउ मगु लोगन मृदुबानी
सुनत नारि नर भये दुखारी * पुलकित अङ्ग विलोचन वारी
मिटा मोद मन भये मलीने * विधि निधि दीन्ह लीन्ह जनु छीने
समुझि कर्म गति धीरज कीन्हा * शोधि सुगममगु तिन कहि दीन्हा

दो० लषण जानकी सहितवन, गमन कीन्ह रघुनाथ ।
फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिये लाइ मन साथ ॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं * दैवहि दोष देहिं मनमाहीं
सहित विषाद परस्पर कहहीं * विधि करतब सब उलटे अहहीं

निपट निरंकुश निठुर निशंकू * जेहिं शशि कीन्ह सरुज सकलंकू
रूख कल्पतरु सागर खारा * तेहिं पठये वन राजकुमारा
जोपै इनहिं दीन्ह वनवासू * कीन्ह बादि विधि भोग विलासू
ये विचरहिं मगु विनु पदत्राना * रचे बादि विधि वाहन नाना
ये महि परहिं डासि कुश पाता * सुभग सेज कत कीन्ह विधाता
तरुतर वास इनहिं विधि दीन्हा * धवल धाम रचि कत श्रम कीन्हा

दो० जो ये मुनि पटधर जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार ।
विविध भांति भूषण बसन, बादि किये करतार ॥

जो ये कन्द मूल फल खाहीं * बादि सुधादि अशन जगमाहीं
एक कहहिं यह सहज सुहाये * आपु प्रकट भे विधि न बनाये
जहँलगि वेद कहेउ विधि करणी * श्रवण नयन मन गोचर वरणी
देखहु खोजि भुवन दशचारी * कहँ अस पुरुष कहां असि नारी
इनहिं देखि विधि मन अनुरागा * पटुतर योग बनावन लागा
कीन्ह बहुत श्रम एक न आये * तेहि इरषा वन आनि दुराये
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं * आपुहि परमधन्य करि मानहिं
ते पुनि पुण्यपुञ्ज हम लेखे * जे देखहिं देखिहैं जिन देखे

दो० इहिविधि कहिकहि वचनप्रिय, लेहिं नयन भरिनीर ।
किमि चलिहैं मारग अगम, सुठि सुकुमार शरीर ॥

नारि सनेह विकल सब होहीं * चकई सांझसमय जिमिसोहीं
मृदु पदकमल कठिन मग जानी * गहवरि हृदय कहहिं मृदुवानी
परसत मृदुल चरण अरुणारे * सकुचति महिजिमि हृदय हमारे
जो जगदीश इनहिं वन दीन्हा * कस न सुमनमय मारग कीन्हा
जो मांगे पाइय विधि पाहीं * राखिय सखि इन आंखिन माहीं
जे नर नारि न अवसर आये * ते सियराम न देखन पाये
सुनि स्वरूप पूछहिं अकुलाई * अबलगि गये कहांलगि भाई
समरथ धाइ विलोकहिं जाई * प्रमुदित फिरहिं नयन फल पाई

दो० अवला बालक वृद्धजन, कर मींजहिं पछिताहिं ।
होहिं प्रेमवश लोग इमि, राम जहां जहँ जाहिं ॥

गांव गांव अस होहिं अनन्दा * देखि भानुकुल कैरवचन्दा
जे कछु समाचार सुनि पावहिं * ते नृप रानिहि दोष लगावहिं
कहहिं एक अतिभल नरनाहू * दीन्ह हमहिं जिन लोचन लाहू
कहहिं परस्पर लोग लुगाई * बातैं सरल सनेह सुहाई

ते पितु मातु धन्य जे पाये * धन्य सो नगर जहांते आये
धन्य सो शैल देश वन गाऊं * जहँ जहँ जाहिं धन्य सो ठाऊं
सुख पायो विरञ्चि रचि तेही * ये जिनके सब भांति सनेही
राम लषण सिय कथा सुहाई * रही सकल मग कानन छाई
दो० इहिविधि रघुकुल कमल रवि, मग लोगन सुख देत ।
जाहिं चले देखत विपिन, सिय सौमित्रि समेत ॥
आगे राम लषण पुनि पाछे * तापस वेष विराजत आछे
उभय मध्य सिय शोभित कैसी * ब्रह्म जीव बिच माया जैसी
बहुरि कहौं छवि जसमन बसई * जनु मधु मदन मध्य रति लसई
उपमा बहुरि कहौं जिय जोही * जनु बुधविधु बिचरोहिणि सोही
प्रभु पदरेख बीच बिच सीता * धरहिं चरणमग चलहिं सभीता
सीय राम पद अङ्क बराये * लषण चलहिं मग दाहिनबांये
राम लषण सिय प्रीति सुहाई * वचन अगोचर किमि कहिजाई
खग मृग मगन देखि छवि होहीं * लिये चोर चित राम बटोहीं
दो० जिन जिन देखे पथिक प्रिय, सीय सहित दोउ भाइ ।
भव मग अगम अनन्दते, विनु श्रम रहे सिराइ ॥
अजहुँ जासु उर सपनेहु काऊ * बसहिं राम सिय लषण बटाऊ
राम धाम पथ जाइहि सोई * जो पथ पाव कबहुँ मुनि कोई
तब रघुवीर श्रमित सिय जानी * देखि निकट वट शीतल पानी
तहँ वसि कन्द मूल फल खाई * प्रात अन्हाय चले रघुराई
देखत वन सर शैल सुहाये * वालमीकि आश्रम प्रभु आये
राम देखि मुनि वास सुहावन * सुन्दर गिरि कानन जल पावन
सरन सरोज विटप वन फूले * गुञ्जत मञ्जु मधुप रस भूले
खग मृग विपुल कुलाहल करहीं * रहित वैर प्रमुदितमन चरहीं
दो० शुचि सुन्दर आश्रम निरखि, हरषे राजिव नैन ।
सुनि रघुवर आगमन मुनि, आगे आये लैन ॥
मुनि कहँ राम दण्डवत कीन्हा * आशिरवाद विप्रवर दीन्हा
देखि राम छवि नयन जुड़ाने * करि सनमान आश्रमहिं आने
तब मुनि आसन दिये सुहाये * मुनिवर अतिथि प्राणप्रिय पाये
कन्द मूल फल मधुर मँगाये * सिय सौमित्रि राम फल खाये
वालमीकि मन आनँद भारी * मङ्गल मूरति नयन निहारी
तब करकमल जोरि रघुराई * बोले वचन श्रवण सुखदाई

रथ पहिंचानि विकल लखि घोरे * गरहिं गात जिमि आतप वोरे
नगर नारि नर व्याकुल कैसे * निघटत नीर मीनगण जैसे
दो० सचिव आगमन सुनत सब, विकल भई रनिवास ।
भवन भयङ्कर लाग तेहि, मानहुँ प्रेत निवास ॥
अति आरत सब पूछहिं रानी * उतर न आव विकल भइ बानी
सुनै न श्रवण नयन नहिं सूझा * कहहु कहां नृप जेहि तेहि बूझा
दासिन्ह दीख सचिव विकलाई * कौशल्या गृह गईं लिवाई
जाइ सुमन्त दीख कस राजा * अमिय रहित जनु चन्द्र विराजा
अशन न शयन विभूषण हीना * परेउ भूमितल निपट मलीना
लेइ उसास शोच इहि भांती * सुरपुरते जनु खस्यो ययाती
लेत शोच भरि क्षण क्षण छाती * जनु जरि पङ्ख परेउ सम्पाती
राम राम कह राम सनेही * पुनि कह राम लषण वैदेही
दो० देखि सचिव जय जीव कहि, कीन्हेसि दण्ड प्रणाम ।
सुनत उठे व्याकुल नृपति, कहु सुमन्त कहँ राम ॥
भूप सुमन्त लीन्ह उर लाई * बूड़त कछु अधार जनु पाई
सहित सनेह निकट बैठारी * पूछत राउ नयन भरि वारी
राम कुशल कहु सखा सनेही * कहँ रघुनाथ लषण वैदेही
आनेहु फेरि कि वनहिं सिधाये * सुनत सचिव लोचन जल छाये
शोक विकल पुनि पूछ नरेशू * कहु सिय राम लषण संदेशू
राम रूप गुण शील स्वभाऊ * सुमिरि सुमिरि उर शोचत राऊ
राज्य सुनाइ दीन बनवासू * सुनि मन भयउ न हरष हरासू
सो सुत बिछुरत गये न प्राना * को पापी जग मोहिं समाना
दो० सखा राम सिय लषण जहँ, तहां मोहिं पहुँचाउ ।
नाहित चाहत चलन अब, प्राण कहौं सति भाउ ॥
पुनि पुनि पूछत मन्त्रिहि राऊ * प्रीतम सुवन सँदेश सुनाऊ
सुनहु सखा सोइ करिय उपाऊ * राम लषण सिय वेगि दिखाऊ
सचिव धीरधरि कहि मृदुबानी * महाराज तुम पण्डित ज्ञानी
वीर सुधीर धुरन्धर देवा * साधु समाज सदा तुम सेवा
जन्म मरण सब दुख सुख भोगा * हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा
काल कर्मवश होहिं गुसाईं * बरबस राति दिवस की नाईं
सुख हर्षहिं जड़ दुख विलखाहीं * दोउसम धीर धरहिं मनमाहीं
धीरज धरहु विवेक विचारी * छांड़िय शोच सकलहितकारी

भये अयश अघ भाजन प्राना * कौन हेतु नहिं करत पयाना
अहह मन्दमति अवसर चूका * अजहुँ न हृदय होत दुइ टूका
मींजि हाथ शिर धुनि पछिताई * मनहुँ कृपण धनराशि गँवाई
बिरद बांधि वर वीर कहाई * चले समर जनु सुभट पराई
दो० विप्र विवेकी वेदविद, सम्मत साधु सुजाति।
जिमि धोखे मद पानकर, सचिव शोच तेहि भांति॥
जिमि कुलीनतिय साधु सयानी * पतिदेवता कर्म मन बानी
रहै कर्मवश परिहरि नाहू * सचिव हृदय तिमि दारुणदाहू
लोचन सजल दृष्टि भइ थोरी * सुनै न श्रवण विकलमति भोरी
सूखहिं अधर लागि मुहँलाटी * जिय न जाइ उर अवध कपाटी
विवरण भयउ न जाइ निहारी * मारेसि मनहुँ पिता महतारी
हानि गलानि विपुलमनव्यापी * यमपुरपन्थ शोच जिमि पापी
वचन न आव हृदय पछिताई * अवध काह मैं देखब जाई
रामरहित रथ देखिहि जोई * सकुचिहि मोहि विलोकत सोई
दो० धाइ पूछिहहिं मोहिं जब, विकल नगर नर नारि।
उतर देब मैं सबहिं तब, हृदय वज्र बैठारि॥
पुछिहहिं दीन दुखित सब माता * कहब काह मैं तिनहिं विधाता
पुछिहहिं जबहिं लषण महतारी * कहिहौं कौन सँदेश सुखारी
राम जननि जब आइहि धाई * सुमिरि बच्छ जिमि धेनु लवाई
पूछत उतर देब मैं तेही * गे वन राम लषण वैदेही
जेइ पूछिहि तेहि उत्तर देवा * जाइ अवध अब यह सुख लेवा
पूछहिं जबहिं राउ दुख दीना * जीवन जासु राम आधीना
देहौं उतर कवन मुहँलाई * आयउँ कुशल कुँवर पहुँचाई
सुनत लषण सिय राम सँदेशू * तृण इव तन परिहरब नरेशू
दो० हृदय न बिदरत पङ्क जिमि, बिछुरत प्रीतम नीर।
जानतहौं मोहिं दीन्हविधि, यह यातना शरीर॥
इहिविधि करत पन्थ पछितावा * तमसा तीर तुरत रथ आवा
बिदा किये करि विनय निषादू * फिरे पांय परि विकल विषादू
पैठत नगर सचिव सकुचाई * जनु मारेसि गुरु ब्राह्मण गाई
बैठि विटप तर दिवस गँवावा * सांझ समय तेइ अवसर आवा
अवध प्रवेश कीन्ह अँधियारे * पैठु भवन रथ राखि दुआरे
जिन्ह जिन्ह समाचार सुनिपाये * भूप द्वार रथ देखन आये

जब जब राम अवध सुधिकरहीं * तब तब वारि विलोचन भरहीं
सुमिरि मातु पितु परिजन भाई * भरत सनेह शील सेवकाई
कृपासिन्धु प्रभु होहिं दुखारी * धीरज धरहिं कुसमय विचारी
लखि सियलषणविकलह्वै जाहीं * जिमिपुरुषहि अनुसरपरिछाहीं
प्रियाबन्धुगति लखि रघुनन्दन * धीर कृपालु भक्त उर चन्दन
लगे कहन कछु कथा पुनीता * सुनि सुखलहहिंलषण अरु सीता

दो० राम लषण सीता सहित, सोहत पर्णनिकेत ।
जिमि वासव बस अमरपुर, शची जयन्त समेत ॥

जुगवहिं प्रभुसियअनुजहि कैसे * पलक विलोचन गोलक जैसे
सेवहिं लषण सीय रघुवीरहि * जिमि अविवेकी पुरुष शरीरहि
इहि विधि प्रभु वन बसहिं सुखारी * खग मृग सुर तापस हितकारी
कहेउँ राम वनगमन सुहावा * सुनहुसुमन्तअवध जिमि आवा
फिरेउ निषाद प्रभुहिं पहुँचाई * सचिवसहित रथ देखेउ आई
मन्त्री विकल विलोकि निषादू * कहि न सकहिं जस भयउ विषादू
राम राम सिय लषण पुकारी * परेउ धरणितल व्याकुलभारी
देखिदक्षिण दिशि हय हिहिनाहीं * जिमि बिनुपङ्ख विहग अकुलाहीं

दो० नहिं तृण चरहिं न पियहिं जल, मोचत लोचन वारि ।
व्याकुल भयउ निषादगण, रघुवर वाजि निहारि ॥

धरि धीरज तब कहहिं निषादू * अब सुमन्त परिहरहु विषादू
तुम पण्डित परमारथ ज्ञाता * धरहु धीर लखि वाम विधाता
विविध कथा कहि कहि मृदुबानी * रथ बैठारेउ बरबस आनी
शोकशिथिलरथ सकहि न हांकी * रघुवर विरह पीर उर बांकी
तरफराहिं मगु चलहिं न घोरे * वनमृग मनहुँ आनि रथ जोरे
अटकिपरहिं फिरि चितवहिं पीछे * राम वियोग विकल दुख तीछे
जो कह राम लषण वैदेही * हिकरि हिकरि हय हेरहिं तेही
वाजि विरहगतिकिमिकहि जाती * बिनुमणिफणी विकल जेहि भांती

दो० भये निषाद विषाद वश, देखत सचिव तुरङ्ग ।
बोलि सुसेवक चारि तब, दिये सारथी सङ्ग ॥

गुह सारथिहि फिरेउ पहुँचाई * विरह विषाद वरणि नहिं जाई
चले अवध लै रथहि निषादा * होतक्षणहिंक्षण मगन विषादा
शोच सुमन्त विकल दुख दीना * धिक जीवन रघुवीर विहीना
रहहि न अन्तहु अधम शरीरू * यश न लहेउ बिछुरत रघुवीरू

करि केहरि कपि कोल कुरङ्गा * विगत वैर विहरहिं यकसङ्गा
फिरत अहेर राम छवि देखी * होहिं मुदित मृगवृन्द विशेखी
विबुध विपिन जहँलग जगमाहीं * देखि राम वन सकल सिहाहीं
सुरसरि सरस्वति दिनकरकन्या * मेकलसुता गोदावरि धन्या
सब सर सिन्धु नदी नद नाना * मन्दाकिनिकर करहिं बखाना
उदय अस्त गिरि अरु कैलासू * मन्दर मेरु सकल सुरबासू
शैल हिमाचल आदिक जेते * चित्रकूट यश गावहिं तेते
विन्ध्य मुदितमन सुख न समाई * बिनु श्रम विपुल बड़ाई पाई
दो० चित्रकूट के विहग मृग, बेलि विटप तृण जाति ।
पुण्यपुञ्ज सब धन्य अस, कहहिं देव दिन राति ॥
नयनवन्त रघुपतिहि विलोकी * पाइ जन्मफल होहिं विशोकी
परसि चरणरज अचर सुखारी * भये परमपद के अधिकारी
सो वन शैल सुभाय सुहावन * मङ्गलमय अतिपावन पावन
महिमा कहौं कवनविधि तासू * सुखसागर जहँ कीन्ह निवासू
पय पयोधि तजि अवध विहाई * जहँ सिय राम लषण रहे आई
कहि न सकहिं सुखभाजसकानन * जो शतसहस होहिं सहसानन
सो मैं वरणि कहौं विधि केहीं * डाबर कमठ कि मन्दर लेहीं
सेवहिं लषण कर्म मन वानी * जाइ न शील सनेह बखानी
दो० क्षण क्षण सिय लखि रामपद, जानि आपुपर नेह ।
करत लषण सपने न चित, बन्धु मातु पितु गेह ॥
राम संग सिय रहहिं सुखारी * पुर परिजन गृह सुरति विसारी
क्षण क्षण पिय विधुवदन निहारी * प्रमुदित मनहुँ चकोर कुमारी
नाह नेह नित बढ़त विलोकी * हर्षित रहति दिवस जिमि कोकी
सियमन रामचरण अनुरागा * अवधसहससम वन प्रिय लागा
पर्णकुटी प्रिय पीतम संगा * प्रिय परिवार कुरंग विहंगा
सासुससुर सममुनितियमुनिवर * अशन अमिय समकन्द मूल फर
नाथ साथ साथरी सुहाई * मयन शयन शतसम सुखदाई
लोकप होहिं विलोकत जासू * तेहि किमि मोहै विषयविलासू
दो० सुमिरत रामहिं तजहिं जन, तृणसम विषयविलास ।
रामप्रिया जगजननि सिय, कछु न आचरज तास ॥
सीयलषण जेहिविधिसुखलहहीं * सोइ रघुनाथ करैं जोइ कहहीं
कहहिं पुरातन कथा कहानी * सुनहिं लषणसियअतिसुखमानी

दो० यथायोग सनमानि प्रभु, बिदा किये मुनिवृन्द ।
करहिं योग जप यज्ञ तप, निज आश्रमन स्वच्छन्द ॥
यह सुधि कोल्ह किरातन पाई * हरषे जनु नवनिधि घर आई
कन्द मूल फल भरि भरि दोना * चले रङ्क जनु लूटन सोना
तिन महँ जिन देखे दोउ भ्राता * और तिनहिं पूछहिं मगु जाता
कहत सुनत रघुवीर निकाई * आय सबन देखे रघुराई
करहिं जोहारि भेंट धरि आगे * प्रभुहि विलोकत अतिअनुरागे
चित्र लिखे जनु जहँ तहँ ठाढ़े * पुलक शरीर नयन जल बाढ़े
राम सनेह मगन सब जाने * कहि प्रियवचन सकलसनमाने
प्रभुहि जोहारि बहोरि बहोरी * वचन विनीत कहहिं कर जोरी
दो० अब हम नाथ सनाथ सब, भये देखि प्रभु पाय ।
भाग्य हमारे आगमन, राउर कोशलराय ॥
धन्य भूमि वन पन्थ पहारा * जहँ जहँ नाथ पांव तुम धारा
धन्य विहँग मृग काननचारी * सफल जन्म भे तुमहिं निहारी
हम सब धन्य सहित परिवारा * देखि नयनभरि दरश तुम्हारा
कीन्ह वास भल ठांव विचारी * इहां सकलऋतु रहब सुखारी
हम सब भांति करब सेवकाई * करि केहरि अहि बाघ बराई
वन बेहड़ गिरिकन्दर खोहा * सब हमार प्रभु पग पग जोहा
तहँ तहँ तुमहिं अहेर खेलाउब * सर निर्झर सब ठांव दिखाउब
हम सेवक परिवार समेता * नाथ न सकुचब आयसु देता
दो० वेद वचन मुनि मन अगम, ते प्रभु करुणाऐन ।
वचन किरातन के सुनत, जिमिपितुबालकबैन ॥
रामहिं केवल प्रेम पियारा * जानि लेहु जो जाननिहारा
राम सकल वनचर परितोषे * कहि मृदु वचन प्रेम परिपोषे
बिदा किये शिर नाय सिधाये * प्रभुगुण कहत सुनत घर आये
इहिविधि सीय सहित दोउ भाई * बसहिं विपिन सुरमुनिसुखदाई
जबते आइ रहे रघुनायक * तबते भो वन मङ्गलदायक
फूलहिं फलहिं विटप विधि नाना * मञ्जु ललित वरबेलि विताना
सुरतरु सरिस स्वभाव सुहाये * मनहुँ विबुध वन परिहरि आये
गुञ्जत मञ्जुल मधुकर श्रेनी * त्रिविध बयारि बहै सुख देनी
दो० नीलकण्ठ कलकण्ठ शुक, चातक चक्र चकोर ।
भांति भांति बोलहिं विहग, श्रवण सुखद चितचोर ॥

स्वर्ग नरक अपवर्ग समाना * जहँ तहँ दीख धरे धनुबाना
मन क्रम वचन जो राउर चेरा * राम करहु ताके उर डेरा
दो० जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुमसन सहज सनेह ।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह ॥
इहिविधि मुनिवर ठाम दिखाये * वचन सप्रेम राम मन भाये
कह मुनि सुनहु भानुकुलनायक * आश्रम कहौं समय सुखदायक
चित्रकूट गिरि करहु निवासू * तहँ तुम्हार सब भांति सुपासू
शैल सुहावन कानन चारू * करि केहरि मृग विहग विहारू
नदी पुनीत पुराण बखानी * अत्रितीय निज तप बल आनी
सुरसरिधार नाम मंदाकिनि * जो सब पातकपोतकडाकिनि
अत्रि आदि मुनिवर तहँ बसहीं * कराहिं योग जप तप तनु कसहीं
चलहु सफल श्रम सबकर करहू * राम देहु गौरव गिरिवरहू
दो० चित्रकूट महिमा अमित, कही महामुनि गाय ।
आइ अन्हाने सरितवर, सीयसहित दोउभाय ॥
रघुवर कहेउ लषण भल घाटू * करहु कतहुँ अब ठाहर ठाटू
लषण दीख तब उतर करारा * चहुँदिशि फिरेउ धनुषजिमिनारा
नदी पनच शर शम दम दाना * सकल कलुष कलिसाउजनाना
चित्रकूट जनु अचल अहेरी * चूक न घात मारु मुठभेरी
असकहि लषण ठाउँ दिखरावा * थल विलोकि रघुपति सुखपावा
रमेउ राम मन देवन जाना * चले सहित सुरपति परधाना
कोल्ह किरात वेष धरि आये * रच्यो परणतृण सदन सुहाये
बरणि न जाइँ मञ्जु दुइशाला * एक ललित लघु एक विशाला
दो० लषण जानकी सहित प्रभु, राजत पर्ण निकेत ।
सोह मदन मुनिवेष जनु, रति ऋतुराज समेत ॥
अमर नाग किन्नर दिगपाला * चित्रकूट आये तेहि काला
राम प्रणाम कीन्ह सब काहू * मुदित देव लहि लोचनलाहू
बरषि सुमन कह देव समाजू * नाथ सनाथ भये हम आजू
करि बिनती दुख दुसह सुनाये * हरषित निज निज गेह सिधाये
चित्रकूट रघुनन्दन छाये * समाचार सुनि सुनि मुनि आये
आवत देखि मुदित मुनिवृन्दा * कीन्ह दण्डवत रघुकुलचन्दा
मुनि रघुवरहि लाइ उर लेहीं * सुफल होन हित आशिष देहीं
सिय सौमित्रि राम छवि देखहिं * साधनसकल सुफलकरिलेखहिं

भरहिं निरन्तर होहिं न पूरे * तिनके हिये सदन तव रूरे
लोचन चातक जिन करि राखे * रहहिं दरश जलधर अभिलाखे
निदरहिं सिन्धु सरित सरवारी * रूप बिन्दु लहि होहिं सुखारी
तिनके हृदय सदन सुखदायक * बसहु लषण सियसह रघुनायक
दो० यश तुम्हार मानस विमल, हंसिनि जीहा जासु ।
मुक्ताहल गुणगण चुगहिं, बसहु राम हिय तासु ॥
प्रभु प्रसाद शुचि सुभग सुवासा * सादर जासु लहै नित नासा
तुमहिं निवेदित भोजन करहीं * प्रभु प्रसाद पट भूषण धरहीं
शीश नवहिं सुर गुरु द्विज देखी * प्रीति सहित करि विनय विशेखी
कर नित करहिं रामपद पूजा * राम भरोस हृदय नहिं दूजा
चरण राम तीरथ चलिजाहीं * राम बसहु तिनके मनमाहीं
मन्त्रराज नित जपहिं तुम्हारा * पूजहिं तुमहिं सहित परिवारा
तर्पण होम करहिं विधि नाना * विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना
तुमते अधिक गुरुहि जिय जानी * सकल भाव सेवहिं सनमानी
दो० सब कर मांगहिं एक फल, रामचरण रति होउ ।
तिनके मन मन्दिर बसहु, सिय रघुनन्दन दोउ ॥
काम क्रोध मद मान न मोहा * लोभ न क्षोभ न राग न द्रोहा
जिनके कपट दम्भ नहिं माया * तिनके हृदय बसहु रघुराया
सबके प्रिय सब के हितकारी * दुख सुख सरिस प्रशंसा गारी
कहहिं सत्य प्रियवचन विचारी * जागत सोवत शरण तुम्हारी
तुमहिं छांड़ि गति दूसरि नाहीं * राम बसहु तिनके उरमाहीं
जननी सम जानहिं पर नारी * धन पराय विष ते विष भारी
जे हरषहिं पर सम्पति देखी * दुखित होहिं पर विपति विशेखी
जिनहिं राम तुम प्राण पियारे * तिनके उर शुभ सदन तुम्हारे
दो० स्वामि सखा पितु मातु गुरु, जिनके सब तुम तात ।
तिनके मन मन्दिर बसहु, सीयसहित दोउ भ्रात ॥
अवगुण तजि सबके गुण गहहीं * विप्र धेनुहित संकट सहहीं
नीतिनिपुण जिनकी जग लीका * घर तुम्हार तिनके मन नीका
गुण तुम्हार समुझहिं निजदोसू * जेहि सब भांति तुम्हार भरोसू
रामभक्त प्रिय लागहिं जेही * तेहि उर बसहु सहित वैदेही
जाति पांति धन धर्म बड़ाई * प्रिय परिवार सदन समुदाई
सब तजि तुमहिं रहै लवलाई * ताके हृदय बसहु रघुराई

तुम त्रिकालदरशी मुनिनाथा ✻ विश्वबदर जिमि तुम्हरे हाथा
अस कहि सब प्रभु कथा बखानी ✻ जेहि जेहि भांति दीन्ह बन रानी
दो० तात वचन पुनि मातुमत, भाइ भरत अस राउ ।
मो कहँ दरश तुम्हार प्रभु, सब मम पुण्य प्रभाउ ॥
देखि पांय मुनिराय तुम्हारे ✻ भये सुकृत सब सफल हमारे
अब जहँ राउर आयसु होई ✻ मुनि उद्वेग न पावहिं कोई
मुनि तापस जिनते दुख लहहीं ✻ ते नरेश बिनु पावक दहहीं
मङ्गल मूल विप्र परितोषू ✻ दहै कोटि कुल भूसुर रोषू
अस जियजानि कहिय सो ठाऊं ✻ सियसौमित्रि सहित तहँ जाऊं
तहँ रचि रुचिर पर्ण तृणशाला ✻ बास करौं कछु काल कृपाला
सहज सरल सुनि रघुवर बानी ✻ साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी
कस न कहहु अस रघुकुलकेतू ✻ तुम पालक सन्तत श्रुति सेतू
छं० श्रुतिसेतु पालक राम तुम जगदीश माया जानकी ।
जो सृजति जग पालति हरति रुख पाइ कृपानिधानकी ॥
जो सहसशीश अहीश महि धरु लषण सचराचर धनी ।
सुरकाज धरि नरराजतन चले दलन खल निशिचरअनी ॥
सो० राम स्वरूप तुम्हार, वचन अगोचर बुद्धिवर ।
अविगतअकथअपार, नेतिनेति नित निगम कह ॥
जग पेखन तुम देखनहारे ✻ विधि हरि शम्भु नचावनहारे
तेउ न जानहिं मर्म तुम्हारा ✻ और तुमहिं को जाननहारा
सो जानै जेहि देहु जनाई ✻ जानत तुमहिं तुमहिं ह्वैजाई
तुम्हरी कृपा तुमहिं रघुनन्दन ✻ जानत भक्त भक्तिउरचन्दन
चिदानन्दमय देह तुम्हारी ✻ विगत विकार जान अधिकारी
नरतनु धरेहु सन्त सुरकाजा ✻ कहहु करहु जस प्राकृतराजा
राम देखि सुनि चरित तुम्हारे ✻ जड़ मोहहिं बुध होहिं सुखारे
तुम जो कहहु करहु सब सांचा ✻ जस काछिय तस चाहिय नाचा
दो० पूछेउ मोहिं कि रहौं कहँ, मैं कहतेउ सकुचाउँ ।
जहँ न होहु तहँ देहुँ कहि, तुमहिं दिखावौं ठाउँ ॥
सुनि मुनि वचन प्रेम रस साने ✻ सकुचि राम मनमहँ मुसुकाने
बालमीकि हँसि कहहिं बहोरी ✻ वाणी मधुर अमियरस बोरी
सुनहु राम अब कहौं निकेता ✻ बसहु जहाँ सिय लषण समेता
जिनके श्रवण समुद्र समाना ✻ कथा तुम्हारि [illegible]

दो० प्रथम वास तमसा भयउ, दूसर सुरसरि तीर ।
न्हायरहे जलपान करि, सिय समेत दोउ वीर ॥
केवट कीन्ह बहुत सेवकाई * सो यामिनि शृँगवेर गँवाई
होत प्रात वट क्षीर मँगावा * जटामुकुट निजशीश बनावा
राम सखा तब नाव मँगाई * प्रिया चढ़ाइ चले रघुराई
लषण धरे धनु बाण बनाई * आप चढ़े प्रभु आयसु पाई
विकल विलोकि मोहिं रघुवीरा * बोले मधुर वचन धरिधीरा
तात प्रणाम तात सन कहेऊ * बार बार पद पङ्कज गहेऊ
करब पायँ परि विनय बहोरी * तात करिय जनि चिन्ता मोरी
वन मग मङ्गल कुशल हमारे * कृपा अनुग्रह पुण्य तुम्हारे
छं० तुम्हरे अनुग्रह तात कानन जात सब सुख पाइहौं ।
प्रतिपालिआयसु कुशलदेखन पांय पुनि फिरि आइहौं ॥
जननी सकल परितोषकरि परिपांय करि बिनतीघनी ।
तुलसी करेहु सोइ यत्न जेहि विधि कुशलरह कोशलधनी ॥
सो० गुरुसन कहब सँदेश, बार बार पदपद्म गहि ।
करब सोई उपदेश, जेहि न शोच मोहिं अवधपति ॥
पुरजन परिजन सकल निहोरी * तात सुनायहु बिनती मोरी
सोइ सब भांति मोर हितकारी * जाते रह नरनाह सुखारी
कहब सँदेश भरत के आये * नीति न तजब राजपद पाये
पालहु प्रजहि कर्म मन बानी * सेयहु मातु सकल सम जानी
और निबाहब भायप भाई * करि पितु मातु सुजन सेवकाई
तात भांति तेहि राखब राऊ * शोच मोर जेहि करहिं न काऊ
लषण कहेउ कछु वचन कठोरा * बरजि राम पुनि मोहिं निहोरा
बार बार निज शपथ दिवाई * कहब न तात लषण लरिकाई
दो० कहि प्रणाम कछु कहन लिय, सिय भइ शिथिल सनेह ।
थकित वचन लोचन सजल, पुलक पल्लवित देह ॥
तेहि अवसर रघुवर रुख पाई * केवट पारहि नाव चलाई
रघुकुल तिलक चले इहिभांती * देखेउँ ठाढ़ कुलिश धरि छाती
मैं आपन किमि कहब कलेशू * जियत फिरेउँ लै रामसँदेशू
अस कहिसचिववचनरहिगयऊ * हानि गलानि शोचवश भयऊ
सुनत सुमन्त्र वचन नरनाहू * परेउ धरणि उर दारुण दाहू
तलफत विषम मोह मन मापा * मांजा मनहुँ मीनकहँ व्यापा

करि विलाप सब रोवहिं रानी * महाविपति किमि जाइ बखानी
सुनि विलाप दुखहू दुख लागा * धीरजहू कर धीरज भागा

दो० भयो कोलाहल अवध अति, सुनि नृप राउर शोर ।
विपुलविहग वन परेउ निशि, मानहुँ कुलिश कठोर ॥

प्राणकण्ठ गत भयउ भुआलू * मणिविहीन जिमि व्याकुलव्यालू
इन्द्रियसकल विकल भइँ भारी * जनु सर सरसिजवन बिनु वारी
कौशल्या नृप दीख मलीना * रविकुल रवि अथये जनु दीना
उर धरि धीर राम महतारी * बोली वचन समय अनुहारी
नाथ समुझि मन करिय विचारू * राम वियोग पयोधि अपारू
कर्णधार तुम अवधि जहाजू * चढ़उसकल पियबनिक समाजू
धीरज धरिय तो पाइय पारू * नाहित बूड़हि सब परिवारू
जो जिय धरिय विनय पिय मोरी * राम लषण सिय मिलब बहोरी

दो० प्रिया वचन मृदु सुनत नृप, चितयउ आंखि उघारि ।
तलफत मीन मलीनजनु, सींचत शीतल वारि ॥

धरि धीरज उठि बैठु भुआलू * कहु सुमन्त्र कहँ राम कृपालू
कहाँ लषण कहँ राम सनेही * कहँ प्रिय पुत्रवधू वैदेही
बिलपत राउ विकल बहुभांती * भइ युगसरिस सिराति न राती
तापस अन्ध शाप सुधि आई * कौशिल्यहि सब कथा सुनाई
भयउ विकल वरणत इतिहासा * रामरहित धिक जीवन श्वासा
सो तनु राखि करब मैं काहा * जेइ न प्रेमप्रण मोर निबाहा
हा रघुनन्दन प्राण पिरीते * तुम बिन जियत बहुत दिन बीते
हा जानकी लषण हा रघुवर * हा पितुहित चितचातकजलधर

दो० राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तनु परिहरिरघुवर विरह, राउ गये सुरधाम ॥

जियन मरण फल दशरथ पावा * अण्ड अनेक अमल यश छावा
जियत राम विधुवदन निहारी * राम विरह मरि मरण सँवारी
शोक विकल सब रोवहिं रानी * रूप शील बल तेज बखानी
करहिं विलाप अनेक प्रकारा * परहिं भूमितल बारहिं बारा
विलपहिं विकल दास अरु दासी * घर घर रुदन करहिं पुरवासी
अथयउ आजु भानुकुल भानू * धर्म अवधि गुणरूप निधानू
गारी सकल केकयिहि देहीं * नयनविहीन कीन्ह जगजेहीं
इहि विधि विलपत रैनि बितानी * आये सकल महामुनि ज्ञानी

दो० तब वशिष्ठ मुनि समयसम, कहि अनेक इतिहास ।
शोक निवारेउ सकलकर, निज विज्ञान प्रकास ॥
तेल नाव भरि नृप तनु राखा * दूत बुलाइ बहुरि अस भाखा
धावहु वेगि भरत पहँ जाहू * नृपसुधिकतहुँ कहहु जनि काहू
इतनै कहेउ भरत सन जाई * गुरु बुलाइ पठये दोउ भाई
सुनि मुनि आयसु धावन धाये * चले वेगि वरवाजि लजाये
अनरथ अवध अरम्भेउ जबते * कुशकुन होहिं भरतकहँ तबते
देखहिं राति भयानक सपना * जागि कराहिं बहु कोटि कलपना
विप्र जेंवाइ देहिं बहु दाना * शिव अभिषेक कराहिं विधि नाना
मांगहिं हृदय महेश मनाई * कुशल मातु पितु परिजन भाई
दो० इहिविधि शोचत भरत मन, धावन पहुँचे जाइ ।
गुरुअनुशासन श्रवण सुनि, चले गणेश मनाइ ॥
चले समीर वेग हय हांके * लांघत सरित शैल वन बांके
हृदय शोच बड़ कछु न सोहाई * अस जानहिं जिय जाउँ उड़ाई
एक निमेष वरष सम जाई * इहि विधि भरत नगर नियराई
अशकुन होहिं नगर पैठारा * रटहिं कुभांति कुखेत करारा
खर शृगाल बोलहिं प्रतिकूला * सुनिसुनि होहि भरतउरशूला
श्रीहत सर सरिता वन बागा * नगर विशेष भयावन लागा
खग मृग हय गज जाहिं न जोये * राम वियोग कुयोग विगोये
नगर नारि नर निपट दुखारी * मनहुँ सबनि सब सम्पतिहारी
दो० पुरजनमिलहिं न कहहिं कछु, गवहिं जोहारहिं जाहिं ।
भरत कुशल पूछि न सकहिं, भय विषाद मनमाहिं ॥
हाट बाट नहिं जाइ निहारी * जनु पुरदशदिशि लागिदवारी
आवत सुत सुनि केकयनन्दनि * हरषी रविकुल जलरुहचन्दनि
सजि आरती मुदित उठिधाई * द्वारहि भेंटि भवन लै आई
भरत दुखित परिवार निहारी * मानहुँ तुहिन वनजवन मारी
कैकेयी हर्षित इहिभांती * मनहुँ मुदित दवलाइ किराती
सुतहि सशोच देखि मन मारे * पूछति नैहर कुशल हमारे
सकल कुशल कह भरत सुनाई * पूछी निजकुल कुशल भलाई
कहु कहँ तात कहां सब माता * कहँ सिय राम लषण प्रियभ्राता
दो० सुनि सुतवचन सनेहमय, कपट नीर भरि नैन ।
भरत श्रवण मन शूलसम, पापिनि बोली बैन ॥

तात बात मैं सकल सँवारी * भइ मन्थरा सहाय विचारी
कछुकुकाज विधि बीच बिगारेउ * भूपति सुरपतिपुर पगु धारेउ
सुनत भरत भये विवश विषादा * जनु सहमेउ करि केहरिनादा
तात तात हा तात पुकारी * परेउ भूमितल व्याकुल भारी
चलत न देखन पायउँ तोहीं * तात न रामहिं सौंपेउ मोहीं
बहुरि धीर धरि उठे सँभारी * कहु पितुमरण हेतु महतारी
सुनि सुत वचन कहत कैकयी * मर्म पाछि जनु माहुर देयी
आदिहि ते सब आपनि करणी * कुटिल कठोर मुदितमन वरणी

दो० भरतहि बिसरेउ पितुमरण, सुनत राम वन गौन।
हेतु अपन पुनि जान जिय, थकित रहे धरि मौन॥

विकलविलोकिसुतहिसमुझावति * मनहुँ जरेपर लोन लगावति
तात राउ नहिं शोचन योगू * विढ़इ सुकृतयश कीन्हेउ भोगू
जीवत सकल जन्मफल पाये * अन्त अमरपतिसदन सिधाये
अस अनुमानि शोच परिहरहू * सहित समाज राज्यपुर करहू
सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारा * पाके क्षत जनु लाग अँगारा
धीरज धरि भरि लेहिं उसासा * पापिनि सबहिभांति कुलनासा
जो पै कुरुचि रही असि तोहीं * जन्मत काहे न मारेसि मोहीं
पेड़ काटि तैं पल्लव सींचा * मीन जियनहित वारि उलीचा

दो० हंस वंश दशरथ जनक, राम लषण से भाइ।
जननी तू जननी भई, विधिते कहा बसाइ॥

जबते कुमति कुमत मन ठयऊ * खण्ड खण्ड है हृदय न गयऊ
वर मांगत मन भइ नहिं पीरा * जरि न जीह मुँह परेउ न कीरा
भूप प्रतीति तोरि किमि कीन्ही * मरणकाल विधि मति हरि लीन्ही
विधिहु न नारिहृदय गति जानी * सकल कपट अघ अवगुण खानी
सरल सुशील धर्मरत राऊ * सो किमि जानहिं तीय स्वभाऊ
अस को जीव जन्तु जगमाहीं * जेहि रघुनाथ प्राण प्रिय नाहीं
भे अति अहित राम तेउ तोहीं * को तू अहसि सत्य कहु मोहीं
जो हसि सो हसि मुँह मसि लाई * आंखि ओट उठि बैठहि जाई

दो० राम विरोधी हृदय ते, प्रकट कीन्ह विधि मोहिं।
मो समान को पातकी, बादि कहौं कछु तोहिं॥

सुनि शत्रुघ्न मातु कुटिलाई * जरहिं गात रिस कछु न बसाई
तेहि अवसर कुबरी तहँ आई * वसन विभूषण विविध बनाई

लखि रिस भरेउ लषण लघुभाई * बरत अनल घृत आहुति पाई
हुमुकि लात तकि कूबर मारा * परिमुँहभरि महि करत पुकारा
कूबर टूटेउ फूट कपारू * दलितदशन मुख रुधिर प्रचारू
आहि दइय मैं काह नशावा * करत नीक फल अनइस पावा
पुनि रिपुहनलखिनखशिखखोंटी * लगे घसीटन धरि धरि झोंटी
भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई * कौशल्या पहँ गे दोउ भाई

दो० मलिनवसन विवरण विकल, कृशशरीर दुखभार ।
कनक कमल वर बेलिवन, मानहुँ हनी तुषार ॥

भरतहिं देखि मातु उठिधाई * मूर्च्छित अवनि परी झँवआई
देखत भरत विकल भये भारी * परे चरण तनुदशा बिसारी
मातु तात कहँ देहि दिखाई * कहँ सिय राम लषण दोउ भाई
केकयि कत जनमी जग मांझा * जो जनमी तौ भइ किन बांझा
कुल कलङ्क जेहिं जनमेउ मोहीं * अपयशभाजन प्रियजन द्रोही
को त्रिभुवन मोहिं सरिस अभागी * गतिअसि तोरि मातु जेहि लागी
पितु सुरपुर वन रघुकुलकेतू * मैं केवल सब अनरथ हेतू
धिक मोहिं भयउ वेणुवन आगी * दुसह दाह दुख दूषण भागी

दो० मातु भरतके वचन मृदु, सुनि पुनि उठी सँभारि ।
लिये उठाय लगाय उर, लोचन मोचति वारि ॥

सरल सुभाय माय उर लाये * अतिहित मनहुँ रामफिरि आये
भेंटेउ बहुरि लषण लघु भाई * शोक सनेह न हृदय समाई
देखि स्वभाव कहत सब कोई * राममातु अस काहे न होई
माता भरत गोद बैठारे * आंसु पोंछि मृदु वचन उचारे
अजहुँ बच्छ बलि धीरज धरहू * कुसमयसमुझि शोक परिहरहू
जनिमानहु जिय हानि गलानी * कालकर्मगति अघटित जानी
काहुहि दोष देहु जनि ताता * भा मोहिं सबविधि वामविधाता
जो ऐसेहु दुख मोहिं जियावा * अजहुँ को जानै का तेहि भावा

दो० पितु आयसु भूषण वसन, तात तजे रघुवीर ।
विस्मय हर्ष न हृदय कछु, पहिरे वल्कल चीर ॥

मुख प्रसन्न मन राग न रोषू * सबकर सब विधि करि परितोषू
चले विपिन सुनिसियसँगलागी * रही न राम चरण अनुरागी
सुनतहि लषण चले लगिसाथा * रहे न यतन किये रघुनाथा
तब रघुपति सबही शिर नाई * चले संग सिय अरु लघु भाई

राम लषण सिय वनहिं सिधाये * गई न संग न प्राण पठाये
यह सब भा इन आंखिन आगे * तउ न तजा तनु जीव अभागे
म्वहिं न लाज निजनेह निहारी * राम सरिस सुत मैं महतारी
जियै मरै भल भूपति जाना * मोर हृदय शतकुलिशसमाना

दो० कौशल्या के वचन सुनि, भरत सहित रनिवास ।
व्याकुल विलपत राजगृह, मानहुँ शोक निवास ॥

विलपहिं विकल भरत दोउ भाई * कौशल्या लिय हृदय लगाई
भांति अनेक भरत समुझाये * कहि विवेक वर वचन सुनाये
भरतहु मातु सकल समुझाई * कहि पुराण श्रुति कथा सुनाई
छल विहीन शुचि सरल सुवाणी * बोले भरत जोरि युग पाणी
जे अघ मातु पिता गुरु मारे * गाइगोठ महिसुरपुर जारे
जे अघ तिय बालक वध कीन्हे * मीत महीपति माहुर दीन्हे
जे पातक उपपातक अहहीं * कर्म वचन मनभव कवि कहहीं
ते पातक मोहिं होउ विधाता * जो यह होइ मोर मत माता

दो० जे परिहरि हरि हर चरण, भजहिं भूतगण घोर ।
तिनकीगति मोहिंदेउविधि, जो जननी मत मोर ॥

बेचहिं वेद धर्म दुहि लेहीं * पिशुन पराव पाप कहि देहीं
कपटी कुटिल कलहप्रिय क्रोधी * वेद विदूषक विश्व विरोधी
लोभी लम्पट लोल लबारा * जे ताकहिं परधन परदारा
पावउँ मैं तिनकी गति घोरा * जो जननी यह सम्मत मोरा
जे नहिं साधु संग अनुरागे * परमारथ पथ विमुख अभागे
जे न भजहिं हरि नरतनु पाई * जिनहिं न हरिहरसुयश सुहाई
तजि श्रुतिपन्थ वामपथ चलहीं * वंचक विरचि वेष जग छलहीं
तिनकी गति शङ्कर मोहिं देऊ * जननी जो यह जानौं भेऊ

छं० मन वचन कर्म कृपायतन कर दास मैं सुनु मातुरी ।
उर वसत राम सुजान जानत प्रीति अरु छल चातुरी ॥
अस कहत लोचनबहतजलतनुपुलकनखलेखतमही ।
हियलायलिये बहोरि जननी जानि प्रभुपदरत सही ॥

दो० मातु भरत के वचन सुनि, सांचे सरल सुभाय ।
कहत रामप्रिय तात तुम, सदा वचन मन काय ॥

राम प्राण ते प्राण तुम्हारे * तुम रघुपतिहि प्राणते प्यारे
विधु विष चुवै स्रवै हिम आगी * होइ वारिचर वारि विरागी

भये ज्ञान बरु मिटै न मोहू * तुम रामहिं प्रतिकूल न होहू
मत तुम्हार अस जो जग कहहीं * सोसपनेहुँ सुखसुगति न लहहीं
अस कहि मातु भरत हिय लाये * थन पयस्रवहिं नयनजलछाये
करत विलाप विपुल इहि भांती * बैठे बीति गई सब राती
वामदेव वशिष्ठ मुनि आये * सचिव महाजन सकल बुलाये
मुनि बहु भांति भरत उपदेशे * कहि परमारथ वचन सुदेशे
दो० तात हृदय धीरज धरहु, करहु जो अवसर आजु ।
उठे भरत गुरु वचन सुनि, करन कहेउ सब काजु ॥
नृप तनु वेद विहित अन्हवावा * परम विचित्र विमान बनावा
गहि पद भरत मातु सब राखी * रहीं राम दरशन अभिलाखी
चन्दन अगरु भार बहु आये * अमित अनेक सुगन्ध सुहाये
सरयु तीर रचि चिता बनाई * जनु सुरपुर सोपान सुहाई
इहि विधि दाहक्रिया सब कीन्हीं * विधिवत न्हाय तिलाञ्जलि दीन्हीं
शोधि सम्मृति सब वेद पुराना * कीन्ह भरत दशगात्र विधाना
जहँ जस मुनिवर आयसु दीन्हीं * तहँ तस सहस भांति सब कीन्हीं
भये विशुद्ध दिये सब दाना * धेनु वाजि गज वाहन नाना
दो० सिंहासन भूषण वसन, अन्न धरणि धन धाम ।
दिये भरत लहि भूमिसुर, भे परिपूरण काम ॥
पितुहित भरतकीन्ह जस करणी * सो मुख लाख जाइ नहिं वरणी
सुदिन शोधि मुनिवर तहँ आये * सकल महाजन सचिव बुलाये
बैठे राजसभा सब जाई * पठये बोलि भरत दोउ भाई
भरत वशिष्ठ निकट बैठारे * नीति धर्ममय वचन उचारे
प्रथम कथा सब मुनिवर वरणी * केकयिकठिन कीन्ह जस करणी
भूपधर्म व्रत सत्य सराहा * जेहि तनु परिहरि प्रेम निबाहा
कहत रामगुण शील सुभाऊ * सजल नयन पुलके मुनिराऊ
बहुरि लषण सिय प्रीति वखानी * शोक सनेहमगन मुनिज्ञानी
दो० सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ ॥
अस विचारि केहि दीजिय दोषू * व्यर्थ काहि पर कीजिय रोषू
तात विचार करहु मनमाहीं * शोचयोग दशरथ नृपनाहीं
शोचिय विप्र जो वेदविहीना * तजिनिजधर्म बिषयलवलीना
शोचिय नृपति जु नीति न जाना * जेहि न प्रजाप्रिय प्राणसमाना

शोचिय वैश्य कृपण धनवानू * जो न अतिथिशिवभक्तसुजानू
शोचिय शूद्र विप्र अपमानी * मुखर मान प्रिय ज्ञान गुमानी
शोचिय पुनि पतिवञ्चक नारी * कुटिल कलहप्रिय इच्छाचारी
शोचिय बटु निज व्रत परिहरई * जो नहिं गुरुआयसु अनुसरई

दो० शोचिय गृही जो मोहवश, करै धर्म पथ त्याग ।
शोचिय यती प्रपञ्चरत, विगत विवेक विराग ॥

वैखानस सोइ शोचन योगू * तप विहाय जेहि भावै भोगू
शोचिय पिशुन अकारणक्रोधी * जननि जनक गुरुबन्धु विरोधी
सब विधि शोचिय परअपकारी * निज तनतोषक निर्दय भारी
शोचनीय सबही विधि सोई * जो न छांड़ि छल हरिजन होई
शोचनीय नहिं कोशलराऊ * भुवन चारिदश प्रकट प्रभाऊ
भयउ न अहै न होनिउहारा * भूप भरत जस पिता तुम्हारा
विधिहरिहरसुरपति दिशिनाथा * वरणहिं सब दशरथ गुणगाथा
तीनिकाल त्रिभुवन जगमाहीं * भूरिभाग दशरथ सम नाहीं

दो० कहहु तातकेहि भांति कोउ, करहि बड़ाई तासु ।
राम लषण तुम शत्रुहन, सरिस सुवनसुत जासु ॥

सब प्रकार भूपति बड़ भागी * बादि विषाद करिय तेहि लागी
यह सुनि समुझि शोचपरिहरहू * शिरधरि राय रजायसु करहू
राव राजपद तुम कहँ दीन्हा * पिता वचन फुर चाहिय कीन्हा
तजे राम जेहि वचनहिं लागी * तनु परिहरेउ राम विरहागी
नृपहिवचनप्रिय नहिं प्रियप्राणा * करहु तात पितुवचन प्रमाणा
करहु शीश धरि भूप रजाई * है तुमकहँ सब भांति भलाई
परशुराम पितु आज्ञा राखी * मारी मातु लोक सब साखी
तनय ययातिहि यौवन दयऊ * पितु आज्ञाअघ अयश न भयऊ

दो० अनुचित उचित विचार तजि, जे पालहिं पितु बैन ।
ते भाजन सुख सुयश के, बसहिंअमरपतिऐन ॥

अवशि नरेशवचन फुर करहू * पालहु प्रजा शोक परिहरहू
सुरपुर नृप पाइहि परितोषू * तुमकहँसुकृत सुयश नहिं दोषू
वेद विहित सम्मत सबही का * जेहि पितु देइ सो पावै टीका
करहु राज परिहरहु गलानी * मानहुँ मोर वचन हित जानी
सुनि सुख लहब राम वैदेही * अनुचित कहब न पण्डित तेही
कौशल्यादि सकल महतारी * तेउ प्रजासुख होहिं सुखारी

मरम तुम्हार राम सब जानहिं * सो सब विधि तुमसन भल मानहिं
सौंपेहु राज राम के आये * सेवा करेहु सनेह सुहाये
दो० कीजिय गुरु आयसु अवशि, कहहिं सचिव करजोरि ।
रघुपति आये उचित जस, तस तब करब बहोरि ॥
कौशल्या धरि धीरज कहई * पूत पिता गुरु आयसु अहई
सो आदरिय करिय हित मानी * तजिय विषाद कालगति जानी
वन रघुपति सुरपुर नरनाहू * तुम इहिभांति तात कदराहू
परिजनप्रजा सचिव कह अम्बा * तुमहीं सुत सबकर अवलम्बा
लखि विधि वाम काल कठिनाई * धीरज धरहु मातु बलिजाई
शिरधरि गुरु आयसु अनुसरहू * प्रजापालि पुरजन दुखहरहू
गुरु के वचन सचिव अभिनन्दन * सुनत भरत हिय जलरुहचन्दन
सुनी बहोरि मातु मृदुबानी * शील सनेह सरल रससानी
छं० सानी सरल रस मातुबानी सुनि भरत व्याकुल भये ।
लोचन सरोरुह स्रवत सींचत विरहउर अंकुर नये ॥
सो दशा देखत समय तेहि बिसरी सबै सुधि देहकी ।
तुलसी सराहत सकल सादर सींव सहज सनेहकी ॥
सो० भरत कमल कर जोरि, धर्म धुरन्धर धीर धरि ।
वचन अमिय जनु बोरि, देत उचित उत्तर सबहिं ॥
मोहिं उपदेश दीन्ह गुरु नीका * प्रजा सचिव सम्मत सबहीका
मातु उचित पुनि आयसु दीन्हा * अवशि शीशधरि चाहिय कीन्हा
गुरु पितु मातु स्वामिहितबानी * सुनि सुनि मुदितकरिय भल जानी
उचितकिअनुचित किये विचारू * धर्म जाइ शिर पातक भारू
तुम तो देहु सरल सिख सोई * जो आचरत मोर हित होई
यद्यपि यह समुझत हौं नीके * तदपि होत परितोष न जीके
अब तुम विनय मोरि सुनि लेहू * मोहिं अनुहरत सिखावन देहू
उत्तर देउँ क्षमब अपराधू * दुखितदोष गुणगनहिं न साधू
दो० पितु सुरपुर सिय राम वन, करन कहहु मोहिं राज ।
इहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज ॥
हित हमार सियपति सेवकाई * सो हरि लीन्ह मातु कुटिलाई
मैं अनुमानि दीख मन माहीं * आन उपाय मोर हित नाहीं
शोक समाज राज केहि लेखे * लषण राम सियपद बिनु देखे
बादि वसन बिनु भूषण भारू * बादि विरति बिनु ब्रह्मविचारू

सरुज शरीर बादि सब भोगा * बिनु हरिभक्ति बादि जपयोगा
जाय देह बिनु जीव सुखाई * बादि मोर सब बिनु रघुराई
जाउँ राम पहँ आयसु देहू * एकहि आंक मोर हित येहू
मोहिं नृपकरि आपनभल चहहू * सो सनेह जड़ता वश कहहू
दो० कैकेयी सुत कुटिल मति, राम विमुख गतलाज ।
तुम चाहत सुख मोहवश, मोहिसे अधमके राज ॥
कहौं सांच सब सुनि पतियाहू * चाहिय धर्म शील नरनाहू
मोहिं राज हठि देहहु जबहीं * रसा रसातल जाइहि तबहीं
मोहिं समान को पापनिवासी * जेहि लगि सीय राम वनवासी
राव राम कहँ कानन दीन्हा * बिछुरत गमन अमरपुर कीन्हा
मैं शठ सब अनरथ कर हेतू * बैठि बात सब सुनउँ सचेतू
बिनु रघुवीर विलोकिय वासू * रहे प्राण सहि जग उपहासू
राम पुनीत विषय रस रूखे * लोलुप भूप भोग के भूखे
कहँलगि कहउँ हृदय कठिनाई * निदरि कुलिश जेहि लही बड़ाई
दो० कारण ते कारज कठिन, होय दोष नहिं मोर ।
कुलिश अस्थिते उपलते, लोह कराल कठोर ॥
कैकेयी भव तनु अनुरागे * पामर प्राण अघाय अभागे
जो प्रिय विरह प्राणप्रिय लागे * देखब सुनब बहुत अब आगे
लषण राम सिय कहँ वन दीन्हा * पठइ अमरपुर पति हित कीन्हा
लीन्ह विधवपन अपयश आपू * दीन्हेउ प्रजाहिं शोक सन्तापू
मोहिं दीन्ह सुख सुयश सुराजू * कीन्ह केकयी सबकर काजू
इहि ते मोर कहा अब नीका * तेहिपर देन कहहु तुम टीका
केकयि जठर जन्मि जगमाहीं * यह मोकहँ कछु अनुचित नाहीं
मोरि बात सब विधिहि बनाई * प्रजा पांच कत करहु सहाई
दो० ग्रह गृहीत पुनि वातवश, तेहि पुनि बीछी मार ।
ताहि पियाइय वारुणी, कहहु कवन उपचार ॥
केकयि सुवन योग जग जोई * चतुर विरञ्चि रचा मोहिं सोई
दशरथ तनय राम लघुभाई * दीन्ह मोहिं विधि बादि बड़ाई
तुम सब कहहु कढ़ावन टीका * राय राज सबहीं कहँ नीका
उतर देउँ केहि विधि केहि केही * कहहु सुखेन यथारुचि जेही
मोहिं कुमातु समेत विहाई * कहहु कहिहि को कीन्ह भलाई
मोहिं बिनु को सचराचर माहीं * जेहि सिय राम प्राणप्रिय नाहीं

परम हानि सब कहँ बड़ लाहू * अदिन मोर नहिं दूषण काहू
संशय शील प्रेम वश अहहू * सबै उचित सब जो कछु कहहू
दो० राम मातु सुठि सरल चित, मोपर प्रेम विशेखि ।
कहहिं सुभाव सनेह वश, मोरि दीनता देखि ॥
गुरु विवेकसागर जग जाना * जिनहिं विश्व करबदर समाना
मोकहँ तिलक साजि सजिसोऊ *भा विधि विमुख विमुख सब कोऊ
परिहरि राम सीय जग माहीं * कोउ न कहिहि मोर मत नाहीं
सो मैं सुनब सहब सुख मानी * अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी
डर न मोहिं जग कहिहि कि पोचू * परलोकहु कर नाहिंन शोचू
एकै बड़ उर दुसह दवारी * मोहिंलगि भे सियराम दुखारी
जीवन लाहु लषण भल पावा * सब तजि रामचरण मन लावा
मोर जन्म रघुवर वन लागी * झूठ काह पछिताउँ अभागी
दो० आपनि दारुण दीनता, सबहिं कहौं समुझाय ।
देखे बिनु रघुवीर पद, जियकी जरनि न जाय ॥
आन उपाय मोहिं नहिं सूझा * को जियकी रघुवर बिनु बूझा
एकहि आंक इहै मन माहीं * प्रातकाल चलिहौं प्रभुपाहीं
यद्यपि मैं अनभल अपराधी * भइ मोहिं कारण सकल उपाधी
तदपि शरण सम्मुख मोहिं देखी * क्षमि सब करिहहिं कृपा विशेखी
शील सकुचि सुठि सरल सुभाऊ * कृपा सनेह सदन रघुराऊ
अरिहुक अनभल कीन्ह न रामा * मैं शिशु सेवक यद्यपि वामा
तुम पै पांच मोर भल मानी * आयसु आशिष देहु सुबानी
जेहि सुनि विनय मोरि जन जानी * आवहिं बहुरि राम रजधानी
दो० यद्यपि जन्म कुमातु ते, मैं शठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहैं, मोहिं रघुवीर भरोस ॥
भरत वचन सब कहँ प्रिय लागे * राम सनेह सुधा सम पागे
लोग वियोग विषम दुख दागे * मन्त्र सबीज सुनत जनु जागे
मातु सचिव गुरु पुर नर नारी * सकल सनेह विकल भइँ भारी
भरतहि कहहिं सराहि सराही * राम प्रेम मूरति तनु आही
तात भरत अस काहेन कहहू * प्राण समान रामप्रिय अहहू
जो पामर आपनि जड़ताई * तुमहिं सुगाइ मातु कुटिलाई
सो शठ कोटिक पुरुष समेता * बसहि कल्पशत नरकनिकेता
अहिअघअवगुण मणिनहिंगहई * हरै गरल दुख दारिद दहई

दो० अवशि चलिय वन रामपहँ, भरत मन्त्र भल कीन्ह ।
शोकसिन्धु बूड़त सबहिं, तुम अवलम्बन दीन्ह ॥
भा सबके मन मोद न थोरा * जनु घन धुनि सुनि चातक मोरा
चलब प्रात लगि निर्णय नीके * भरत प्राणप्रिय भे सबही के
मुनिहिं वन्दि भरतहिं शिर नाई * चले सकल घर बिदा कराई
धन्य भरत जीवन जगमाहीं * शील सनेह सराहत जाहीं
कहहिं परस्पर भा बड़काजू * सकल चलैकर साजहिं साजू
जेहि राखहिं घर रहु रखवारी * सो जानै जनु गरदन मारी
कोउ कह रहन कहिय नहिं काहू * को न चहै जग जीवनलाहू
दो० जरै सुसम्पति सदन सुख, सुहृद मातु पितु भाइ ।
सम्मुख होत जो रामपद, करै न सहज सहाइ ॥
घर घर वाहन साजहिं नाना * हर्षहिं हृदय प्रभात पयाना
भरत जाइ घर कीन्ह विचारू * नगर वाजि गज भवन भँडारू
सम्पति सब रघुपति कै आही * जो बिनु यतन चलौं तजि ताही
तौ परिणाम न मोरि भलाई * पापि शिरोमणि साइँ दुहाई
करहि स्वामिहित सेवक सोई * दूषण कोटि देइ किन कोई
अस विचारि शुचि सेवक बोले * जे सपनेहुँ निजधर्म न डोले
कहि सब मर्म धर्म सब भाखा * जो जेहि लायक सो तहँ राखा
करि सब यतन राखि रखवारे * राम मातु पहँ भरत सिधारे
दो० आरत जननी जानि सब, भरत सनेह सुजान ।
कहेउ सजावन पालकी, सुखद सुखासन यान ॥
चक चकई इव पुर नर नारी * चलब प्रात उर आनँद भारी
जागत सब निशि भयउ विहाना * भरत बुलाये सचिव सुजाना
कहेउ लेहु सब तिलक समाजू * वनहिं देव मुनि रामहिं राजू
वेगि चलहु सुनि सचिव जुहारे * तुरत तुरग रथ नाग सँवारे
अरुन्धती अरु अग्नि समाजू * रथचढ़ि चले प्रथम मुनिराजू
विप्र वृन्द चढ़ि वाहन नाना * चले सकल तप तेज निधाना
नगरलोग सब सजि सजि याना * चित्रकूट कहँ कीन्ह पयाना
शिबिका सुभग न जाइँ बखानी * चढ़ि चढ़ि चलत भईं सब रानी
दो० सौंपि नगर शुचिसेवकन्ह, सादर सबहिं चलाइ ।
सुमिरि रामसिय चरणतब, चले भरत दोउ भाइ ॥
राम दरशहित सब नर नारी * जनु करिकरिणि चले तकिवारी

वन सिय राम समुझि मनमाहीं * सानुज भरत पयादेहि जाहीं
देखि सनेह लोग अनुरागे * उतरि चले हय गय रथ त्यागे
जाइ समीप राखि निज डोली * राम मातु मृदु वाणी बोली
तात चढ़हु रथ वलि महतारी * होइहि प्रिय परिवार दुखारी
तुम्हरे चलत चलिहि सब लोगू * सकल शोककृश नहिं मगयोगू
शिर धरि वचन चरण शिर नाई * रथ चढ़ि चलतभये दोउ भाई
तमसा प्रथम दिवस करि वासू * दूसर गोमति तीर निवासू

दो० पयअहार फलअशन इक, निशि भोजन सबलोग ।
करत रामहित नेम व्रत, परिहरि भूषण भोग ॥

सई तीर बसि चले बिहाने * शृंगवेरपुर सब नियराने
समाचार सब सुने निषादा * हृदय विचार करै सविषादा
कारण कवन भरत वन जाहीं * है कछु कपटभाव मनमाहीं
जो पै जिय न होत कुटिलाई * तौ कस लीन्ह संग कटकाई
जानहिं सानुज रामहिं मारी * करौं अकण्टक राज सुखारी
भरत न राजनीति उर आनी * तब कलङ्क अब जीवनहानी
सकल सुरासुर जुरहिं जुझारा * रामहिं समर न जीतनहारा
का आश्चर्य भरत अस करहीं * नहिं विषबेलि अमिय फल फरहीं

दो० अस विचारि गुह ज्ञाति सन, कहेउ सजग सब होहु ।
हथवासहु बोरहु तरणि, कीजिय घाटारोहु ॥

होइ सजग सब रोकहु घाटा * ठाटहु सकल मरण कै ठाटा
सम्मुख लोह भरत सन लेहू * जियत न सुरसरि उतरन देहू
समरमरण पुनि सुरसरितीरा * रामकाज क्षणभंगु शरीरा
भरत भाइ नृप मैं जन नीचू * बड़े भाग अस पाइय मीचू
स्वामि काजु करिहौं रणरारी * लेइहौं सुयश भुवनदशचारी
तजहुँ प्राण रघुनाथ निहोरे * दुहूँ हाथ मुदमोदक मोरे
साधु समाज न जाकर लेखा * राम भक्त महँ जासु न रेखा
जाय जियत जग सो महिभारू * जननी यौवन विटप कुठारू

दो० विगत विषाद निषादपति, सबहि बढ़ाय उछाह ।
सुमिरि राम माँग्यउ तुरत, तरकस धनुष सनाह ॥

वेगिहि भाइ सजहु संजोऊ * सुनि रजाय कदराय न कोऊ
भले नाथ सब कहहिं सहर्षा * एकहि एक बढ़ावहिं कर्षा
चले निषाद जुहारि जुहारी * शूर सकल रण रुचै न रारी

सुमिरि राम पदपङ्कज पनहीं * भाथा बांधि चढ़ावहिं धनुहीं
अँगुरी पहिरि कूंड़ि शिर धरहीं * फरसा बांस शेल सम करहीं
एक कुशल अति ओड़न खांड़े * कूदहिं गगन मनहुँ छिति छांड़े
निज निज साज समाज बनाई * गुहरावतहिं जुहारहिं जाई
देखि सुभट सब लायक जाने * लै लै नाम सकल सनमाने
दो० भाइहु लावहु धोख जनि, आजु काज बड़ मोहु ।
सुनि सरोष बोले सुभट, वीर अधीर न होहु ॥
राम प्रताप नाथ बल तोरे * कराहिं कटक विनु भट विनु घोरे
जियत पांव नहिं पीछे धरहीं * रुण्डमुण्डमय मेदिनि करहीं
दीख निषादनाथ भल टोलू * कहेउ बजाउ जुझाऊ ढोलू
इतना कहत छींक भइ बांये * कहेउ शकुनियन्ह खेतसुहाये
बूढ़ एक कह शकुन विचारी * भरतहि मिलिय न होइहि रारी
रामहिं भरत मनावन जाहीं * शकुन कहै अस विग्रह नाहीं
सुनि गुह कहै नीक कह बूढ़ा * सहसा करि पछिताहिं विमूढ़ा
भरत स्वभाव शील विनु बूझे * बड़ि हितहानि जानि विनु जूझे
दो० गहहु घाट भट सिमिटि सब, लेउ मर्म मिलि जाय ।
बूझि मित्र अरि मध्यगति, तब तस करव उपाय ॥
लखब सनेह स्वभाव सुहाये * वैर प्रीति नहिं दुरत दुराये
अस कहि भेंट सजोवन लागे * कन्दमूल फल खग मृग माँगे
मीन पीन पाठीन पुराने * भरि भरि भार कहारन आने
सकलसाज सजि मिलन सिधाये * मङ्गलमूल शकुन शुभ पाये
देखि दूरि ते कहि निज नामू * कीन्ह मुनीशहिं दण्ड प्रणामू
जानि रामप्रिय दीन्ह अशीशा * भरतहि कहेउ बुझाइ मुनीशा
राम सखा सुनि स्यन्दन त्यागा * चले उतरि उमँगत अनुरागा
गावँ जाति गुह नावँ सुनाई * कीन्ह जुहारि माथ महि लाई
दो० करत दण्डवत देखि तेहि, भरत लीन्ह उर लाइ ।
मनहुँ लषण सन भेंट भइ, प्रेम न हृदय समाइ ॥
भेंटे भरत ताहि अति प्रीती * लोग सिहाहिं प्रेमकै रीती
धन्य धन्य ध्वनि मङ्गल मूला * सुरसराहि तेहि वरषहिं फूला
लोक वेद सब भांतिहि नीचा * जासु छांह छुइ लेइय सींचा
तेहि भरि अङ्क राम लघु भ्राता * मिलत पुलक परिपूरितगाता
राम राम कहि जे जमुहाहीं * तिनहिं न पापपुञ्ज समुहाहीं

इहि तौ राम लाय उर लीन्हा * कुल समेत जगपावन कीन्हा
करमनाश जल सुरसरि परई * तेहि को कहहु शीश नहिं धरई
उलटा नाम जपत जग जाना * बालमीकि भे ब्रह्म समाना
दो० श्वपच शबर खल यवन जड़, पांवर कोल किरात ।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ॥
नहिं अचरज युगयुग चलिआई * केहि न दीन्ह रघुवीर बड़ाई
राम नाम महिमा सुर कहहीं * सुनि सुनि अवधलोग सुख लहहीं
राम सखहि मिलि भरत सप्रेमा * पूछहिं कुशल सुमङ्गल क्षेमा
देखि भरत कर शील सनेहू * भा निषाद तेहि समय विदेहू
सकुच सनेह मोद मन बाढ़ा * भरतहि चितवत इकटक ठाढ़ा
धरि धीरज पद वन्दि बहोरी * विनय सप्रेम करत करजोरी
कुशल मूल पद पङ्कज पेखी * मैं तिहुँकाल कुशल निज देखी
अब प्रभु परम अनुग्रह तोरे * सहित कोटि कुल मङ्गल मोरे
दो० समुझि मोरि करतूति कुल, प्रभु महिमा जिय जोइ ।
जो न भजै रघुवीर पद, जग विधि वञ्चक सोइ ॥
कपटी कायर कुमति कुजाती * लोक वेद बाहिर सब भांती
राम कीन्ह आपन जबहीं ते * भयउँ भुवन भूषण तबहीं ते
देखि प्रीति सुनि विनय सुहाई * मिले बहोरि लषण लघुभाई
कहि निषाद निज नाम सुबानी * सादर सकल जुहारी रानी
जानि लषण सम देहिं अशीशा * जियहु सुखी सौ लाख बरीशा
निरखि निषाद नगर नर नारी * भये सुखी जनु लषण निहारी
कहहिं लहेउ यह जीवन लाहू * भेंटेउ राम भाइ भरि बाहू
सुनि निषाद निज भाग बड़ाई * प्रमुदित मन लै चलेउ लिवाई
दो० सनकारे सेवक सकल, चले स्वामि रुख पाइ ।
घर तरुतर सर बाग वन, वास बनायउ जाइ ॥
शृंगवेरपुर भरत दीख जब * भे सनेहवश अङ्ग शिथिल तब
सोहत दिये निषादहि लागू * जनु तनु धरे विनय अनुरागू
इहि विधि भरत सेन सब सङ्गा * दीख जाय जगपावनि गङ्गा
रामघाट कहँ कीन्ह प्रणामा * भा मनमगन मिले जनु रामा
करहिं प्रणाम नगर नर नारी * मुदित ब्रह्ममय वारि निहारी
करि मज्जन मांगहिं कर जोरी * रामचन्द्र पद प्रीति न थोरी
भरत कहेउ सुरसरि तव रेनू * सकल सुखद सेवक सुरधेनू

जोरि पाणि वर मांगौं एहू * सीय राम पद सहज सनेहू
दो० इहिविधि मज्जन भरत करि, गुरुअनुशासन पाइ।
मातु नहानी जानि सब, डेरा चले लिवाइ ॥
जहँ तहँ लोगन डेरा कीन्हा * भरत शोध सबहीकर लीन्हा
गुरु सेवा करि आयसु पाई * राम मातु पहँ गे दोउ भाई
चरण चापि कहि कहि मृदुबानी * जननी सकल भरत सनमानी
भाइहि सौंपि मातु सेवकाई * आप निषादहि लीन्ह बुलाई
चले सखा करसों कर जोरे * शिथिल शरीर सनेह न थोरे
पूछत सखहि सो ठांव दिखाऊ * नेकु नयन मनजरनि जुड़ाऊ
जहँ सियराम लषण निशि सोये * कहत भरे जल लोचन कोये
भरत वचन सुनि भयउ विषादू * तुरत तहां लै गयउ निषादू
दो० जहँ शिंशपा पुनीत तरु, रघुवर किय विश्राम ।
अति सनेह सादर भरत, कीन्हेउ दण्डप्रणाम ॥
कुश साथरी निहारि सुहाई * कीन्ह प्रणाम प्रदक्षिण लाई
चरण रेख रज आंखिन लाई * बनै न कहत प्रीति अधिकाई
कनकविन्दु दुइ चारिक देखे * राखे शीश सीय सम लेखे
सजल विलोचन हृदय गलानी * कहत सखासन वचन सुबानी
श्रीहत सीय विरह द्युतिहीना * यथा अवध नरनारि मलीना
पिता जनक देउँ पटुतर केही * करतल भोग योग जग जेही
श्वशुर भानुकुल भानु भुवालू * जेहि सिहात अमरावतिपालू
प्राणनाथ रघुनाथ गुसाईं * जो बड़ होत सो राम बड़ाई
दो० पतिदेवता सुतीय मणि, सीय साथरी देखि ।
विहरत हृदय न हहरि मम, पविते कठिन विशेखि ॥
लालनयोग लषण लघु लोने * भे न भाइ अस अहहिं न होने
पुरजन प्रिय पितु मातु दुलारे * सिय रघुवीरहि प्राण पियारे
मृदुमूरति सुकुमार स्वभाऊ * ताति वायु तनु लागि न काऊ
ते वन बसहिं विपति सबभांती * निदरे कोटिकुलिश यह छाती
राम जननि जग कीन्ह उजागर * रूप शील सुख सब गुणसागर
पुरजन परिजन गुरु पितु माता * राम स्वभाव सबहिं सुखदाता
वैरिउ राम बड़ाई करहीं * बोलनि मिलनि विनय मन हरहीं
शारद कोटि कोटि शतशेशा * करि न सकहिं प्रभुगुण लवलेशा
दो० सुखस्वरूप रघुवंशमणि, मङ्गल मोद निधान ।

ते सोवत कुशडासि महि, विधिगति अति बलवान ॥
राम सुना दुख कान न काऊ * जीवनतरु जिमि जुगवतराऊ
पलकनयनफणिमणि जेहि भांती * जुगवहिं जननि सकल दिनराती
ते अब फिरत विपिन पदचारी * कन्द मूल फल फूल अहारी
धिक कैकेयि अमङ्गल मूला * भइसि प्राणप्रीतम प्रतिकूला
मैं धिक धिक अघउदधि अभागी * सब उतपात भयउ जेहि लागी
कुलकलङ्क करि सृजेउ विधाता * साइँ द्रोह मोहिं कीन्ह कुमाता
सुनि सप्रेम समुझाव निषादू * नाथ करिय कत बादि विषादू
राम तुमहिं प्रिय तुम प्रिय रामहिं * यह निरदोष दोष विधि वामहिं
छं० विधिवाम की करणी कठिन जेहि मातु कीन्हीं बावरी ।
तेहि राति पुनि पुनि करहिं प्रभु सादर सराहन रावरी ॥
तुलसी न तुमसों राम प्रीतम कहत हौं सौंहैं किये ।
परिणाम मङ्गल जानि अपने आनिये धीरज हिये ॥
सो० अन्तरयामी राम, सकुचि सप्रेम कृपायतन ।
चलिय करिय विश्राम, यह विचार दृढ़ आनि मन ॥
सखावचन सुनि उर धरि धीरा * वास चले सुमिरत रघुवीरा
यह सुधि पाइ नगर नर नारी * चले विलोकन आरत भारी
परदक्षिण करि करहिं प्रणामा * देहिं कैकयिहि खोरि निकामा
भरि भरि वारि विलोचन लेहीं * वाम विधातहि दूषण देहीं
एक सराहहिं भरत सनेहू * कोउ कह नृपति निबाहेउ नेहू
निन्दहिं आपु सराह निषादहि * को कहिसकै विमोह विषादहि
इहिविधि राति लोग सब जागा * भा भिनुसार उतारा लागा
गुरुहि सुनाव चढ़ाव सुहाई * नई नाव सब मातु चढ़ाई
दण्ड चारि महँ भा सब पारा * उतरि भरत तब सबहिं सँभारा
दो० प्रातक्रिया करि मातुपद, वन्दि गुरुहिं शिरनाइ ।
आगे किये निषादगण, दीन्हेउ कटक चलाइ ॥
किये निषाद नाथ अगुआई * मातु पालकी सकल चलाई
साथ बुलाइ भाइ लघु दीन्हा * विप्रनसहित गवन गुरु कीन्हा
आइ सुरसरिहि कीन्ह प्रणामू * सुमिरे लषण सहित सियरामू
गवने भरत पयादेहि पाये * कोतल सङ्ग जाहिं डोरिआये
कहहिं सुसेवक बारहिं बारा * होइय नाथ अश्व असवारा
राम पयादेहि पांव सिधाये * हमकहँ रथ गज वाजि बनाये

शिरभर जाउँ उचित अस मोरा * सबतें सेवक धर्म कठोरा
देखि भरत गति सुनि मृदुबानी * सब. सेवकगण करहिं गलानी
दो० भरत तीसरे पहर कहँ, कीन्ह प्रवेश प्रयाग ।
कहत रामसिय रामसिय, उमँगि उमँगि अनुराग ॥
झलका झलकत पांयन कैसे * पंकज कोस ओसकण जैसे
भरत पयादेहि आये आजू * देखिदुखित सुनि सकलसमाजू
खबरि लीन्ह सब लोग अन्हाये * कीन्ह प्रणाम त्रिवेणी आये
सविधि सितासित नीर अन्हाने * दिये दान महिसुर सनमाने
देखत श्यामल धवल हिलोरे * पुलक शरीर भरत करजोरे
सकल कामप्रद तीरथ राऊ * वेदविदित जग प्रकट प्रभाऊ
मांगौं भीख त्यागि निज धरमू * आरत काह न करहिं कुकरमू
असजियजानि सुजानि सुदानी * सफल करौ जग याचकबानी
दो० अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौं निर्वान ।
जन्म जन्म रति रामपद, यह वरदान न आन ॥
जानहिं राम कुटिल करि मोही * लोग कहैं गुरु साहब द्रोही
सीता राम चरण रति मोरे * अनुदिन बढ़ो अनुग्रह तोरे
जलद जन्मभरि सुरति बिसारे * याचत जल पवि पाहन डारे
चातक रटनि घटे घटि जाई * बढ़े प्रेम सब भांति भलाई
कनकहि वान चढ़े जिमि दाहे * तिमि प्रीतम पद नेम निबाहे
भरत वचन सुनि मांझ त्रिबेनी * भै मृदु वाणि सुमंगल देनी
तात भरत तुम सब विधि साधू * रामचरण अनुराग अगाधू
बादि गलानि करहु मनमाहीं * तुमसम रामहिं प्रिय कोउ नाहीं
दो० तनु पुलके हियहर्षि सुनि, वेणि वचन अनुकूल ।
भरत धन्य कहि धन्यकहि, नभ सुर वर्षहिं फूल ॥
प्रमुदित तीरथराज निवासी * वैखानस वटु गृही उदासी
कहहिं परस्पर मिलि दशपांचा * भरतसनेहशील शुचि सांचा
सुनत राम गुण गान सुहाये * भरद्वाज मुनिवर पहँ आये
दण्ड प्रणाम करत मुनि देखे * मूरतिवन्त भाग निज लेखे
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्हे * दीन्ह अशीश कृतारथ कीन्हे
आसन दीन्ह नाइ शिर बैठे * चहत सकुचि गृह जनु भरिपैठे
मुनि पूछब कछु यह बड़ शोचू * बोले ऋषि लखि शीलसँकोचू
सुनहु भरत हम सब सुधि पाई * विधि करतब पर कछु न बसाई

दो० तुम गलानि जियजनिकरहु, समुझि मातु करतूति ।
तात केकयिहि दोष नहिं, गई गिरा मति धूति ॥
यहउ कहत भल कहहिं न कोऊ * लोक वेद बुध सम्मत दोऊ
तात तुम्हार विमल यश गाई * पाइहि लोकहु वेद बड़ाई
लोक वेद सम्मत विधि कहई * जेहि पितु राज्य देय सो लहई
राउ सत्यव्रत तुमहिं बुलाई * देत राज्य सुख धर्म बड़ाई
राम गमन वन अनरथ मूला * जो सुनि सकल विश्व भइ शूला
सो भावीवश रानि अयानी * करि कुचालि अन्तहु पछितानी
तहँउँ तुम्हार अल्प अपराधू * कहै सो अधम अयान असाधू
करतेहु राज्य तुमहिं नहिं दोषू * रामहिं होत सुनत सन्तोषू
दो० अब अतिकीन्हेउ भरत भल, तुमहिं उचित मत एहु ।
सकल सुमङ्गलमूल जग, रघुवर चरण सनेहु ॥
सो तुम्हार धन जीवन प्राना * भूरिभाग को तुमहिं समाना
सो तुम्हार आचरज न ताता * दशरथसुवन राम लघुभ्राता
सुनहु भरत रघुपति मनमाहीं * प्रेमपात्र तुम सम कोउ नाहीं
लषण राम सीतहि अति प्रीती * निशि सब तुमहिं सराहत बीती
जाना मर्म अन्हात प्रयागा * मगन होहिं तुम्हरे अनुरागा
तुमपर अस सनेह रघुवर के * सुखजीवन जग जस जड़नरके
यह न अधिक रघुवीर बड़ाई * प्रणत कुटुम्बपाल रघुराई
तुम तौ भरत मोर मत एहू * धरे देह जनु राम सनेहू
दो० तुमकहँ भरत कलंक यह, हम सब कहँ उपदेश ।
रामभक्ति रस सिद्धि हित, भा यहिसमय गणेश ॥
नव विधु विमल तात यश तोरा * रघुवर किङ्कर कुमुद चकोरा
उदय सदा अथइय कबहूंना * घटहि न जगनभ दिन दिन दूना
कोकत्रिलोक प्रीति अतिकरहीं * प्रभुप्रताप रवि छविहि न हरहीं
निशिदिन सुखद सदा सबकाहू * ग्रसिहि न केकयि करतब राहू
पूरण राम सुप्रेम पियूषा * गुरु अपमान दोष नहिं दूषा
राम भक्ति अब अमिय अघाहू * कीन्हेउ सुलभ सुधा वसुधाहू
भूप भगीरथ सुरसरि आनी * सुमिरत सकल सुमङ्गलखानी
दशरथगुणगण वरणि न जाहीं * अधिक कहा जेहि समजग नाहीं
दो० जासु सनेह सकोच वश, राम प्रकट भे आय ।
जे हरि हिय नयनन्ह कबहुँ, निरखे नाहिं अघाय ॥

कीरति विधु तुम कीन्ह अनूपा * जहँ बस राम प्रेम मृगरूपा
तात गलानि करहु जिय जाये * डरहु दरिद्रहिं पारस पाये
सुनहु भरत हम झूंठ न कहहीं * उदासीन तापस वन रहहीं
सब साधनकर सुफल सुहावा * लषण राम सिय दरशन पावा
तेहि फल कर फल दरश तुम्हारा * सहित प्रयाग सुभाग हमारा
भरत धन्य तुम जगयश लयऊ * कहि अस प्रेममगन मुनि भयऊ
सुनि मुनिवचन सभासद हरषे * साधु सराहि सुमन सुर बरषे
धन्य धन्य ध्वनि गगन प्रयागा * सुनि सुनि भरत मगन अनुरागा
दो० पुलकगात हिय राम सिय, सजल सरोरुह नैन ।
करि प्रणाम मुनिमण्डलिहि, बोले गद्गद बैन ॥
मुनि समाज अरु तीरथ राजू * सांचेहु शपथ अघाइ अकाजू
इहि थल जो कछु कहिय बनाई * इहिसम नहिं कछु अघ अधमाई
तुम सर्वज्ञ कहौं सतिभाऊ * उर अन्तरयामी रघुराऊ
म्वहिं न मातु करतब कर शोचू * नहिं दुख जिय जग जानहिं पोचू
नाहिन डर बिगरहि परलोकू * पितहु मरे कर नाहिन शोकू
सुकृत सुयश भरि भुवन सुहाये * लक्ष्मण राम सरिस सुत पाये
राम विरह तजि तनु क्षणभंगू * भूप शोचकर कवन प्रसंगू
राम लषण सिय बिनु पग पनहीं * करि मुनिवेष फिरहिं वन वनहीं
दो० अजिन वसन फल अशन महि, शयन डासि कुशपात ।
बसि तरुतर नित सहत दुख, हिम तप बरषा वात ॥
यह दुखदाह दहै नित छाती * भूंख न वासर नींद न राती
यह कुरोगकर औषध नाहीं * शोधेउँ सकल विश्व मनमाहीं
मातु कुमति बढ़ई अघ मूला * तेहि हमार हित कीन्ह बसूला
कलि कुकाठ कर कीन्ह कुयन्त्रू * गाड़ि अवधि पढ़ि कठिनकुमन्त्रू
मोहिं लगि यह कुठाट जेहि ठाटा * घालिसि सब जग बारहबाटा
मिटै कुयोग राम फिरि आये * बसहि अवध नहिं आन उपाये
भरत वचन सुनि मुनि सुखपाई * सबहिं कीन्ह बहुभांति बड़ाई
तात करहु जनि शोच विशेखी * सब दुख मिटिहि रामपद देखी
दो० करि प्रबोध मुनिवर कहेउ, अतिथि प्राणप्रिय होहु ।
कन्दमूल फल फूल हम, देहिं लेहु करि छोहु ॥
सुनि मुनिवचन भरतहिय शोचू * भयउ कुअवसर कठिन सँकोचू
जानि गरुअ गुरु गिरा बहोरी * चरण वन्दि बोले करजोरी

शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा * परम धर्म यह नाथ हमारा
भरत वचन मुनिवर मन भाये * शुचि सेवक शिष निकट बुलाये
चाहिय कीन्ह भरत पहुनाई * कन्दमूल फल आनहु जाई
भले नाथ कहि तिन्ह शिरनाये * प्रमुदित निजनिज काज सिधाये
मुनिहिं शोच पाहुन बड़नेवता * तस पूजा चाहिय जस देवता
सुनिऋधिसिधिअणिमादिकआईं * आयसु होइ सो करैं गुसाईं
दो० राम विरह व्याकुल भरत, सानुज सकल समाज ।
पहुनाई करि हरहु श्रम, कहेउ मुदित मुनिराज ॥
ऋधिसिधिशिरधरिमुनिवरबानी * बड़भागिनि आपुहि अनुमानी
कहहिं परस्पर सिधि समुदाई * अतुलित अतिथि रामलघुभाई
मुनिपद वन्दि करिय सोइ आजू * होइ सुखी सब राजसमाजू
अस कहि रुचिर रचे गृहनाना * जे विलोकि बिलखाहिं विमाना
भोग विभूति भूरि भरि राखे * देखत जिनहिं अमर अभिलाखे
दासी दास साज सब लीन्हे * जुगवत रहहिं मनहिंमन दीन्हे
सबसमाज सजि सिधि पलमाहीं * जे सुख सपनेहु सुरपुर नाहीं
प्रथमहिं वास दिये सब केही * सुन्दर सुखद यथा रुचि जेही
दो० बहुरि सपरिजन भरत कहँ, ऋषि आयसु अस दीन्ह ।
विधि विस्मयदायक विभव, मुनिवर तपबल कीन्ह ॥
मुनिप्रभाव जब भरत विलोका * सब लघु लगे लोकपति लोका
सुख समाज नहिं जाइ बखानी * देखत विरति विसारहिं ज्ञानी
आसन शयन सुवसन विताना * वन वाटिका विहग मृगनाना
सुरभि फूल फल अमिय समाना * विमलजलाशय विविध विधाना
अशनपान शुचि अमित अमीसे * देखि लोक सकुचात जमीसे
सुर सुरभी सुरतरु सबहीके * लखि अभिलाष सुरेश शचीके
ऋतु वसन्त बह त्रिविध बयारी * सब कहँ सुलभ पदारथ चारी
स्रक चन्दन वनितादिक भोगा * देखि हर्ष विस्मय सब लोगा
दो० सम्पति चकई भरत चक, मुनि आयसु खेलवार ।
तेहि निशि आश्रम पींजरा, राखे भा भिनुसार ॥
कीन्ह निमज्जन तीरथ राजा * नाइ मुनिहि शिर सहितसमाजा
ऋषि आयसु अशीश शिर राखी * करि दण्डवत विनय बहुभाखी
पथ गथ कुशल साथ सब लीन्हे * चले चित्रकूटहि चित दीन्हे
राम सखा कर दीन्हे लागू * चलत देहधरि जनु अनुरागू

नहिं पदत्राण शीश नहिं छाया * प्रेम नेम व्रत धर्म अमाया
लषण राम सिय पन्थ कहानी * पूछत सखहि कहत मृदुबानी
रामवास थल विटप विलोके * उर अनुराग रहत नहिं रोके
देखि दशा सुर वर्षहिं फूला * भइ मृदु महि मगु मङ्गलमूला
दो० किये जाहिं छाया जलद, सुखद बहत वरवात ।
तस मगु भयउ न रामकहँ, जस भा भरतहि जात ॥
जड़ चेतन जग जीव घनेरे * जे चितये प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे
ते सब भये परमपद योगू * भरत दरश भेषज भवरोगू
यह बड़िबात भरत की नाहीं * सुमिरत जिन्हैं राम मनमाहीं
बारेक राम कहत जग जेऊ * होत तरण तारण नर तेऊ
भरत रामप्रिय पुनि लघु भ्राता * कस न होइ मगु मङ्गलदाता
सिद्ध साधु मुनिवरअस कहहीं * भरतहि निरखि हर्ष हिय लहहीं
देखि प्रभाव सुरेशहि शोचू * जग भल भलहिं पोचकहँ पोचू
गुरुसन कहेउ करउ प्रभु सोई * रामहि भरतहि भेंट न होई
दो० राम सकोची प्रेम वश, भरत सप्रेम पयोधि ।
बनी बात बिगरन चहत, करिय यतन छल शोधि ॥
वचन सुनत सुरगुरु मुसकाने * सहसनयन बिनु लोचन जाने
कह गुरु बादि क्षोभ छल छांडू * इहां कपट करि होइय भांडू
मायापति सेवक सन माया * करियत उलटि परे सुरराया
तब कछु कीन्ह रामरुख जानी * अब कुचाल करि होइहि हानी
सुनु सुरेश रघुनाथ सुभाऊ * निज अपराध रिसाहिं न काऊ
जो अपराध भक्त कर करई * राम रोष पावक सो जरई
लोकहु बेद विदित इतिहासा * यह महिमा जानहिं दुर्वासा
भरत सरिस को राम सनेही * जग जपु राम राम जप जेही
दो० मनहुँ न आनिय अमरपति, रघुपति भक्त अकाज ।
अयश लोक परलोक दुख, दिन दिन शोकसमाज ॥
सुनु सुरेश उपदेश हमारा * रामहिं सेवक परम पियारा
मानत सुख सेवक सेवकाई * सेवक वैर वैर अधिकाई
यद्यपि सम नहिं राग न रोषू * गहहि न पाप पुराय गुण दोषू
कर्मप्रधान विश्व करि राखा * जो जस करै सो तसफल चाखा
तदपि करहिं सम विषम विहारा * भक्त अभक्त हृदय अनुसारा
अगुण अलेख अमान एकरस * राम सगुण भये भक्त प्रेमबस

राम सदा सेवक रुचि राखी * वेद पुराण साधु सुर साखी
अस जिय जानि तजहु कुटिलाई * करहु भरत पद प्रीति सुहाई
दो० राम भक्त परहित निरत, परदुख दुखी दयाल ।
भक्तशिरोमणि भरत ते, जनि डरपहु सुरपाल ॥
सत्यसिन्धु प्रभु सुरहितकारी * भरत राम आयसु अनुसारी
स्वारथ विवश विकल तुम होहू * भरत दोष नहिं राउर मोहू
सुनि सुरवर सुरगुरु वर बानी * भा प्रबोध मन मिटी गलानी
बरषि प्रसून हर्षि सुरराऊ * लगे सराहन भरत सुभाऊ
इहिविधि भरत चले मगु जाहीं * दशा देखि मुनि सिद्ध सिहाहीं
जबहिं राम कहि लेहिं उसासा * उमँगत प्रेम मनहुँ चहुँ पासा
द्रवहिं वचनसुनि कुलिश पखाना * पुरजन प्रेम न जाय बखाना
बीच वास करि यमुनहिं आये * निरखि नीर लोचन जल छाये
दो० रघुवर वर्ण विलोकि वर, वारि समेत समाज ।
होत विरह वारिधि मगन, चढ़े विवेक जहाज ॥
यमुनतीर तेहि दिन करि वासू * भयउ समय सम सबहि सुपासू
रातिहि घाट घाट की तरणी * आईं अगणित जाइँ न बरणी
प्रात पार भे एकहि खेवा * तोषे राम सखा करि सेवा
चले अन्हाइ नदिहि शिरनाई * साथ निषादनाथ लघु भाई
आगे मुनिवर वाहन आछे * राज समाज जाय सब पाछे
तेहि पाछे दोउ बन्धु पयादे * भूषण वसन वेष सुठि सादे
सेवक सुहृद सचिव सुत साथा * सुमिरत लषण सीय रघुनाथा
जहँ जहँ राम वास विश्रामा * तहँ तहँ करहिं सप्रेम प्रणामा
दो० मगुवासी नर नारि सुनि, धाम काम तजि धाइ ।
देखि स्वरूप सनेहवश, मुदित जन्म फल पाइ ॥
कहहिं सप्रेम एक इक पाहीं * रामलषण सखि होहिं कि नाहीं
वय वपु वसन रूप सोइ आली * शील सनेह सरिस सम चाली
वेष न सो सखि सीय न सङ्गा * आगे अनी चली चतुरङ्गा
नहिं प्रसन्न मुख मानस खेदा * सखि सन्देह होत इहि भेदा
तासु तर्क तियगण मन मानी * कहहिं सकलतोहिंसम न सयानी
तेहि सराहि वाणी फुर पूजी * बोली मधुर वचन तिय दूजी
कहि सप्रेम सब कथा प्रसंगू * जेहि विधि रामराज रस भंगू
भरतहि बहुरि सराहन लागी * शील सनेह सुभाव सुभागी

दो० चलत पयादे खात फल, पिता दीन तजि राज ।
जात मनावन रघुवरहि, भरत सरिस को आज ॥
भायप भक्ति भरत आचरणू * कहत सुनत दुख दूषण हरणू
जो कछु कहिय थोर सखि सोई * रामबन्धु अस काहे न होई
तब सब सानुज भरतहि देखे * भये धन्य युवती जन लेखे
सुनि गुण देखि दशा पछिताहीं * केकयि जननि योग सुत नाहीं
कोउ कह दूषण रानिहु नाहिन * विधि सबभांति हमहिं जो दाहिन
कहँ हमलोग वेद विधि हीना * लघुकुल तिय करतूति मलीना
बसहिं कुदेश कुगांव कुठामा * कहँ यह दरश पुण्यपरिणामा
अस अनन्द अचरज प्रतिग्रामा * जनु मरुभूमि कलपतरु जामा
दो० भरत दरश देखत खुलेहु, मगु लोगन्हकर भाग ।
जनु सिंहलवासिन्ह भयउ, विधिवशसुलभ प्रयाग ॥
निजगुण सहित रामगुणगाथा * सुनत जाहिं सुमिरत रघुनाथा
तीरथ मुनि आश्रम सुर धामा * निरखि निमज्जहिं करहिं प्रणामा
मनहीं मन मांगहिं वर येहू * सीय राम पद पद्म सनेहू
मिलहिं किरात कोल वनवासी * वैखानस वटु यती उदासी
करि प्रणाम पूछहिं जेहि तेही * केहि वन लषण राम वैदेही
ते प्रभु समाचार सब कहहीं * भरतहिं देखि जन्म फल लहहीं
जे जन कहहिं कुशल हम देखे * ते प्रिय राम लषण सम पेखे
इहि विधि बूझत सबहि सुबानी * सुनत राम वनवास कहानी
दो० तेहि वासर बस प्रातही, चले सुमिरि रघुनाथ ।
राम दरस की लालसा, भरत सरिस सब साथ ॥
मङ्गल शकुन होहिं सब काहू * फरकहिं सुखद विलोचन बाहू
भरतहिं सहित समाज उछाहू * मिलिहहिं राम मिटहिं दुखदाहू
करत मनोरथ जस जिय जाके * जाहिं सनेह सुरा सब छाके
शिथिल अङ्ग मगु पगडगडोलहिं * विह्वल वचन प्रेमवश बोलहिं
रामसखा तेहि समय दिखावा * शैलशिरोमणि सहज सुहावा
जासु समीप सरितपय तीरा * सीय समेत बसहिं दोउ वीरा
देखि करहिं सब दंडप्रणामा * कहि जय जानकिजीवन रामा
प्रेम मगन अस राज समाजू * जनु फिरि अवध चले रघुराजू
दो० भरत प्रेम तेहि समय जस, तस कहि सकै न शेषु ।
कविहि अगम जिमि ब्रह्मसुख, अहमम मलिनजनेषु ॥

सकल सनेह शिथिल रघुवरके * गये कोस दुइ दिनकर ढरके
जल थल देखि चले निशि बीते * कीन्ह गमन रघुनाथ पिरीते
उमा राम रजनी अवशेखा * जागे सीय सपन अस देखा
सहित समाज भरत जनु आये * नाथ वियोग ताप तन ताये
सकल मलिन मन दीन दुखारी * देखी सासु आन अनुहारी
सुनि सिय सपन भरे जल लोचन * भये शोचवश शोकविमोचन
लषण सपन यह नीक न होई * कठिन कुचाह सुनाइहि कोई
अस कहि बन्धु समेत अन्हाने * पूजि पुरारि साधु सनमाने

छं० सनमानि सुर मुनि वन्दि बैठे उतर दिशि देखत भये ।
नभ धूरि खग मृग भूरि भागे विकल प्रभु आश्रम गये ॥
तुलसी उठे अवलोकि कारण काह चित चकित रहे ।
सब समाचार किरात कोलन आइ तेहि अवसर कहे ॥

सो० सुनत सुमङ्गल बैन, मनप्रमोद तन पुलक भर ।
शरद सरोरुह नैन, तुलसी भरे सनेह जल ॥

बहुरि शोचवश भे सियरमनू * कारण कवन भरत आगमनू
एक आइ अस कहा बहोरी * सेन सङ्ग चतुरङ्ग न थोरी
सो सुनि रामहिं भा अति शोचू * इत पितु वच उत बन्धु सकोचू
भरतस्वभाव समुझि मनमाहीं * प्रभुचितहित थिति पावत नाहीं
समाधान तब भा यह जाने * भरत कहे महँ साधु सयाने
लषण लखेउ प्रभु हृदय खँभारू * कहत समय सम नीति विचारू
बिनु पूछे कछु कहउँ गुसांई * सेवक समय न ढीठ ढिठाई
तुम सर्वज्ञ शिरोमणि स्वामी * आपुनि समुझि कहौं अनुगामी

दो० नाथ सुहृद सुठि सरल चित, शील सनेह निधान ।
सबपर प्रीति प्रतीति जिय, जानिय आपु समान ॥

विषयी जीव पाइ प्रभुताई * मूढ़ मोह वश होहिं जनाई
भरत नीतिरत साधु सुजाना * प्रभुपद प्रेम सकल जग जाना
तेऊ आज राज पद पाई * चले धर्म मर्याद मिटाई
कुटिल कुबन्धु कुअवसर ताकी * जानि राम वनवास इकाकी
करि कुमन्त्र मन साजि समाजू * आये करन अकण्टक राजू
कोटि प्रकार कलपि कुटिलाई * आये दल बटोरि दोउ भाई
जो जिय होत न कपट कुचाली * केहि सुहात रथ वाजि गजाली
भरतहिं दोष देइ को जाये * जग बौराइ राज पद पाये

दो० शशि गुरुतियगामी नहुष, चढ़े भूमिसुर यान ।
लोक वेद ते विमुख भा, अधम को वेनुसमान ॥
सहसबाहु सुरनाथ त्रिशंकू * केहि न राजमद दीन्ह कलंकू
भरत कीन्ह यह उचित उपाऊ * रिपु रण रञ्च न राखब काऊ
एक कीन्ह नहिं भरत भलाई * निदरे राम जानि असहाई
समुझि परिहि सो आजु विशेखी * समर सरोष रामरुख देखी
इतना कहत नीति रस भूला * रणरस विटपपुलकि जिमि फूला
प्रभुपद वन्दि शीशरज राखी * बोले सत्य सहज बल भाखी
अनुचित नाथ न मानब मोरा * भरत हमहिं उपचार न थोरा
कहँलगि सहिय रहिय मनमारे * नाथ साथ धनु हाथ हमारे
दो० क्षत्रिजति रघुकुल जनम, रामअनुज जगजान ।
लातहु मारे चढ़त शिर, नीच को धूरि समान ॥
उठि कर जोरि रजायसु मांगा * मनहुँ वीररस सोवत जागा
बाँधि जटा शिर कसि कटिभाथा * साजि शरासन शायक हाथा
आजु राम सेवक यश लेऊँ * भरतहि समर सिखावन देऊँ
राम निरादर कर फल पाई * सोवहु समरसेज दोउ भाई
आइ बना भल सकल समाजू * प्रकट करौं रिस पाछिल आजू
जिमि करिनिकर दलै मृगराजू * लेइ लपेटि लवा जिमि बाजू
तैसहि भरतहि सेन समेता * सानुज निदरि निपातौं खेता
जो सहाय कर शङ्कर आई * तदपि हतौं रण राम दुहाई
दो० अति सरोष माषे लषण, लखि सुनि शपथप्रमान ।
सभय विलोकत लोकपति, चाहत भभरि भगान ॥
जग भा मगन गगन भै बानी * लषण बाहुबल विपुल बखानी
तात प्रताप प्रभाव तुम्हारा * को कहिसक को जाननहारा
अनुचित उचित काज कछु होई * समुझि करिय भल कह सबकोई
सहसा करि पाछे पछिताहीं * कहहिं वेद बुध ते बुध नाहीं
सुनि सुर वचन लषण सकुचाने * राम सीय सादर सनमाने
कही तात तुम नीति सुहाई * सब ते कठिन राजमद भाई
जो अँचवत मातहिं नृप तेई * नाहिंन साधु सभा जिन्ह सेई
सुनहु लषण भल भरत सरीखा * विधि प्रपञ्च महँ सुना न दीखा
दो० भरतहि होइ न राजमद, विधि हरि हर पद पाइ ।
कबहुँ कि कांजी शीकरन्हि, क्षीरसिन्धु बिनशाइ ॥

तिमिरतरुण तरणिहिंसक गिलई * गगनमगन मकु मेघहिमिलई
गोपद जल बूड़हिं घटयोनी * सहज क्षमा बरु छांड़हिं क्षोनी
मशक फूंक बरु मेरु उड़ाई * होइ न नृपमद भरतहिं भाई
लषण तुम्हारि शपथ पितुआना * शुचि सुवन्धु नहिं भरतसमाना
सगुण क्षीर अवगुण जल ताता * मिले रचे परपञ्च विधाता
भरत हंस रविवंश तड़ागा * जनमि कीन्हगुण दोष विभागा
गहि गुण पय तजि अवगुण वारी * निजयश जगत कीन्ह उजियारी
कहत भरत गुण शील सुभाऊ * प्रेम पयोधि मगन रघुराऊ
दो० सुनि रघुवर वाणी विबुध, देखि भरत पर हेतु ।
लगे सराहन सहसमुख, प्रभु को कृपानिकेतु ॥
जो न होत जग जन्म भरतको * सकल धरमधुर धरणि धरतको
कविकुल अगम भरत गुणगाथा * को जानै तुम बिनु रघुनाथा
लषण राम सिय सुनिसुर बानी * अति सुख लहेउ न जाइ बखानी
इहां भरत सब सहित सुहाये * मन्दाकिनी पुनीत अन्हाये
सरित समीप राखि सब लोगा * मांगिमातुगुर सचिव नियोगा
चले भरत जहँ सिय रघुराई * साथ निषादनाथ लघु भाई
समुझि मातु करतब सकुचाहीं * करत कुतर्क कोटि मनमाहीं
राम लषण सिय सुनि मम नाऊँ * उठि जनि अनत जाहिं तजिठाऊँ
दो० मातुमते महँ जानि मोहिं, जो कछु करहिं सो थोर ।
अघअवगुण तजि आदरहिं, समुझि आपनी ओर ॥
जो परिहरहिं मलिनमन जानी * जो सनमानहिं सेवक मानी
मोरे शरण राम की पनहीं * रामसुस्वामि दोष सब जनहीं
जग यशभाजन चातक मीना * नेम प्रेम निज निपुण नवीना
अस मन गुणत चले मगुजाता * सकुचिसनेह शिथिलसब गाता
फेरति मनहुँ मातु कृत खोरी * चलत भक्तिबल धीरज धोरी
जब समुझहिं रघुनाथ सुभाऊ * तब पथ परत उतावल पाऊ
भरत दशा तेहि अवसर कैसी * जलप्रवाह जलअलिगति जैसी
देखि भरत कर शोच सनेहू * भा निषाद तेहि समय विदेहू
दो० लगे होन मङ्गलशकुन, सुनि गुनि कहत निषाद ।
मिटिहि शोच होइहि हरष, पुनि परिणाम विषाद ॥
सेवक वचन सत्य सब जाने * आश्रमनिकट जाय नियराने
भरत दीख वन शैल समाजू * मुदितक्षुधित जनु पाइ सुनाजू

ईति भीति जनु प्रजा दुखारी ※ त्रिविध ताप पीड़ित ग्रहमारी
जाइ सुराज सुदेश सुखारी ※ भई भरतगति तेहि अनुहारी
राम वास वन सम्पति भ्राजा ※ सुखी प्रजा जनु पाइ सुराजा
सचिव विराग विवेक नरेशू ※ विपिन सुहावन पावन देशू
भट यम नियम शैल रजधानी ※ शांति सुमति शुचि सुन्दररानी
सकल अङ्ग सम्पन्न सुराऊ ※ रामचरण आश्रित चितचाऊ

दो० जीति मोह महिपाल दल, सहित विवेक भुआल ।
करत अकण्टक राजपुर, सुख सम्पदा सुकाल ॥

वन प्रदेश मुनि वास घनेरे ※ जनु पुर नगर गांव गण खेरे
विपुल विचित्र विहग मृगनाना ※ प्रजा समाज न जाइ बखाना
खरहा करि हरि बाघ वराहा ※ वृषभ महिष वृक साज सराहा
वैर विहाय चरहिं इक सङ्गा ※ जहँ तहँ मनहुँ सेन चतुरङ्गा
झरना झरहिं मत्तगज गाजहिं ※ मनहुँ निशान विविधविधिबाजहिं
चकचकोर चातकशुक पिकगन ※ कूजत मञ्जु मराल मुदितमन
अलिगण गावत नाचत मोरा ※ जनु सुराज मङ्गल चहुँओरा
वेलि विटप तृण सफल सफूला ※ सब समाज मुद मङ्गलमूला

दो० राम शैल शोभा निरखि, भरत हृदय अतिप्रेम ।
तापस तप फल पाइ जिमि, सुखी सिराने नेम ॥

तब केवट ऊंचे चढ़ि जाई ※ कहा भरत सन भुजा उठाई
नाथ देखु यह विटप विशाला ※ पाकर जम्बु रसाल तमाला
तिन तरुवरन्ह मध्य वट सोहा ※ मञ्जु विशाल देखि मन मोहा
नील सघन पल्लव फल लाला ※ अविचल छांह सुखद सब काला
मानहुँ तिमिर अरुणमय रासी ※ विरची विधि सकेलि सुषमासी
तेहि तरु सरित समीप गोसांई ※ रघुवर पर्णकुटी जहँ छाई
तुलसी तरुवर विविध सुहाये ※ कहुँ सियपिय कहुँ लषण लगाये
वट छाया वेदिका बनाई ※ सिय निजपाणि सरोज सुहाई

दो० जहँ बैठे मुनिगण सहित, नित सियराम सुजान ।
सुनहिं कथा इतिहास सब, आगम निगम पुरान ॥

सखा वचन सुनि विटप निहारी ※ उमँगे भरत विलोचन वारी
करत प्रणाम चले दोउ भाई ※ कहत प्रीति शारद सकुचाई
हर्षहिं निरखि राम पद अङ्का ※ मानहुँ पारस पायहु रङ्का
रज शिर धरि हियनयन लगावहिं ※ रघुवरमिलनसरिस सुख पावहिं

देखि भरतगति अकथ अतीवा * प्रेम मगन मृग खग जड़ जीवा
सखहि सनेह विवश मग भूला * कहि सुपन्थ सुर वर्षहिं फूला
निरखि सिद्ध साधक अनुरागे * सहज सनेह सराहन लागे
होत न भूतल भाव भरत को * अचर सचर चर अचर करत को

दो० प्रेम अमिय मन्दर विरह, भरत पयोधि गँभीर ।
मथि प्रकटे सुर साधुहित, कृपासिन्धु रघुवीर ॥

सखा समेत मनोहर जोटा * लखेउ न लषण सघन वनओटा
भरत दीख प्रभु आश्रम पावन * सकल सुमङ्गलसदन सुहावन
करत प्रवेश मिटा दुखदावा * जनु योगी परमारथ पावा
देखे लषण भरत प्रभु आगे * पूछत वचन कहत अनुरागे
शीश जटा कटि मुनि पट बांधे * तूण कसे कर शर धनु कांधे
वेदी पर मुनि साधु समाजू * सीय सहित राजत रघुराजू
वलकलवसन जटिल तनुश्यामा * जनु मुनिवेष कीन्ह रतिकामा
कर कमलन धनु शायक फेरत * जीकी जरनि हरत हँसि हेरत

दो० लसत मञ्जु मुनि मण्डली, मध्य सीय रघुनन्द ।
ज्ञान सभा जनु तनु धरे, भक्ति सच्चिदानन्द ॥

सानुज सखा समेत मगनमन * बिसरे हर्ष शोकसुख दुखगन
पाहि नाथ कहि पाहि गुसाईं * भूतल परे लकुट की नाईं
वचन सप्रेम लषण पहिंचाने * करत प्रणाम भरत जियजाने
बन्धु सनेह सरस यहि ओरा * उत साहिब सेवा बरजोरा
मिलि न जाइ नहिं गुदरत बनई * सुकवि लषणमनकी गति भनई
रहे राखि सेवा पर भारू * चढ़ी चङ्ग जनु खैंच खिलारू
कहत सप्रेम नाइ महिमाथा * भरत प्रणाम करत रघुनाथा
उठे राम सुनि प्रेम अधीरा * कहुँ पट कहुँ निषङ्ग धनुतीरा

दो० बरबस लिये उठाय उर, लाये कृपानिधान ।
भरत रामकी मिलनि लखि, बिसरे सबहिं अपान ॥

मिलनिप्रीति किमि जाहि बखानी * कविकुल अगम कर्म मन वानी
परम प्रेम पूरण दोउ भाई * मनबुधिचित अहमिति बिसराई
कहहु सप्रेम प्रकट को करई * केहि छाया कवि मति अनुसरई
कविहि अर्थ आखरबल सांचा * अनुहर तालगतिहि नट नाचा
अगम सनेह भरत रघुवर को * जहँ न जाइ मन विधिहरिहर को
सो मैं बरणि कहौं केहि भांती * बाजु सुराग कि गांड़रि तांती

मिलनि विलोकि भरतरघुवरकी * सुरगणसभय धुकधुकी धरकी
समुझाये सुरगुरु जड़ जागे * वरषि प्रसून प्रशंसन लागे
दो० मिलि सप्रेम रिपुसूदनहिं, केवट भेंटे राम ।
भूरि भाइ भेंटे भरत, लक्ष्मण करत प्रणाम ॥
भेंटेउ लषण ललकि लघुभाई * बहुरि निषाद लीन्ह उरलाई
पुनि मुनिगण दोउ भाइन वन्दे * अभिमत आशिष पाइ अनन्दे
सानुज भरत उमँगि अनुरागा * धरि शिर सियपद पद्म परागा
पुनि पुनि करत प्रणाम उठाये * सिय कर कमल परसि बैठाये
सीय अशीश दीन्ह मनमाहीं * मगन सनेह देह सुधि नाहीं
सबविधि सानुकूल लखि सीता * भे अशोच उर अपडर बीता
कोउ कछु कहै न कोउ कछु पूछा * प्रेमभरा मन निजगति छूछा
तेहि अवसर केवट धीरज धरि * जोरिपाणि बिनवत प्रणाम करि
दो० नाथ साथ मुनिनाथ के, मातु सकल पुरलोग ।
सेवक सेनप सचिव सब, आये विकल वियोग ॥
शीलसिन्धु सुनि गुरु आगमनू * सीय समीप राखि रिपुदमनू
चले सवेग राम तेहिकाला * धीर धर्मधुर दीनदयाला
गुरुहिं देखि सानुज अनुरागे * दण्डप्रणाम करन प्रभु लागे
मुनिवर धाइ लिये उरलाई * प्रेम उमँगि भेंटे दोउ भाई
प्रेम पुलकि केवट कहि नामू * कीन्ह दूरिते दण्डप्रणामू
राम सखा ऋषि बरबस भेंटे * जनु महि लुटत सनेह समेटे
रघुपति भक्ति सुमङ्गल मूला * नभ सराहि सुर वर्षहिं फूला
[illegible]हिसम निपट नीच कोउ नाहीं * बड़ वशिष्ठसम को जगमाहीं
[illegible]० जेहि लखि लषणहुँते अधिक, मिले मुदित मुनिराउ ।
सो सीतापति भजन को, प्रकट प्रताप प्रभाउ ॥
[illegible]त लोग राम सब जाना * करुणाकर सुजान भगवाना
[illegible]जेहि भांति रहा अभिलाखी * तेहि तेहिकी तैसी रुचि राखी
[illegible]नुज मिलि पलमहँ सब काहू * कीन्ह दूरि दुख दारुण दाहू
[illegible] बड़िबात राम कै नाहीं * जिमि घटकोटि एक रविछाहीं
[illegible]लि केवटहि उमँगि अनुरागा * पुरजन सकल सराहहिं भागा
देखी राम दुखित महतारी * जनु सुबेलि अवली हिममारी
प्रथम राम भेंटे कैकेयी * सरल स्वभाव भक्तिमति भेयी
पगपरि कीन्ह प्रबोध बहोरी * काल कर्म विधि शिरधरि खोरी

दो० भेंटे रघुवर मातु सब, करि प्रबोध परितोष ।
अम्ब ईश आधीन जग, काहु न देइय दोष ॥
गुरुतियपद बन्दे दोउ भाई * सहित विप्रतिय जे सँग आई
गङ्ग गौरिसम सब सनमानी * देहिं अशीश मुदित मृदुबानी
गहिपद लगे सुमित्रा अङ्का * जनु भेंटी सम्पति अति रङ्का
पुनि जननी चरणन दोउ भ्राता * परे प्रेम व्याकुल सब गाता
अति अनुराग अम्ब उरलाये * नयन सनेह सलिल अन्हवाये
तेहि अवसर कर हर्ष विषादू * किमि कवि कहै मूकजिमिस्वादू
मिलि जननिहिं सानुज रघुराऊ * गुरुसन कहेउ कि धारिय पाऊ
पुरजन पाइ मुनीश नियोगू * जल थल ताकि तकि उतरे लोगू
दो० महिसुर मन्त्री मातु गुरु, गने लोग लिय साथ ।
पावन आश्रम गमन किय, भरत लषण रघुनाथ ॥
सीय आइ मुनिवर पग लागी * उचित अशीश लही मनमांगी
गुरुपत्निहि मुनितियन्ह समेता * मिलि सप्रेम कहि जाइ न जेता
बन्दि बन्दि पद सिय सबहीके * आशिष वचन लहे प्रिय जीके
सासु सकल जब सीय निहारी * मूंदेउ नयन सहमि सुकुमारी
परी वधिक वश मनहुँ मराली * काह कीन्ह करतार कुचाली
तिन्हसियनिरखिनिपटदुखपावा * सो सब सहिय जो दैव सहावा
जनकसुता तब उर धरि धीरा * नीलनलिन लोचन भरि नीरा
मिली सकल सासुन शिर नाई * तेहि अवसर करुणा महि छाई
दो० लागि लागि पग सबनि सिय, भेंटति अति अनुराग ।
हृदय अशीशहिं प्रेम वश, रहिहौ भरी सुहाग ॥
विकल सनेह सीय सब रानी * बैठन सबहिं कहेउ गुरु ज्ञानी
प्रथम कही जगगति मुनिनाथा * कहेउ कछुक परमारथ गाथा
नृपकर सुरपुर गमन सुनावा * सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा
मरण हेतु निज नेह विचारी * भे अति विकल धीर धुरधारी
कुलिश कठोर सुनत कटुबानी * विलपतलषण सीय सब रानी
शोक विकल अति सकलसमाजू * मानहुँ राज अकाजेउ आजू
मुनिवर बहुरि राम समुझाये * सहितसमाज सुसरित अन्हाये
व्रतनिरम्बु तेहि दिन प्रभु कीन्हा * मुनिहुँ कहे जल काहु न लीन्हा
दो० भोर भये रघुनन्दनहिं, जो मुनि आयसु दीन्ह ।
श्रद्धा भक्ति समेत प्रभु, सो सब सादर कीन्ह ॥

करि पितु क्रिया वेद जस बरणी * भे पुनीत पातक तम तरणी
जासु नाम पावक अघ तूला * सुमिरत सकल सुमङ्गलमूला
शुद्ध सो भये साधु सम्मत अस * तीरथ आवाहन सुरसरि जस
शुद्ध भये दुइ बासर बीते * बोले गुरुसन राम पिरीते
नाथ लोग सब निपट दुखारी * कन्दमूल फल अम्बु अहारी
सानुज भरत सचिव सब माता * देखि मोहिं पल जिमि युग जाता
सब समेत पुर धारिय पाऊ * आपु इहां अमरावति राऊ
बहुत कहेउँ सब कियउँ ढिठाई * उचित होइ तस करिय गुसांई

दो० धर्म हेतु करुणायतन, कस न कहहु अस राम ।
लोकदुखितदिन दुइदरश, देखि लहहिं विश्राम ॥

राम वचन सुनि सभय समाजू * जनु जलनिधि महँ विकल जहाजू
सुनि मुनिगिरा सुमङ्गलमूला * भयउ मनहुँ मारुत अनुकूला
पावनपय तिहुँकाल अन्हाहीं * जेहि विलोकि अघओघ नशाहीं
मङ्गल मूरति लोचन भरि भरि * निरखहिं हर्षि दण्डवत करि करि
राम शैल वन देखन जाहीं * जहँ सुख सकल सकल दुख नाहीं
झरना झरहिं सुधासम वारी * त्रिविधताप हर त्रिविध बयारी
विटपबेलि तृण अगणित जाती * फल प्रसून पल्लव बहुभांती
सुन्दर शिला सुखद तरुछाहीं * जाइ बरणि छवि वन केहि पाहीं

दो० सरन सरोरुह जल विहग, कूजत गुञ्जत भृङ्ग ।
वैर विगत विहरत विपिन, मृग विहङ्ग बहुरङ्ग ॥

कोल किरात भिल्ल वनवासी * मधु शुचि सुन्दर स्वादु सुधासी
भरि भरि पर्णपुटी रचि रूरी * कन्द मूल फल अंकुर जूरी
सबहिं देहिं करि विनयप्रणामा * कहि कहि स्वादु भेद गुण नामा
देहिं लोग बहुमोल न लेहीं * फेरत राम दोहाई देहीं
कहहिं सनेह मगन मृदुबानी * मानत साधु प्रेम पहिंचानी
तुम सुकृती हम नीच निषादा * पावा दर्शन राम प्रसादा
हमहिं अगम अति दरशतुम्हारा * जस मरु धरणि देवसरि धारा
राम कृपालु निषाद निवाजा * परिजन प्रजा चलिय जस राजा

दो० यह जिय जानि सकोच तजि, करिय छोह लखि नेहु ।
हमहिं कृतारथ करनलागि, फल तृण अंकुर लेहु ॥

तुमप्रिय पाहुन वन पगुधारे * सेवा योग न भाग हमारे
देव कहा हम तुमहिं गुसांई * ईंधन पात किरात मिताई

यह हमारि अतिबड़ि सेवकाई * लेहिं न बासन वसन चुराई
हम जड़ जीव जीवगण घाती * कुटिल कुचाली कुमति कुजाती
पाप करत निशि वासर जाहीं * नहिं कटिपट नहिं पेट अघाहीं
सपनेहुँ धर्म बुद्धि कस काऊ * यह रघुनन्दन दरश प्रभाऊ
जबते प्रभु पद पद्म निहारे * मिटे दुसह दुख दोष हमारे
वचन सुनत पुरजन अनुरागे * तिनके भाग सराहन लागे

छं० लागे सराहन भाग सब अनुराग वचन सुनावहीं ।
बोलनि मिलनि सियरामचरणसनेह लखि सुख पावहीं ॥
नरनारि निदरहिं नेह निज सुनि कोल भिल्लन की गिरा ।
तुलसी कृपा रघुवंशमणि की लोह लै नौका तरा ॥

सो० विहरहिं वन चहुँ ओर, प्रतिदिन प्रमुदित लोग सब ।
जल जिमि दादुर मोर, भये पीन पावस प्रथम ॥

पुरजन नारि मगन अति प्रीती * वासर जाहिं पलक सम बीती
सीय सासु प्रतिवेष बनाई * सादर करहिं सरिस सेवकाई
लखा न मर्म राम बिनु काहू * माया वश सिय माया नाहू
सीय सासु सेवा सब कीन्ही * तिन्हलहिसुखसिखआशिषदीन्ही
लखिसियसहित सरल दोउ भाई * कुटिल रानि पछिताइ अघाई
अब जियमहँ याचति कैकेयी * मोहिं न बीच विधि मीचु न देई
लोकहु वेद विदित कवि कहहीं * रामविमुख खल नरक न लहहीं
यह संशय सबके मन माहीं * रामगमन विधि अवध कि नाहीं

दो० निशि न नींद नहिं भूख दिन, भरत विकल सुठि शोच ।
नीच कीच विच मगन जस, मीनहिं सलिल सकोच ॥

कीन्ह मातु मिसु काल कुचाली * ईति भीति जस पाकत शाली
केहि विधि होइ राम अभिषेकू * मोहिं अब फुरत उपाय न एकू
अवशि फिरहिं गुरुआयसु मानी * मुनि पुनि कहब रामरुचि जानी
मातु कहें बहुरहिं रघुराऊ * रामजननि हठ करब कि काऊ
मोहिं अनुचर कर केतिक बाता * तेहिमहँ कुसमय वाम विधाता
जो हठ करौं तो निपट कुकरमू * हरगिरिते गुरु सेवक धरमू
एकौ युक्ति न मन ठहरानी * शोचत भरतहिं रैनि सिरानी
प्रात अन्हाइ प्रभुहिं शिरनाइ * बैठत पठये ऋषय बुलाई

दो० गुरु पद कमल प्रणाम करि, बैठे आयसु पाइ ।
विप्र महाजन सचिव सब, जुरे सभासद आइ ॥

बोले मुनिवर समय समाना * सुनहु सभासद भरत सुजाना
धर्मधुरीण भानुकुल भानू * राजा राम स्ववश भगवानू
सत्यसिन्धु पालक श्रुतिसेतू * राम जन्म जग मङ्गल हेतू
गुरु पितु मातु वचन अनुसारी * खल दल दलन देवहितकारी
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ * कोउ न राम सम जानु यथारथ
विधिहरिहरशशिरविदिशिपाला * माया जीव करम कलिकाला
अहिप महिप जहँलगि प्रभुताई * योग सिद्ध निगमागम गाई
करि विचार जिय देखहु नीके * राम रजाय शीश सबहीके
दो० राखे राम रजाय रुख, हम सब कर हित होइ ।
समुझि सयाने करहु अब, सब मिलि सम्मत सोइ ॥
सब कहँ सुखद राम अभिषेकू * मङ्गलमूल मोद मगु एकू
केहिविधि अवध चलहिं रघुराई * कहहु समुझि सोइ करैं उपाई
सब सादर मुनिवर सुनि बानी * नय परमारथ स्वारथ सानी
उतर न आव लोग भे भोरे * तब शिरनाय भरत कर जोरे
भानुवंश भे भूप घनेरे * अधिक एक ते एक बड़ेरे
जन्म हेतु सब कहँ पितुमाता * करम शुभाशुभ देइ विधाता
दलि दुख तजे सकल कल्याना * सब अशीश राउर जगजाना
सो गुसाइँ विधिगति जेइ छेकी * सकै को टारि टेक जो टेकी
दो० बूझिय मोहिं उपाय अब, सो सब मोर अभाग ।
सुनि सनेह मय वचन गुरु, उर उपजा अनुराग ॥
तात बात फुर राम कृपाहीं * रामविमुख सुख सपनेहुँ नाहीं
सकुचौं तात कहत इकबाता * अरध तजहिं बुध सरबसजाता
तुम कानन गमनहु दोउ भाई * फिरिहहिं लषण सीय रघुराई
सुनि शुभवचन हर्ष दोउ भ्राता * भे प्रमोद परिपूरण गाता
मन प्रसन्न तन तेज विराजा * जनु जिय राउ राम भे राजा
बहुतलाभ लोगन्ह लघु हानी * सम दुख सुख सब रोवहिं रानी
कहहिं भरत मुनि कहा सो कीन्हें * फल जग जीवन अभिमत दीन्हें
कानन करउँ जन्म भरि वासू * इहिते अधिक न मोर सुपासू
दो० अन्तरयामी राम सिय, तुम सर्वज्ञ सुजान ।
जो फुर कहहुँ तो नाथ निज, कीजिय वचन प्रमान ॥
भरत वचन सुनि देखि सनेहू * सभासहित मुनि भयउ विदेहू
भरत शील महिमा जलरासी * मुनिमति ठाढ़ि तीर अबलासी

भा चह पार यतन बहु हेरा * पावति नाव न बोहित बेरा
और करहि को भरत बड़ाई * सरसीपी की सिन्धु समाई
भरत मुनिहिं मन भीतर पाये * सहित समाज रामपहँ आये
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह सुआसन * बैठे सब मुनि सुनि अनुशासन
बोले मुनिवर वचन विचारी * देश काल अवसर अनुहारी
सुनहु राम सर्वज्ञ सुजाना * धर्म नीति गुण ज्ञान निधाना

दो० सबके उर अन्तर बसहु, जानहु भाव कुभाय ।
पुरजन जननी भरतहित, होइ सो करिय उपाय ॥

आरत कहहिं विचार न काऊ * सूझ जुआरिहि आपन दाऊ
सुनि मुनि वचन कहत रघुराऊ * नाथ तुम्हारेहि हाथ उपाऊ
सबकर हित रुख राउर राखे * आयसु दिये मुदित फुर भाखे
प्रथम जो आयसु मोकहँ होई * माथे मानि करौं सिख सोई
पुनि जेहि कहँ जस होव रजाई * सो सब भांति करिहि सेवकाई
कह मुनि राम सत्य तुम भाखा * भरत सनेह विचार न राखा
तेहिते कहौं बहोरि बहोरी * भरत भक्ति भइ मम मति भोरी
मोरे जान भरत रुचि राखी * जो कीजिय सो शुभ शिव साखी

दो० भरत विनय सादर सुनिय, करिय विचार बहोरि ।
करब साधुमत लोकमत, नृपनय निगम निचोरि ॥

गुरु अनुराग भरत पर देखी * राम हृदय आनन्द विशेषी
भरतहिं धर्म धुरन्धर जानी * निज सेवक तन मानस बानी
बोले गुरु आयसु अनुकूला * वचन मञ्जु मृदु मङ्गल मूला
नाथ शपथ पितु चरण दुहाई * भयउ न भुवन भरत सम भाई
जे गुरुपद अम्बुज अनुरागी * ते लोकहु वेदहु बड़भागी
राउर जापर अस अनुरागू * को कहिसकै भरत सम भागू
लखि लघुबन्धु बुद्धि सकुचाई * करत वदन पर भरत बड़ाई
भरत कहहिं सो किये भलाई * अस कहि राम रहे अरगाई

दो० तब मुनि बोले भरतसन, सब सकोच तजि तात ।
कृपासिन्धु प्रिय बन्धु सन, कहहु हृदय की बात ॥

सुनि मुनि वचन राम रुख पाई * गुरुसाहिब अनुकूल अघाई
लखि अपने शिर सब छरभारू * कहि न सकैं कछु करैं विचारू
पुलक शरीर सभा भे ठाढ़े * नीरज नयन नेह जल बाढ़े
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा * यहिते अधिक कहौं मैं काहा

मैं जानौं निज नाथ सुभाऊ * अपराधिहु पर कोह न काऊ
मोपर कृपा सनेह विशेखी * खेलत खुनस कबहुँ नहिं देखी
शिशुपन ते परिहरेउ न संगू * कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू
मैं प्रभु कृपा रीति जिय जोहीं * हारेहु खेल जितावहिं मोहीं
दो० महूं सनेह सकोच वश, सम्मुख कहेउँ न बैन ।
दरशन तृप्ति न आजु लगि, प्रेम पियासे नैन ॥
विधि न सकेउ सहि मोर दुलारा * नीच बीच जननी मिसु पारा
इहौ कहत मोहिं आजु न शोभा * आपुनसमुझिसाधु शुचि कोभा
मातु मन्द मैं साधु सुचाली * उर अस आनत कोटि कुचाली
फरै कि कोदव बालि सुशाली * मुकता स्रवै कि शम्बुकताली
सपनेहुँ दोष कलेश न काहू * मोर अभाग उदधि अवगाहू
विनु समुझे निज अघ परिपाकू * जानेउ जाइ यतन कह काकू
हृदय हेरि हारेउँ सब ओरा * एकहि भांति भलिहि भल मोरा
गुरु गुसाइँ साहिब सियरामू * लागत मोहिं नीक परिणामू
दो० साधुसभा प्रभु गुरु निकट, कहौं सुथल सति भाउ ।
प्रेम प्रपञ्च कि झूंठ फुर, जानहिं मुनि रघुराउ ॥
भूपति मरण प्रेम प्रण राखी * जननी कुमति जगत सब साखी
देखि न जाहिं विकल महतारी * जरहिं दुसह ज्वर पुर नर नारी
महीं सकल अनरथ कर मूला * सो सुनि समुझि सहौं सब शूला
सुनि वन गमन कीन्ह रघुनाथा * करि मुनिवेष लषण सिय साथा
विनु पनहीं अरु प्यादेहि पाये * शङ्कर साखि रह्यों इहि धाये
बहुरि निहारि निषाद सनेहू * कुलिश कठिन उर भयउ न बेहू
अब सब आंखिन देखेउँ आई * जियत जीव जड़ सबै सहाई
जिनहिंनिरखिमगुसांपिनिबीछी * तजहिं विषम विष तामस तीछी
दो० तेइ रघुनन्दन लषण सिय, अनहित लागे जाहि ।
तासु तनय तजि दुसह दुख, दैव सहावै काहि ॥
सुनि अति विकलभरत वरबानी * आरति प्रीति विनय नय सानी
शोक मगन सब सभा खँभारू * मनहुँ कमलवन पर्‍यो तुषारू
कहि अनेकविधि कथा पुरानी * भरतप्रबोध कीन्ह मुनिज्ञानी
बोले उचित वचन रघुनन्दू * दिनकरकुल कैरववन चन्दू
तात जीय जनि करहु गलानी * ईश अधीन जीवगति जानी
तीनकाल त्रिभुवन मत मोरे * पुण्यश्लोक तात कर तोरे

उर आनत तुमपर कुटिलाई * जाइ लोक परलोक नशाई
दोष देहिं जननिहिं जड़ तेई * जिन्ह गुरु साधु सभा नहिं सेई

दो० मिटहिं पाप परपञ्च सब, अखिल अमङ्गल भार।
लोक सुयश परलोकसुख, सुमिरत नाम तुम्हार॥

कहौं सुभाव सत्य शिव साखी * भरत भूमि रह राउर राखी
तात कुतर्क करहु जनि जाये * वैर प्रेम नहिं दुरै दुराये
मुनिगण निकट विहँग मृगजाहीं * बाधक वधिक विलोकि पराहीं
हित अनहित पशु पक्षिउ जाना * मानुष तनु गुण ज्ञान निधाना
तात तुमहिं मैं जानौं नीके * करौं कहा असमञ्जस जीके
राखेउ राउ सत्य मोहिं त्यागी * तन परिहरेउ प्रेम प्रण लागी
तासु वचन मेटत मन शोचू * तेहिते अधिक तुम्हार सँकोचू
तापर गुरु मोहिं आयसु दीन्हा * अवशि जो कहहु चहौं सो कीन्हा

दो० मन प्रसन्नकरि सकुच तजि, कहहु करौं सो आज।
सत्यसिन्धु रघुवर वचन, सुनि भा सुखी समाज॥

सुरगण सहित सभय सुरराजू * शोचहिं चाहत होन अकाजू
करत विचार बनत कछु नाहीं * राम शरण सब के मनमाहीं
बहुरि विचार परस्पर कहहीं * रघुवर भक्त भक्तिवश अहहीं
सुधि करि अम्बरीष दुर्वासा * भे सुर सुरपति निपट निरासा
सहे सुरन्ह बहुकाल विषादा * नरहरि किये प्रकट प्रहलादा
लगिलगिकान कहहिं धुनि माथा * अब सुरकाज भरत के हाथा
आन उपाय न देखिय देवा * मानत राम सुसेवक सेवा
हिय सप्रेम सेवहिं सब भरतहिं * निजगुणशील राम वश करतहिं

दो० सुनि सुरमत सुरगुरु कहेउ, भल तुम्हार बड़भाग।
सकल सुमङ्गल मूल जग, भरत चरण अनुराग॥

सीतापति सेवक सेवकाई * कामधेनु शत सरिस सुहाई
भरत भक्ति तुम्हरे मन आई * तजहु शोच विधि बात बनाई
देखि देवपति भरत प्रभाऊ * सहज स्वभाव विवश रघुराऊ
मन थिर करहु देव डर नाहीं * भरतहि जानि राम परिछाहीं
सुनि सुरगुरु सुर सम्मत शोचू * अन्तर्यामी प्रभुहि सकोचू
निज शिरभार भरत जियजानी * करत कोटिविधि उर अनुमानी
करि विचार मन दीन्हो टीका * राम रजायसु आपन नीका
निज प्रण तजि राखेउ प्रण मोरा * छोह सनेह कीन्ह नहिं थोरा

दो० कीन्ह अनुग्रह अमितअति, सब विधि सीतानाथ ।
करि प्रणाम बोले भरत, जोरि जलज युग हाथ ॥
कहउँ कहावउँ का अब स्वामी * कृपा अम्बुनिधि अन्तर्यामी
गुरु प्रसन्न साहब अनुकूला * मिटी मलिन मनकलपित शूला
अपडर डरउँ न शोच समूले * रविहि न दोष देव दिशिभूले
मोर अभाग मातु कुटिलाई * विधिगति विषम कालकठिनाई
पांव रोपि सबमिलि मोहिंघाला * प्रणतपाल प्रण आपन पाला
यह नइ रीति न राउरि होई * लोकहु वेद विदित नहिं गोई
जग अनभल भल एक गुसांई * कहिय होइ भल कासु भलाई
देव देवतरु सरिस स्वभाऊ * सम्मुख विमुख न काहुहिकाऊ
दो० जाइ निकट पहिंचानि तरु, छांह शमन सब शोच ।
मांगत अभिमत पाव फल, राउ रङ्क भल पोच ॥
लखि सबाविधि गुरुस्वामिसनेहू * मिटेउ क्षोभ नहिं मन संदेहू
अब करुणाकर कीजिय सोई * जनहित प्रभुचित क्षोभ न होई
जो सेवक साहिब संकोची * निजहित चहै तासु मति पोची
सेवक हित साहिब सेवकाई * करै सकल सुख लोभ विहाई
स्वारथ नाथ फिरे सबहीका * किये रजाइ कोटि विधि नीका
यह स्वारथ परमारथ सारू * सकल सुकृत फलसुगति शृँगारू
देव एक बिनती सुनि मोरी * उचित होइ तस करब बहोरी
तिलकसमाज साजि सब आना * करिय सुफल प्रभु जो मनमाना
दो० सानुज पठइय मोहिं वन, कीजिय सबहि सनाथ ।
नातरु फेरिय बन्धु दोउ, नाथ चलौं मैं साथ ॥
नतरु जाहिं वन तीनिउँ भाई * बहुरिय सीय सहित रघुराई
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई * करुणासागर कीजिय सोई
देव दीन्ह सब मोपर भारू * मोरे नीति न धर्म विचारू
कहौं वचन सब स्वारथ हेतू * रहत न आरत के चित चेतू
उतर देइ बिनु स्वामि रजाई * सो सेवक लखि लाज लजाई
अस मैं अवगुण उदधि अगाधू * स्वामि सनेह सराहत साधू
अब कृपालु मोहिं सो मत भावा * सकुच स्वामि मन जाइ न पावा
प्रभु पद शपथ कहौं सतिभाऊ * जग मङ्गलहित एक उपाऊ
दो० प्रभु प्रसन्न मन सकुच तजि, जो जेहि आयसु देव ।
सो शिर धरि धरि करहिं सब, मिटिहि अनट अवरेव ॥

भरत वचन शुचि सुनि सुरहरषे * साधु सराहि सुमन सुर वरषे
असमञ्जस वश अवधनिवासी * प्रमुदित मन तापस वनवासी
चुप रहिगे रघुनाथ सकोची * प्रभुगति देखि सभा सब शोची
जनकदूत तेहि अवसर आवा * मुनिवशिष्ठ सुनि वेगि बुलावा
करि प्रणाम तिन राम निहारे * वेष देखि भे निपट दुखारे
दूतहिं मुनिवर पूछी बाता * कहहु विदेह भूप कुशलाता
सुनि सकुचाइ नाइ महि माथा * बोले चरवर जोरे हाथा
बूझत राउर सादर साईं * कुशल हेतु सो भयउ गुसाईं

दो० नाहित कोशलनाथ के, साथ कुशल गइ नाथ ।
मिथिला अवध विशेषते, जग सब भयउ अनाथ ॥

कोशलपतिगति सुनि जनकौरा * भे सब लोग शोचवश बौरा
जेहि देखा तेहि समय विदेहू * नाम सत्य अस लाग न केहू
नारि कुचालि सुनत महिपालै * सूझ न कछु जस मणि बिनु व्यालै
भरत राज रघुवर वनवासू * भा मिथिलेशहि हृदय हरासू
नृप बूझे बुध सचिव समाजू * कहहु विचारि उचित का आजू
समुझि अवध असमञ्जस दोऊ * चलिय कि रहिय न कह कछु कोऊ
नृपति धीर धरि हृदय विचारी * पठये अवध चतुर चर चारी
बूझि भरत गति भाउ कुभाऊ * आयहु वेगि न होइ लखाऊ

दो० गये अवध चर भरत गति, बूझि देखि करतूति ।
चले चित्रकूटहि भरत, चार चले तिरहूति ॥

दूतन आइ भरत की करणी * जनक समाज यथामति वरणी
सुनि गुरुपुरजन सचिवमहीपति * भे सब शोचसनेह विकलमति
धरि धीरज करि भरत बड़ाई * लिये सुभट साहनी बुलाई
घर पुर देश राखि रखवारे * हय गय रथ बहु यान सँवारे
दुघड़ी साधि चले ततकाला * किय विश्राम न मगु महिपाला
भोरहि आजु नहाइ प्रयागा * चले यमुन उतरन सब लागा
खबरि लेन हम पठये नाथा * तिनकहि अस महि नायहु माथा
साथ किरात छ सातक दीन्हे * मुनिवर तुरत बिदा चर कीन्हे

दो० सुनत जनक आगमन सब, हर्षेउ अवध समाज ।
रघुनन्दनहिं सकोच बड़, शोच विवश सुरराज ॥

गरइ गलानि कुटिल कैकेई * काहि कहै केहि दूषण देई
अस मन आनि मुदित नरनारी * भयउ बहोरि रहब दिन चारी

इहिप्रकार गत वासर सोऊ * प्रात अन्हान लगे सबकोऊ
करि मज्जन पूजहिं नर नारी * गणपति गौरि पुरारि तमारी
रमारमण पद वन्दि बहोरी * विनवहिं अञ्चल अञ्जलि जोरी
राजा राम जानकी रानी * आनँदअवधि अवध रजधानी
सुबस बसै फिरि सहित समाजा * भरतहि राम करैं युवराजा
इहि सुख सुधा सींचि सबकाहू * देव देहु जगजीवन लाहू
दो० गुरु समाज भाइन सहित, रामराज पुर होउ ।
अछत राम राजा अवध, मरिय मांगु सब कोउ ॥
सुनि सनेहमय पुरजन बानी * निन्दहिं योग विरति मुनिज्ञानी
इहिविधि नित्यकर्म करि पुरजन * रामहिं करहिं प्रणाम पुलकि तन
ऊंच नीच मध्यम नर नारी * लहैं दरश निज निज अनुहारी
सावधान सबही सनमानहिं * सकल सराहत कृपानिधानहिं
लरिकाई ते रघुवर बानी * पालत प्रीति रीति पहिंचानी
शील सकोच सिन्धु रघुराऊ * सुमुख सुलोचन सरल सुभाऊ
कहत राम गुणगण अनुरागे * सब निज भाग सराहन लागे
हम सम पुण्य पुञ्ज जग थोरे * जिनहिं राम जानत करि मोरे
दो० प्रेममगन तेहि समय सब, सुनि आवत मिथिलेश ।
सहितसभा संभ्रम उठे, रविकुल कमल दिनेश ॥
आगे गमन कीन्ह रघुनाथा * भाइ सचिव गुरुपुरजन साथा
गिरिवर दीख जनक नृप जबहीं * करि प्रणाम त्यागा रथ तबहीं
राम दरश लालसा उछाहू * पथश्रम लेश कलेश न काहू
मन तहँ जहँ रघुवर वैदेही * बिनु मन तन दुख सुख सुधि केही
आवत जनक चले इहि भांती * सहित सनेह प्रेम मदमाती
आये निकट देखि अनुरागे * सादर मिलन परस्पर लागे
लगे जनक मुनिगणपद वन्दन * ऋषिन प्रणाम कीन्ह रघुनन्दन
भाइन सहित राम मिलि राजहिं * चले लिवाय समेत समाजहिं
दो० आश्रम सागर शान्तरस, पूरण पावन पाथ ।
सेन मनहुँ करुणा सरित, लिये जात रघुनाथ ॥
बोरति ज्ञान विराग करारे * वचन सशोक मिलत नदनारे
शोच उसास समीर तरङ्गा * धीरज तट तरुवर कर भङ्गा
विषम विषाद तुरावति धारा * भय भ्रम भवँरावर्त अपारा
केवट बुध विद्या बड़ि नावा * सकहि न खेइ एक नहिं आवा

बनचर कोल किरात बिचारे * थके बिलोकि पथिक हियहारे
आश्रम उदधि मिली जब जाई * मनहुँ उठेउ अम्बुधि अकुलाई
शोक विकल दोउ राजसमाजा * रहा न ज्ञान न धीरज लाजा
भूप रूप गुण शील सराही * सोचहिं शोकसिन्धु अवगाही
छं० अवगाहि शोक समुद्र सोचहिं नारि नर व्याकुलमहा ।
दै दोष सकल सरोष बोलहिं वामविधि कीन्ही कहा ॥
सुर सिद्ध तापस योगि जन मुनि दशा देखि विदेहकी ।
तुलसी न समरथ कोउ जो तरि सकै सरित सनेहकी ॥
सो० किये अमित उपदेश, जहँ तहँ लोगन मुनिवरन ।
धीरज धरिय नरेश, कहेउ वशिष्ठ विदेह सन ॥
जासु ज्ञान रवि भवनिशि नाशा * वचनकिरण मुनि कमल विकाशा
तेहि कि मोह महिमा नियराई * यह सिय राम सनेह बड़ाई
विषयी साधक सिद्ध सयाने * त्रिविध जीव जग वेद बखाने
राम सनेह सरस मन जासू * साधु सभा बड़ आदर तासू
सोह न राम प्रेम बिनु ज्ञाना * कर्णधार बिनु जिमि जलयाना
मुनि बहु विधि विदेह समुझाये * रामघाट सबलोग अन्हाये
सकल शोक संकुल नर नारी * सो वासर बीतेउ बिनु वारी
पशुखगमृगन्ह न कीन्ह अहारा * प्रियपरिजनकर कवन विचारा
दो० दोउ समाज निमिराज रघु,राज नहाने प्रात ।
बैठे सब वट विटप तर, मनमलीन कृशगात ॥
जे महिसुर दशरथपुर वासी * जे मिथिलापति नगर निवासी
हंस वंश गुरु जनक पुरोधा * जिन्ह जगमग परमारथ शोधा
लगे कहन उपदेश अनेका * सहित धर्म नय विरति विवेका
कौशिक कहि कहि कथा पुरानी * समुझाई सब सभा सुबानी
तब रघुनाथ कौशिकहि कहेऊ * नाथ कालि बिनुजल सबरहेऊ
मुनि कह उचित कहत रघुराई * गयउ बीति दिन पहर अढ़ाई
ऋषिरुख लखि कह तिरहुतिराजू * इहां उचित नहिं अशन अनाजू
कहा भूप भल सबहिं सोहाना * पाइ रजायसु चले नहाना
दो० तेहि अवसर फल फूल दल, मूल अनेक प्रकार ।
लै आये बनचर विपुल, भरि भरि कांवरि भार ॥
कामद भे गिरि रामप्रसादा * अवलोकत अपहरत विषादा
सर सरिता वन भूमि विभागा * जनु उमँगत आनँद अनुरागा

बेलि बिटप सब सफल सफूला * बोलत खग मृग अति अनुकूला
तेहि अवसर वन अधिक उछाहू * त्रिविध समीर सुखद सबकाहू
जाइ न बरणि मनोहरताई * जनु महि करति जनक पहुनाई
तब सबलोग नहाइ नहाई * राम जनक मुनि आयसु पाई
देखि देखि तरुवर अनुरागे * जहँ तहँ पुरजन उतरन लागे
दल फल फूल कन्द विधि नाना * पावन सुन्दर सुधा समाना
दो० सादर सब कहँ राम गुरु, पठये भरि भरि भार ।
पूजि पितर सुर अतिथि गुरु, लगे करन फलहार ॥
इहिविधि बासर बीते चारी * राम निरखि नर नारि सुखारी
दुहुँ समाज अस रुचि मनमाहीं * विनु सियराम फिरब भल नाहीं
सीता राम संग बनवासू * कोटि अमरपुर सरिस सुपासू
परिहरि लषण राम वैदेही * जेहि घर भाव बाम विधि तेही
दाहिन दैव होइ जब सबहीं * राम समीप बसिय वन तबहीं
मन्दाकिनी मज्जन तिहुँकाला * रामदरश मुद मङ्गल माला
अटन राम गिरि बन तापस फल * अशन अमियसम कन्दमूल फल
सुख समेत संवत दुइ साता * पलसम होहिं न जानिय जाता
दो० इहिसुख योग न लोग सब, कहहिं कहां अस भाग ।
सहज सुभाव समाज दुहुँ, रामचरण अनुराग ॥
इहिविधि सकल मनोरथ करहीं * वचन सप्रेम सुनत मनहरहीं
सीय मातु तेहि समय पठाई * दासी देखि सुअवसर आई
सावकाश सुनि सब सिय सासू * आईं जनकराज रनिवासू
कौशल्या सादर सनमानी * आसन दीन्ह समयसम आनी
शील सनेह सरस दुहुँ ओरा * द्रवहिं देखि सुनि कुलिश कठोरा
पुलकशिथिलतनुवारिविलोचन * महिनख लिखनलगीं सब सोचन
सब सियराम प्रेमकी मूरति * जनु करुणा बहु वेष बिसूरति
सीयमातु कह विधि बुधि बांकी * जिमि पयफेनु फोर पवि टांकी
दो० सुनिय सुधा देखिय गरल, सब करतूति कराल ।
जहँ तहँ काक उलूक बक, मानस सकृत मराल ॥
सुनि सशोच कह देवि सुमित्रा * विधिगति अति विपरीत विचित्रा
जो सृजि पालै हरै बहोरी * बालकेलि सम विधिमति भोरी
कौशल्या कह दोष न काहू * कर्मविवश दुख सुख क्षति लाहू
कठिन कर्मगति जान विधाता * जो शुभ अशुभ कर्म फलदाता

ईश रजाइ शीश सबहीके * उतपति थिति लय विषय अमीके
देवि मोहवश शोचिय बादी * विधिप्रपञ्च अस अचल अनादी
भूपति जियब मरब उर आनी * शोचिय सखि लखि निज हितजानी
सीय मातु कह सत्य सुबानी * सुकृती अवधि अवधपतिरानी
दो० लषण राम सिय जाहिं वन, भल परिणाम न पोच ।
गहवरि हिय कह कौशला, मोहिं भरतकर सोच ॥
ईश प्रसाद अशीश तुम्हारी * सुत सुतवधू देवसरि वारी
राम शपथ मैं कीन्ह न काऊ * सो करि सखी कहौं सतिभाऊ
भरत शील गुण विनय बड़ाई * भायप भक्ति भरोस भलाई
कहत शारदहु कै मति हीचे * सागर सीप कि जाहिं उलीचे
जानौ सदा भरत कुलदीपा * बार बार मोहिं कहेउ महीपा
कसे कनक मणि पारिख पाये * पुरुष परखिये समय सुभाये
अनुचित आजु कहब अस मोरा * शोक सनेह सयानप थोरा
सुनि सुरसरि सम पावन बानी * भई सनेह विकल सब रानी
दो० कौशल्या कह धीर धरि, सुनहु देवि मिथिलेशि ।
को विवेकनिधि वल्लभहिं, तुमहिं सकै उपदेशि ॥
रानि राय सन अवसर पाई * आपनि भांति कहब समुझाई
राखिय लषण भरत गवनहिं वन * जो यह मत मानै महीप मन
तौ भल यतन सुकरहु विचारी * मोरे शोच भरत कर भारी
गूढ़ सनेह भरत मनमाहीं * रहे नीक मोहिं लागत नाहीं
लखि स्वभाव सुनि सरल सुबानी * सबभईं मगन करुण रससानी
नभ प्रसून झरि धन्य धन्य धुनि * शिथिल सनेह सिद्ध योगी मुनि
सब रनिवास थकित लखि रहेऊ * तब धरि धीर सुमित्रा कहेऊ
देवि दण्ड युग यामिनि बीती * राम मातु सुनि उठी सप्रीती
दो० वेगि पाँय धारिय थलहिं, कह सनेह सति भाय ।
हमरे तौ अब ईशगति, कै मिथिलेश सहाय ॥
लखि सनेह सुनि वचन विनीता * जनक प्रिया गहि पांव पुनीता
देवि उचित अस विनय तुम्हारी * दशरथ घरनि राम महतारी
प्रभु अपने नीचहु आदरहीं * अग्नि धूम गिरिशिर तृण धरहीं
सेवक राउ कर्म मन बानी * सदा सहाय महेश भवानी
रौरे अङ्ग योग जग कोहै * दीप सहाय कि दिनकर सोहै
राम जाय वन करि सुरकाजू * अचल अवधपुर करिहहिं राजू

अमर नाग नर राम बाहुबल * सुख बसिहहिं अपने अपने थल
यह सब याज्ञवल्क्य कहि राखा * देवि न होइ मृषा मुनि भाखा
दो० असकहि पगुपरि प्रेम अति, सियहित विनय सुनाइ ।
सिय समेत सिय मातु तब, चली सुआयसु पाइ ॥
प्रिय परिजनहिं मिली वैदेही * जो जेहि योग भांति तस तेही
तापस वेष जानकिहिं देखी * भे सब विकल विषाद विशेखी
जनक राम गुरु आयसु पाई * चले थलहिं सिय देखी आई
लीन्ह लाइ उर जनक जानकी * पाहुनि पावनि प्रेम प्रानकी
उर उमँगेउ अम्बुधि अनुरागू * भयहु भूप मन मनहुँ प्रयागू
सिय सनेह वट बाढ़त जोहा * तापर राम प्रेम शिशु सोहा
चिरंजीवि मुनि ज्ञान विकलजनु * बूड़त लहेउ बालअवलम्बनु
मोह मगन मति नहिं विदेहकी * महिमा सिय रघुवर सनेहकी
दो० सिय पितु मातु सनेहवश, विकल न सकी सँभारि ।
धरणिसुता धीरज धरेउ, समय सुधर्म विचारि ॥
तापस वेष जनक सिय देखी * भयउ प्रेम परितोष विशेखी
पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ * सुयशधवल जग कह सब कोऊ
जिमि सुरसरि कीरति सारतोरी * गमन कीन्ह विधि अण्डकरोरी
गङ्ग अवनि थल तीनि बड़ेरे * यहि किय साधु समाज घनेरे
पितु कह सत्य सनेह सुबानी * सीय सकुचि मनमाहँ समानी
पुनि पितु मातु लीन्ह उरलाई * सिख आशिषाहित दीन्ह सुहाई
कहति न सीय सकुचि मनमाहीं * इहां बसब रजनी भल नाहीं
लखि रुख रानि जनायउ राऊ * हृदय सराहत शील सुभाऊ
दो० बारबार मिलि भेंटि सिय, बिदा कीन्ह सनमानि ।
कही समयशिर भरतगति, रानि सुबानि सयानि ॥
सुनि भूपाल भरत व्यवहारू * सोन सुगन्ध सुधा शशिसारू
मूँदे सजल नयन पुलके तन * सुयश सराहन लगे मुदित मन
सावधान सुनु समुखि सुलोचनि * भरतकथा भवबन्ध विमोचनि
धर्मराज नय ब्रह्म विचारू * यहां यथामति मोर प्रचारू
सो मति मोरि भरत महिमाहीं * कहौं काह छल छुअति न छाहीं
विधिगणपतिअहिपतिशिवशारद * कवि कोविद बुध बुद्धिविशारद
भरत चरित कीरति करतूती * धर्मशील गुण विमल विभूती
समुझत सुनत सुखद सबकाहू * लोक लाज परलोक निबाहू

दो० निरवधि गुणनिरुपम पुरुष, भरत भरतसम जानि ।
कही सुमेरू कि सेरसम, कविकुल मति सकुचानि ॥
अगम सबहिं वरणत वरवरणी * जिमि जलहीन मीनगण धरणी
भरत अमित महिमा सुनु रानी * जानहिं राम न सकहिं बखानी
बरणि सप्रेम भरत सतिभाऊ * तिय जियकी रुचि लखि कह राऊ
बहुरहिं लषण भरत वन जाहीं * सवकर भल सबके मनमाहीं
देवि परन्तु भरत रघुवरकी * प्रीति प्रतीति जाइ नहिं तरकी
भरत सनेह अवधि ममताके * यद्यपि राम सीम समताके
परमारथ स्वारथ सुख सारे * भरत न सपनेहुँ मनहुँ निहारे
साधन सिद्धि रामपद नेहू * मोहिं लखि परत भरतमत येहू
दो० भोरेहु भरत न पेलिहहिं, मनमहँ रामरजाइ ।
करिय न शोच सनेहवश, कहेउ भूप बिलखाइ ॥
राम भरतगुण कहत सप्रीती * निशिदम्पतिहिं पलकसम बीती
राज समाज प्रात युग जागे * न्हाइ न्हाइ सुर पूजनलागे
गे नहाइ गुरु पहँ रघुराई * वन्दि चरण बोले रुखपाई
नाथ भरत पुरजन महतारी * शोच विकल वनवास दुखारी
सहित समाज राउ मिथिलेशू * बहुत दिवस भे सहत कलेशू
उचित होय सो कीजिय नाथा * हित सबही कर रौरे हाथा
अस कहि अतिसकुचे रघुराऊ * मुनि पुलके लखि शील सुभाऊ
तुम बिनु राम सकल सुखसाजा * नरक सरिस दुहुँ राजसमाजा
दो० प्राण प्राण के जीव के, जिय सुख के सुख राम ।
तुम तजि तात सोहात गृह, जिनहिं तिनहिं विधिवाम ॥
सो सुख करम धरम जरिजाऊ * जहँ न रामपदपङ्कज भाऊ
योग कुयोग ज्ञान अज्ञानू * जहां न राम प्रेम परधानू
तुम बिनु दुखी सुखी तुम तेही * तुम जानहु जिय जो जेहि केही
राउर आयसु शिर सबही के * विदित कृपालुहि गति सब नीके
आपु आश्रमहिं धारिय पाऊ * भये सनेह शिथिल मुनिराऊ
करि प्रणाम तब राम सिधाये * ऋषि धरि धीर जनकपहँ आये
रामवचन गुरु नृपहिं सुनाये * शील सनेह सुभाव सुहाये
महाराज अब कीजिय सोई * सवकर धर्म सहित हित होई
दो० ज्ञाननिधान सुजान शुचि, धर्म धीर नरपाल ।
तुम बिनु असमञ्जसशमन, को समर्थ इहिकाल ॥

सुनि मुनि वचन जनक अनुरागे * लखि गति ज्ञानविराग विरागे
शिथिल सनेह गुणत मनमाहीं * आये इहां कीन्ह भल नाहीं
रामहिं राय कहेउ वन जाना * कीन्ह आपु प्रिय प्रेम समाना
हम अब वनते वनहिं पठाई * प्रमुदित फिरब विवेक बढ़ाई
तापस मुनि महिसुरगति देखी * भये प्रेमवश विकल विशेषी
समय समुझि धरि धीरज राजा * चले भरतपहँ सहित समाजा
भरत आय आगे है लीन्हा * अवसर सरिस सुआसन दीन्हा
तात भरत कह तिरहुति राऊ * तुमहिं विदित रघुवीर सुभाऊ
दो० राम सत्यव्रत धर्मरत, सबकर शील सनेहु ।
संकट सहत सकोचवश, कहिय सो आयसु देहु ॥
सुनि तन पुलकि नयन भरि वारी * बोले भरत धीर धरि भारी
प्रभु प्रियपूज्य पितासम आपू * कुलगुरु सम हित माय न बापू
कौशिकादि मुनि सहित समाजू * ज्ञान अम्बुनिधि आपुन आजू
शिशु सेवक आयसु अनुगामी * जानि मोहिं सिख देइय स्वामी
इहि समाज थल बूझब राउर * मन मलीन मैं बोलब बाउर
छोटे वदन कहौं बड़ि बाता * क्षमब तात लखि वाम विधाता
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना * सेवा धर्म कठिन जग जाना
स्वामि धर्म स्वारथहिं विरोधू * बधिर अन्ध प्रेमहिं न प्रबोधू
दो० राखि राम रुख धर्म व्रत, पराधीन मोहिं जानि ।
सबके सम्मत सर्व हित, करिय प्रेम पहिंचानि ॥
भरत वचन सुनि देखि सुभाऊ * सहित समाज सराहत राऊ
सुगम अगम मृदुमञ्जु कठोरा * अर्थ अमित अतिआखर थोरा
जो मुख मुकुर मुकुर निजपाणी * गहि न जाय अस अद्भुतवाणी
भूप भरत मुनि साधु समाजू * गे जहँ विबुध कुमुद द्विजराजू
सुनि सुधि शोचविकलसबलोगा * मनहुँ मीनगण नवजलयोगा
देव प्रथम कुलगुरु गति देखी * निरखि विदेह सनेह विशेखी
राम भक्तिमय भरत निहारे * सुर स्वारथी हरषि हियहारे
सब कहँ राम प्रेममय पेखा * भये अलेख शोचवश लेखा
दो० राम सनेह सकोचवश, कह सशोच सुरराज ।
रचहु प्रपञ्चहि पञ्च मिलि, नाहित भयउ अकाज ॥
सुरन सुमिरि शारदा सराही * देवि देव शरणागत पाही
फेरु भरत मति करि निजमाया * पालु विबुध कुल करि छल छाय

विबुधविनय सुनि देवि सयानी * बोली सुर स्वारथि जड़ जानी
मोसन कहहु भरत मति फेरू * लोचन सहस न सूझ सुमेरू
विधि हरि हर माया बड़िभारी * सो न भरत मति सकै निहारी
सो मति मोहिं कहत करु भोरी * चन्दिनि करै कि चन्दकि चोरी
भरत हृदय सिय राम निवासू * तहँकि तिमिर जहँ तरणिप्रकासू
असकहि शारदगइ विधिलोका * विबुध विकल निशि मानहुँ कोका

दो० सुर स्वारथी मलीन मन, कीन्ह कुमन्त्र कुठाट ।
रचि प्रपञ्च मायाप्रबल, भय भ्रम अरति उचाट ॥

करि कुचाल शोचत सुरराजू * भरत हाथ सबकाज अकाजू
गये जनक रघुनाथ समीपा * सनमाने सब रघुकुल दीपा
समय समाज धर्म अविरोधा * बोले तब रघुवंश पुरोधा
जनक भरत संवाद सुनाई * भरत कहावति कही सुहाई
तात राम जस आयसु देहू * सो सब करैं मोर मत येहू
सुनि रघुनाथ जोरि युगपाणी * बोले सत्य सरल मृदुवाणी
विद्यमान आपुन मिथिलेशू * मोर कहा सब भांति भदेशू
राउर राय रजायसु होई * राउरि शपथ सही शिर सोई

दो० राम शपथ सुनि मुनि जनक, सकुचे सभासमेत ।
सकल विलोकहिं भरत मुख, बनै न उत्तर देत ॥

सभा सकुचवश भरत निहारी * राम बन्धु धरि धीरज भारी
कुसमय देखि सनेह सँभारा * बढ़त विन्ध्य जिमि घटज निवारा
शोक कनकलोचन मति क्षोनी * हरी विमल गुणगण जगयोनी
भरत विवेक वराह विशाला * अनायास उघेरउ तेहि काला
करि प्रणाम सब कहँ करजोरी * राम राउ गुरु साधु निहोरी
क्षमब आजुअतिअनुचित मोरा * कहउँ वदन मृदु वचन कठोरा
हिय सुमिरी शारदा सुहाई * मानस ते मुख पङ्कज आई
विमल विवेक धर्म नयशाली * भरत भारती मञ्जु मराली

दो० निरखि विवेक विलोचनहिं, शिथिल सनेह समाज ।
करि प्रणाम बोले भरत, सुमिरि सीय रघुराज ॥

प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी * पूज्य परमहित अन्तरयामी
सरल सुसाहिब शील निधानू * प्रणतपाल सरवज्ञ सुजानू
समरथ शरणागत हितकारी * गुणग्राहक अवगुण अघहारी
स्वामि गुसांइहि सहश गुसांई * मोहिं समान मैं स्वामि दोहाई

प्रभु पितु वचन मोहवश पेली * आयउँ इहां समाज सकेली
जग भल पोच ऊंच अरु नीचू * अमी अमरपद माहुर मींचू
राम रजाइ मेटि मन माहीं * देखा सुना कतहुँ कोउ नाहीं
सो मैं सबविधि कीन्ह ढिठाई * प्रभु मानी सनेह सेवकाई
दो० कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषण भे भूषण सरिस, सुयश चारु चहुँओर ॥
राउर रीति सुवाणि बड़ाई * जगत विदित निगमागमगाई
क्रूर कुटिल खल कुमति कलङ्की * नीचनिशील निरीश निशङ्की
तेउ सुनि शरण सामुहें आये * सकृत प्रणाम किये अपनाये
देखि दोष कबहुँ न उर आने * सुनि गुण साधु समाज बखाने
को साहिब सेवकहि नेवाजी * आप समान साज सब साजी
निजकरतूति न समुझिय सपने * सेवक सकुच शोच उर अपने
सो गुसाइँ नहिं दूसर कोपी * भुजा उठाइ कहौं प्रण रोपी
पशु नाचत शुक पाठ प्रवीना * गुणगति नट पाठक आधीना
दो० सो सुधारि सनमानि जन, किये साधु शिरमोर ।
को कृपालु बिनु पालिहै, विरदावलि बरजोर ॥
शोक सनेह कि बाल सुभाये * आयसु लाइ रजायसु पाये
तबहुँ कृपालु हेरि निज ओरा * सबहि भांति भल मानेहुँ मोरा
देखेउँ पायँ सुमङ्गल मूला * जानेउँ स्वामि सहज अनुकूला
बड़े समाज विलोकेउँ भागू * बड़ी चूक साहिब अनुरागू
कृपा अनुग्रह अङ्ग अघाई * कीन्ह कृपानिधि सब अधिकाई
राखा मोर दुलार गुसांई * अपने शील सुभाव भलाई
नाथ निपट मैं कीन्ह ढिठाई * स्वामि समाज सकोच विहाई
अविनय विनय यथारुचि बानी * क्षमिय देव अतिआरत जानी
दो० सुहृद सुजान सुसाहिबहि, बहुत कहब बड़ि खोरि ।
आयसु देइय देव अब, समय सुधारिय मोरि ॥
प्रभु पदपद्म पराग दुहाई * सत्य सुकृत सुख सींव सुहाई
सो करि कहौं हिये अपनेकी * रुचि जागत सोवत सपनेकी
सहज सनेह स्वामि सेवकाई * स्वारथ छल फल चारि विहाई
आज्ञा सम न सुसाहिब सेवा * सो प्रसाद जन पावै देवा
असकहि प्रेम विवश भे भारी * पुलक शरीर विलोचन वारी
प्रभुपद कमल गहे अकुलाई * समय सनेह न सो कहिजाई

कृपासिन्धु सनमानि सुवाणी * बैठाये समीप गहि पाणी
भरत विनय सुनि देखि सुभाऊ * शिथिल सनेह सभा रघुराऊ
छं० रघुराउ शिथिल सनेह साधु समाज मुनि मिथिलाधनी ।
मन महँ सराहत भरत भायप भक्ति की महिमा घनी ॥
भरतहिं प्रशंसत विबुध बरसत सुमन मानस मलिनसे ।
तुलसी विकल सबलोग सुनि सकुचे निशागमनलिनसे ॥
सो० देखि दुखारी दीन, दुहुँ समाज नर नारि सब ।
मघवा महा मलीन, मुये मारि मङ्गल चहत ॥
कपट कुचाल सीम सुरराजू * पर अकाज प्रिय आपन काजू
काक समान पाकरिपु रीती * छली मलीन न कतहुँ प्रतीती
प्रथम कुमति करि कपट सकेला * सो उचाट सबके शिर मेला
सुर माया सब लोग विमोहे * रामप्रेम अतिशय न बिछोहे
भय उचाट सब मन थिर नाहीं * क्षण वनरुचि क्षण सदन सुहाहीं
दुबिध मनोगति प्रजा दुखारी * सरितसिन्धु संगम जिमि वारी
दुचित कतहुँ परितोष न लहहीं * एक एक सन मर्म न कहहीं
लखि हिय हँसि कह कृपानिधानू * सरिस श्वान मघवा निजबानू
दो० भरत जनक मुनिगण सचिव, साधु सचेत विहाइ ।
लगी देवमाया सबहिं, यथायोग जन पाइ ॥
कृपासिन्धु लखि लोग दुखारे * निज सनेह सुरपति छलभारे
सभा राउ गुरु महिसुर मन्त्री * भरत भक्ति सबकी मतियन्त्री
रामहिं चितवत चित्र लिखेसे * सकुचत बोलत वचन सिखेसे
भरत प्रीति नित विनय बड़ाई * सुनत सुखद बरणत कठिनाई
जासु विलोकि भक्ति लवलेशू * प्रेममगन मुनिगण मिथिलेशू
महिमा तासु कहै किमि तुलसी * भक्तिप्रभाव सुमति हिय हुलसी
आपु छोट महिमा बड़ि जानी * कवि कुल कानि मानि सकुचानी
कहि न सकतगुणरुचि अधिकाई * मतिगति बाल वचन की नाई
दो० भरत विमलयश विमलविधु, सुमति चकोर कुमारि ।
उदित विमलजन हृदय नभ, इकटकरही निहारि ॥
भरत सुभाव न सुगम निगमहू * लघुमति चापलता कवि क्षमहू
कहत सुनत सतिभाव भरतको * सीय राम पद होय न रतको
सुमिरत भरतहि प्रेम रामको * जेहि न सुगम तेहि सरिसवामको
देखि दयालु दशा सबहीकी * राम सुजान जानि जनजीकी
धर्मधुरीण धीर नयनागर * सत्य सनेह शील सुखसागर

देशकाल लखि समय समाजू * नीति प्रीति पालक रघुराजू
बोले वचन वाणि सरवससे * हितपरिणाम सुनत शशिरससे
तात भरत तुम धर्मधुरीणा * लोक वेदविधि परम प्रवीणा
दो० कर्म वचन मानस विमल, तुम समान तुम तात ।
गुरुसमाज लघु बन्धु गुण, कुसमयकिमिकहिजात ॥
जानहु तात तरणि कुलरीती * सत्यासिन्धु पितुकीरति प्रीती
समय समाज लाज गुरुजनकी * उदासीन हित अनहित मनकी
तुमहिं विदित सबहीकर मरमू * आपन मोर परम हित धरमू
मोहिं सबभांति भरोस तुम्हारा * तदपि कहौं अवसर अनुसारा
तात तात बिनु बात हमारी * केवल कुलगुरु कृपा सम्हारी
नतरु प्रजा पुरजन परिवारू * हमहिं सहित सब होत दुखारू
जो बिनु अवसर अथव दिनेशू * जग केहि कहौ न होइ कलेशू
तस उत्पात तात विधि कीन्हा * मुनि मिथिलेश राखि सबलीन्हा
दो० राजकाज सब लाजपति, धर्म धरणि धन धाम ।
गुरुप्रभाव पालिहि सबहिं, भल होइहि परिणाम ॥
सहित समाज तुम्हार हमारा * घर वन गुरुप्रसाद रखवारा
मातु पिता गुरु स्वामि निदेशू * सकल धर्म धरणीधर शेशू
सो तुम करहु करावहु मोहू * तात तरणिकुलपालक होहू
साधन एक सकल सिधि देनी * कीरति सुगति भूतिमय वेनी
सो विचारि सहि संकट भारी * करहु प्रजा परिवार सुखारी
बांटि विपति सबही मिलि भाई * तुमहिंअवधिभरि अति कठिनाई
जानि तुमहिं मृदु कहौं कठोरा * कुसमय तात न अनुचित मोरा
होहिं कुठांव कुबन्धु सुहाये * आड़िय हाथ अशनिके घाये
दो० सेवक कर पद नयन से, मुख सो साहिब होइ ।
तुलसी प्रीति कि रीति सुनि, सुकवि सराहहिं सोइ ॥
सभा सकल सुनि रघुवरबानी * प्रेम पयोधि अमिय जनु सानी
शिथिल समाज सनेह समाधी * देखि दशा चुप शारद साधी
भरतहिं भयउ परम संतोषू * सम्मुख स्वामि विमुख दुख दोषू
मुखप्रसन्न मन मिटा बिषादू * भा जनु गूंगहि गिरा प्रसादू
कीन्ह सप्रेम प्रणाम बहोरी * बोले पाणि पङ्करुह जोरी
नाथ भयो सुख साथ गयेको * लहेउँ लाभ जग जन्म भये को
अब कृपालु जस आयसु होई * करौं शीश धरि सादर सोई
सो अवलम्ब देव मोहिं देई * अवधि पार पावउँ जेहि सेई

दो० देवदेव अभिषेक हित, गुरुअनुशासन पाइ।
आनेउँ सब तीरथ सलिल, तेहि कहँ काह रजाइ॥
एक मनोरथ बड़ मनमाहीं * सभय सकोच जात कहि नाहीं
कहहु तात प्रभु आयसु पाई * बोले बाणि सनेह सुहाई
चित्रकूट मुनिथल तीरथ वन * खगमृग सरसरि निर्झर गिरिगन
प्रभुपद अङ्कित अवनि विशेखी * आयसु होय तो आवौं देखी
अवशि अत्रिआयसु शिरधरहू * तात विगत भय कानन चरहू
मुनिप्रसाद वन मङ्गल दाता * पावन परम सुहावन भ्राता
ऋषिनायक जहँ आयसु देहीं * राखेहु तीरथ जल थल तेहीं
सुनि प्रभुवचन भरत सुखपावा * मुनि पदकमल मुदित शिरनावा
दो० भरत राम संवाद सुनि, सकल सुमङ्गल मूल।
सुरस्वारथी सराहि कुल, हर्षित वर्षहिं फूल॥
धन्य भरत जय राम गुसाईं * कहत देव हर्षत बरिआईं
मुनि मिथलेश सभा सब काहू * भरतवचन सुनि भयउ उछाहू
भरत राम गुण ग्राम सनेहू * पुलकि प्रशंसत राउ विदेहू
सेवक स्वामि सुभाव सुहावन * नेम प्रेम अति पावन पावन
मति अनुसार सराहन लागे * सचिव सभासद सब अनुरागे
सुनि सुनि राम भरत संवादू * दुहुँ समाज हियहर्ष विषादू
राम मातु दुखसुख सम जानी * कहि गुण दोष प्रबोधी रानी
एक करहिं रघुवीर बड़ाई * एक सराहत भरत भलाई
दो० अत्रि कहेउ तब भरतसन, शैल समीप सुकूप।
राखिय तीरथ तोय तहँ, पावन अमल अनूप॥
भरत अत्रि अनुशासन पाई * जल भाजन सब दिये चलाई
सानुज आपु अत्रि मुनि साधू * सहित गये जहँ कूप अगाधू
पावन पाथ पुण्य थल राखा * प्रमुदित प्रेम अत्रि अस भाखा
तात अनादि सिद्ध थल येहू * लोपेउ काल विदित नहिं केहू
तब सेवकन्ह सरस थल देखा * कीन्ह सुजलहित कूप विशेखा
विधिवश भयउ विश्व उपकारू * सुगम अगम अति धर्म विचारू
भरत कूप अब कहिहहिं लोगा * अति पावन तीरथजल योगा
प्रेम समेत निमज्जहिं प्राणी * होइहहिं विमल कर्म मनवाणी
दो० कहत कूप महिमा सकल, गये जहां रघुराउ।
अत्रि सुनायहु रघुवरहिं, तीरथ पुण्य प्रभाउ॥
कहत धर्म इतिहास सप्रीती * भयउ भोर निशि सो सुखबाती

नित्य निबाहहिं भरत दोउ भाई * राम अत्रि गुरु आयसु पाई
सहित समाज साज सब सादे * चले राम वन अटन पयादे
कोमल चरण चलत विनुपनहीं * भै मृदु भूमि सकुचि मनमनहीं
कुश कण्टक कांकरी कुराई * कटुक कठोर कुवस्तु दुराई
महि मञ्जुल मृदु मारग कीन्हे * बहतसमीर त्रिविध सुख लीन्हे
सुमन वरषि सुर घन करिछाहीं * विटप फूलि फल दल मृदुलाहीं
मृगविलोकि खगबोलि सुबानी * सेवहिं सकल राम प्रिय जानी

दो० सुलभ सिद्धि सब प्राकृतहु, राम कहत जमुहात ।
राम प्राणप्रिय भरत कहँ, यह न होइ बड़िबात ॥

इहिविधि भरत फिरत वनमाहीं * नेम प्रेम लखि मुनि सकुचाहीं
पुण्य जलाशय भूमि विभागा * खगमृग तरुतृण गिरि वन बागा
चारु विचित्र पवित्र विशेखी * बूझत भरत दिव्य सब देखी
सुनि मनमुदित कहत ऋषिराऊ * हेतु नाम गुण पुण्य प्रभाऊ
कतहुँ निमज्जन कतहुँ प्रणामा * कतहुँ विलोकत वन अभिरामा
कतहुँ बैठि मुनि आयसु पाई * सुमिरत सीय सहित दोउ भाई
देखि सुभाव सनेह सुसेवा * देहिं अशीश मुदित वनदेवा
फिरहिं गये दिन पहर अढ़ाई * प्रभु पद कमल विलोकहिं आई

दो० देखे थल तीरथ सकल, भरत पांच दिन मांझ ।
कहतसुनतहरिहर सुयश, गयउ दिवस भइ सांझ ॥

भोर न्हाइ सब जुरा समाजू * भरत भूमिसुर तिरहुति राजू
भल दिन आजु जानि मनमाहीं * राम कृपाल कहत सकुचाहीं
गुरु नृप भरत सभा अवलोकी * सकुचिरामफिरिअवनिविलोकी
शील सराहि सभा सब शोची * कहुँ न रामसम स्वामि सकोची
भरत सुजान राम रुख देखी * उठि सप्रेम धरि धीर विशेखी
करि दण्डवत कहत करजोरी * राखी नाथ सकल रुचि मोरी
मोहिं लगि सबहिं सहेउ सन्तापू * बहुत भांति दुख पावा आपू
अब गुसाइँ मोहिं देहु रजाई * सेवौं अवध अवधिलगि जाई

दो० जेहि उपाय पुनि पायँ जन, देखै दीनदयालु ।
सो सिख देइय अवधि लगि, कोशलपाल कृपालु ॥

पुरजन परिजन प्रजा गुसांई * सब शुचि सरस सनेह सगाई
राउर बदि भल भव दुखदाहू * प्रभु विनु बादि परमपद लाहू
स्वामि सुजान जानि सबहीकी * रुचि लालसा रहनि जनजीकी
प्रणतपाल पालहिं सबकाहू * देव दुहूँ दिशि ओर निबाहू

अस मोहिं सबविधिभूरिभरोसो * किये विचार न शोच खरोसो
आरति मोरि नाथ कर छोहू * दुहुँ मिलि कीन्ह ढीठ हठि मोहू
यह बड़दोष दूरि करि स्वामी * तजि सकोचसिखइय अनुगामी
भरत विनय सुनि सबहिं प्रशंसा * क्षीर नीर विवरणगति हंसा

दो० दीनबन्धु सुनि बन्धुके, वचन दीन छलहीन ।
देशकाल अवसर सरिस, बोले राम प्रवीन ॥

तात तुम्हारि मोरि परिजनकी * चिन्ता गुरुहिं नृपहिं घर वनकी
माथे पर गुरु मुनि मिथिलेशू * हमहिं तुमहिं सपनेहुँ न कलेशू
मोर तुम्हार परम पुरुषारथ * स्वारथ सुयश धर्म परमारथ
पितु आयसु पालिय दुहुँ भाई * लोक वेद भल भूप भलाई
गुरु पितुमातुस्वामि सिख पाले * चलत सुगम पग परत न खाले
अस विचारि सब शोच बिहाई * पालहु अवध अवधिभरि जाई
देश कोश पुरजन परिवारू * गुरुपद रजहि लाग छरभारू
तुम मुनिमातु सचिव सिखमानी * पालहु पुहुमि प्रजा रजधानी

दो० मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान को एक ।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित विवेक ॥

राज धर्म सरबस इतनोई * जिमि मनमाहिं मनोरथ गोई
वन्धु प्रबोध कीन्ह बहुभांती * बिनु अधार मन तोष न शांती
भरतशील गुरु सचिव समाजू * सकुच सनेह विवश रघुराजू
प्रभु करि कृपा पांवरी दीन्ही * सादर भरत शीश धरि लीन्ही
चरणपीठि करुणानिधानके * जनु युग यामिक प्रजा प्रानके
सम्पुट भरत सनेह रतनके * आखर जुग जनु जीवजतनके
कुल कपाट कर कुशलकरमके * विमल नयन सेवा सुधरमके
भरत मुदित अवलम्ब लहेते * अस सुख जस सिय राम रहेते

दो० मांगेउ बिदा प्रणाम करि, राम लिये उरलाय ।
लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाय ॥

सो कुचाल सबकहँ भइ नीकी * अवधि आश सब जीवन जीकी
नतरु लषण सिय राम वियोगा * हहरि मरत सबलोग कुरोगा
राम कृपा अवरेव सुधारी * विबुध धारभइ गुणद गुहारी
भेंटत भुज भरि भाइ भरतसो * राम प्रेमरस कहि न परतसो
तन मन वचन उमँगि अनुरागा * धीर धुरन्धर धीरज त्यागा
वारिज लोचन मोचत वारी * देखि दशा सुरसभा दुखारी
मुनिगण गुरुजन धीर जनकसे * ज्ञान अनल मन कसे कनकसे

जे विरञ्चि निर्लेप उपाये * पद्म पत्र जिमि जग जलजाये
दो० तेउ विलोकि रघुवर भरत, प्रीति अनूप अपार ।
भये मगन तन मन वचन, सहित विराग विचार ॥
जहां जनकगुरु गतिमति भोरी * प्राकृत प्रीति कहत बड़िखोरी
वर्णत रघुवर भरत वियोगू * सुनि कठोर कवि जानहिं लोगू
सो सकोचवश अकथ सुवानी * समयसनेह सुमिरि सकुचानी
भेंटि भरत रघुवर समुझाये * पुनि रिपुदमन हर्षि हियलाये
सेवक सचिव भरत रुखपाई * निज निजकाज लगे सब जाई
सुनि दारुणदुख दुहूँ समाजा * लगे चलन के साजन साजा
प्रभु पदपद्म वन्दि दोउ भाई * चले शीश धरि राम रजाई
मुनि तापस वनदेव निहोरी * सब सनमानि वहोरि वहोरी
दो० लषणहिं भेंटि प्रणामकरि, शिरधरि सियपदधूरि ।
चले सप्रेम अशीश सुनि, सकल सुमङ्गलमूरि ॥
सानुज राम नृपहिं शिरनाई * कीन्हीं वहुविधि विनय वड़ाई
देव दयावश वड़ दुख पायहु * सहित समाज काननहिं आयहु
पुर पगु धारिय देइ अशीशा * कीन्ह धीर धरि गमन महीशा
मुनि महिदेव साधु सनमाने * विदा किये हरिहरसम जाने
सासु समीप गये दोउ भाई * फिरे वन्दि पद आशिष पाई
कौशिक वामदेव जाबाली * परिजन पुरजन सचिव सुचाली
यथायोग करि विनय प्रणामा * बिदा किये सब सानुज रामा
नारि पुरुष लघु मध्य वड़ेरे * सब सनमानि कृपानिधि फेरे
दो० भरतमातुपद वन्दि दोउ, शुचि सनेह मिलि भेंटि ।
बिदा कीन्ह सजि पालकी, सकुच शोच सब मेटि ॥
परिजनमातु पितहिं मिलिसीता * फिरी प्राणप्रिय प्रेम पुनीता
करि प्रणाम भेंटी सब सासू * प्रीति कहत कविहिय न हुलासू
सुनिसिखअभिमत आशिष पाई * रही सीय दुहुँ प्रीति समाई
रघुपति पटु पालकी मँगाई * करि प्रबोध सब मातु चढ़ाई
बार बार हिलि मिलि दोउ भाई * सम सनेह जननी पहुँचाई
साजि वाजि गज वाहन नाना * भूप भरत दल कीन्ह पयाना
हृदय राम सिय लषण समेता * चले जाहिं सबलोग अचेता
बसह वाजि गज पशु हियहारे * चले जाहिं परवश मनमारे
दो० गुरु गुरुतियपद वन्दि प्रभु, सीता लषण समेत ।
फिरे हर्ष विस्मय सहित, आये पर्ण निकेत ॥

बिदा कीन्ह सनमानि निषादू * चलेउ हृदय बड़ बिरह बिषादू
कोल किरात भिल्ल वनचारी * फेरे फिरे जोहारि जोहारी
प्रभु सिय लषण बैठि बटछाहीं * प्रियपरिजन वियोग बिलखाहीं
भरत सनेह सुभाव सुबानी * प्रिया अनुजसन कहत बखानी
प्रीति प्रतीति वचन मन करणी * श्रीमुख राम प्रेमवश बरणी
तेहि अवसर खगमृगजलमीना * चित्रकूट चर अचर मलीना
बिबुध बिलोकि दशा रघुवरकी * बरषि सुमन कहिगति घर घरकी
प्रभु प्रणाम करि दीन्ह भरोसो * चले मुदितमन डर न खरोसो
दो० सानुज सीय समेत प्रभु, राजत पर्णकुटीर ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य जनु, सोहत धरे शरीर ॥
मुनि महिसुर गुरु भरत भुवालू * राम बिरह सबसाज बिहालू
प्रभु गुणग्राम गुणत मनमाहीं * सब चुप चाप चले मगु जाहीं
यमुना उतरि पार सब भयऊ * सो वासर बिनु भोजन गयऊ
उतरि देवसरि दूसर वासू * राम सखा सब कीन्ह सुपासू
सई उतरि गोमती नहाये * चौथे दिवस अवधपुर आये
जनक रहे पुर वासर चारी * राजकाज सब साज सँभारी
सौंपि सचिव गुरु भरतहिं राजू * तिरहुति चले साजि सब साजू
नगर नारि नर गुरु सिखमानी * बसे सुखेन राम रजधानी
दो० राम दरश हित लोग सब, करत नेम उपवास ।
तजितजि भूषण भोगसुख, जियत अवधिकी आस ॥
सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे * निज निज काज पाइ सिख शोधे
पुनि सिख दीन्ह बोलि लघुभाई * सौंपी सकल मातु सेवकाई
भूसुर बोलि भरत कर जोरे * करि प्रणाम वर विनय निहोरे
ऊँच नीच कारज भल पोचू * आयसु देब न करब सकोचू
परिजन पुरजन प्रजा बुलाये * समाधान करि सुबस बसाये
सानुज गे गुरु गेह बहोरी * करि दण्डवत कहत करजोरी
आयसु होय तौ रहौं सनेमा * बोले मुनि तब पुलकि सप्रेमा
समुझब कहब करब तुम सोई * धर्मसार जग होइहि जोई
दो० मुनिसिख पाइ अशीश बड़ि, गणक बोलि दिनसाधि ।
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारी निरुपाधि ॥
राममातु गुरुपद शिर नाई * प्रभु पद पीठि रजायसु पाई
नन्दिग्राम करि पर्णकुटीरा * कीन्ह निवास धर्मधुर धीरा
जटाजूट शिर मुनिपट धारी * महिखनि कुश साथरी सँवारी

अशन वसन आसन व्रत नेमा * करत कठिन ऋषिधर्म सप्रेमा
भूषण वसन भोग सुख भूरी * मन तन वचन तजे तृण तूरी
अवधराज सुरराज सिहाहीं * दशरथ धन लखि धनद लजाहीं
तेहि पुर बसतभरत बिनुरागा * चञ्चरीक जिमि चम्पक बागा
रमा विलास राम अनुरागी * तजत बमन जिमि नरबड़भागी
दो० राम प्रेम भाजन भरत, बड़ी न यह करतूति ।
चातक हंस सराहियत, टेक विवेक विभूति ॥
देह दिनहिं दिन दूबरि होई * घट न तेज बल मुखछबि सोई
नित नव राम प्रेम प्रण पीना * बढ़त धर्मदल मन न मलीना
जिमि जल निघटतशरदप्रकाशे * बिलसत बेत सुवनज विकाशे
शम दम संयम नेम उपासा * नखत भरतहिय विमल अकासा
ध्रुव विश्वास अवधि राकासी * स्वामिसुरति सुरवीथि विकासी
राम प्रेमविधु अचल अदोखा * सहितसमाज सोह नित चोखा
भरत रहनि समुझनि करतूती * भक्तिविरति गुण विमल विभूती
बरणत सकल सुकविसकुचाहीं * शेष गणेश गिरा गम नाहीं
दो० नित पूजत प्रभु पांवरी, प्रीति न हृदय समाति ।
मांगि मांगि आयसुकरत, राज काज बहुभांति ॥
पुलकगात हिय सिय रघुवीरू * जीह नाम जपु लोचन नीरू
राम लषण सिय कानन बसहीं * भरत भवनबसितपतनु कसहीं
दुहुँ दिशिसमुझि कहत सबलोगू * सबविधि भरत सराहन योगू
सुनि व्रत नेम साधु सकुचाहीं * देखि दशा मुनिराज लजाहीं
परम पुनीत भरत आचरनू * मधुर मञ्जु मृदु मङ्गलकरनू
हरण कठिन कलि कलुष कलेशू * महामोह निशि दलन दिनेशू
पाप पुञ्ज कुञ्जर मृगराजू * शमन सकल संताप समाजू
जन रञ्जन भञ्जन भव भारू * राम सनेह सुधाकर सारू
छं० सियराम प्रेम पियूष पूरण होत जन्म न भरत को ।
मुनिमनअगमयमनियमशमदम विषमव्रत आचरत को ॥
दुख दाह दारिद दम्भ दूषण सुयश मिसु अपहरतको ।
कलिकाल तुलसीसे शठहिं हठि रामसम्मुख करतको ॥
सो० भरत चरितकरि नेम, तुलसी जे सादर सुनहिं ।
सीयराम पद प्रेम, अवसि होइ भवरसविरति ॥

इति श्रीरामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने विमलविज्ञानवैराग्य-
सम्पादनोनाम तुलसीकृतअयोध्याकाण्डद्वितीयःसोपानः ॥२॥शुभम्॥